बाल कहानियाँ

मनजीत शर्मा 'मीरा'

अनुक्रमणिका

1. तितलियों का गाँव
2. प्रेम की आवाज़
3. जादुई खजाना
4. सयाना कौआ और घमंडी हंस
5. दयालु काकी और लालची व्यापारी
6. बूढ़ी अम्मा और रंगीन पतंग
7. गोलू और गिनतियों का पहाड़
8. जादुई पत्थर का आकाश
9. परी और उसका जादुई बस्ता
10. बरगद की ठंडी छाँव
11. सच्चा धन
12. सौभाग्य का स्वर्ण कमल
13. शाँतिवन के रक्षक
14. राजकुमारी विदुषी का स्वयंवर
15. मेरी पहली कमाई
16. नम्रता की ताकत
17. बूढ़ी माँ की आशा
18. सूखे कुएँ का पानी और गंगा
19. जादुई किताब का सफ़र
20. छोटी सी मधुमक्खी की बड़ी खोज
21. सुखवन का सुख
22. होली के रंगों का रहस्य
23. बुद्धिमान कछुआ और शरारती बंदर
24. चाँदनी और चाँद-बूँद पंख
25. कला का रंग

तितलियों का गाँव

आसमान में सूरज एक बड़ा-सा संतरा बनकर चमक रहा था। उसकी सुनहरी किरणें खिड़की से सीधे चिंटू के कमरे में ऐसे आ रही थीं मानो उसे जादू की दुनिया में झाँकने का निमंत्रण दे रही हों। चिंटू, जिसकी उम्र अभी मात्र दस बरस थी, अपने नन्हें से मन में तूफ़ानों का घरौंदा पाले हुए था। वह एक शरारती बच्चा था जो अपनी किताबों में छपी कहानियों से ज़्यादा नई-नई जगहों की खोज और अज्ञात के रहस्य सुलझाने में लगा रहता था। उसकी हर सुबह किसी नए अभियान की योजना से शुरू होती थी।

चिंटू की जुड़वाँ बहन गुल्लू स्वभाव में बहुत शाँत और समझदार थी। वह अक्सर किताबों में खोई रहती परंतु उसका कोमल हृदय हमेशा अपने भाई के लिए प्यार और चिंता से भरा रहता था। चिंटू के खतरनाक विचारों पर वह भले ही पहले माथा सिकोड़ती थी लेकिन जब बात एडवेंचर की आती तो गुल्लू की आँखों में भी एक चंचल चमक आ जाती। वह जानती थी कि चिंटू की मस्ती में ही जीवन की असली उमंग छिपी है। दोनों का साथ ऐसा था जैसे तेज़ हवा और सागर का शाँत किनारा लेकिन दोनों एक दूसरे के पूरक थे।

चिंटू को अब सब्र नहीं था। एक दिन उसने उत्साह से गुल्लू को टटोला, "गुल्लू, क्या तुमने कभी तितलियों का गाँव देखा है? जहाँ हवा में शक्कर घुली रहती है और फूल खुद ही गाना गाते हैं?"

गुल्लू ने अपनी गुड़िया, जिसका नाम उसने 'परी' रखा था, को प्यार से गोद में रखा और अपने भाई की दिलचस्प बातों में खो गई। सपने देखने वाली उसकी आँखों में एक जादुई जिज्ञासा थी। इसी जिज्ञासा से भरकर उसने कहा "नहीं, चिंटू। मैंने तो सिर्फ दादी की कहानियों में ही सुना है कि वह एक जादुई

जगह है जहाँ धरती पर इंद्रधनुष उतर आया हो और हर तरफ़ सिर्फ और सिर्फ रंग-बिरंगी तितलियाँ रहती हों।"

"बस!" चिंटू की आँखों में उस पल एक अनोखी चमक आ गई। उसने तुरंत गुल्लू का हाथ पकड़कर कहा, "चलो, फिर! आज हम कहानियों को सच करेंगे। हम उस गाँव को ढूँढते हैं। मैंने सुना है हमारे घर के ठीक पीछे से उस गाँव का रास्ता जाता है..."

तभी माँ की आवाज़ गूँजी, "उठो चिंटू और गुल्लू ! कब तक सोते रहोगे...? स्कूल नहीं जाना क्या...? देर हो रही है!"

चिंटू ने चादर में कुनमुनाते हुए, आँखें बंद किए हुए ही कहा, "नहीं मम्मी! आज तो स्कूल की छुट्टी है। आज हम स्कूल की तरफ़ से तितलियों का गाँव देखने जाएँगे!"



माँ हँस पड़ीं। "तितलियों का गाँव? यह कौन सा नया स्कूल ट्रिप है, चिंटू?"

आँखें मलते-मलते चिंटू तुरंत उठ बैठा। उसकी आँखों में अभी भी नींद और रोमांच का मिश्रण भरा हुआ था। उसने उत्साहित होकर कहा, "हाँ! गुल्लू और मैंने कल रात ही योजना बनाई थी। स्कूल की तरफ़ से जाने का मतलब है कि हम बहादुरी से अकेले जाएँगे, बिल्कुल बड़ों की तरह! और माँ, यह एक सीक्रेट एडवेंचर है!" चिंटू की बातें सुनकर माँ के चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई।

उसकी बहन, गुल्लू, जो पहले से ही जाग चुकी थी लेकिन चुपचाप बिस्तर में लेटी हुई थी शाँत और समझदार दिखाई दे रही थी। उसने तुरंत बात सँभालते हुए कहा, "मम्मी, यह होमवर्क का हिस्सा है...खोज यात्रा। हमें तितलियों के गाँव के बारे में पता लगाकर आना है।"

माँ, दोनों की शरारत भरी आँखों को समझ तो गईं पर उन्होंने ज्यादा सवाल नहीं किए। नहा-धोकर दोनों ने फटाफट नाश्ता किया और अपने छोटे से बैग में बिस्कुट, पानी की बोतल और एक टॉर्च रखी। आज वे किसी साधारण पिकनिक पर नहीं जा रहे थे। वे एक जादुई खोज पर निकल रहे थे जिसका लक्ष्य था "तितलियों का गाँव"!

वे घर से निकलकर आगे बढ़े। सबसे पहले उन्हें एक छोटी, पथरीली पहाड़ी मिली। पत्थरों पर काई जमी हुई थी और रास्ता फिसलन भरा था। उन्हें डर लग रहा था कि वे गिर न जाएँ और उनका अभियान कहीं यहीं न थम जाए। चिंटू आगे-आगे बढ़ा, हाथों से मिट्टी पकड़कर खुद को खींचता। गुल्लू भी डर को मुट्ठी में बंद कर के चिंटू के पीछे-पीछे सँभलकर चढ़ती गई। साँसें फूल गईं परंतु दोनों ने हार नहीं मानी।

पहाड़ी पार करते ही, सामने घना जंगल आ गया। जंगल इतना घना था कि सूरज की एक भी किरण नीचे नहीं आ पाती थी। ऊँचे-ऊँचे पेड़ ऐसे खड़े थे जैसे सदियों पुराने रखवाले। सब कुछ अँधेरा-अँधेरा और शाँत लग रहा था। अजीब-सी खामोशी थी, जिसमें उनकी धड़कनों की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। चिंटू और गुल्लू डर से काँप उठे। चिंटू ने गुल्लू का हाथ और भी कसकर पकड़ा। उन्होंने टॉर्च जलाई, जिसकी छोटी-सी रोशनी अँधेरे के विशाल सागर में किसी छोटी नाव जैसी लग रही थी। डर के बावजूद, एक-दूसरे की हिम्मत बनकर, वे आगे बढ़ते रहे।



उबड़-खाबड़ रास्तों पर चलते-चलते वे थक गए थे। तभी उन्हें एक बूढ़ा चरवाहा मिला जो वहाँ अपनी बकरियों चरा रहा था। चरवाहे का नाम क्या था यह तो पता नहीं लेकिन उन्हें वह एक बुजुर्ग दादाजी जैसा लगा। बूढ़े चरवाहे ने उनसे पूछा, "बच्चो, तुम इतनी दूर क्यों जा रहे हो? क्या तुम रास्ता भटक गए हो?"

चिंटू ने बताया, "नहीं, हम तितलियों का गाँव ढूँढ रहे हैं।"

बूढ़े चरवाहे ने धीरे-धीरे सिर हिलाया और मुस्कुराकर कहा, "ओह, तो तुम उस जादुई जगह पर जा रहे हो। लगता है तुम्हारी टीचर ने ही तुम्हें भेजा है। पहले भी बहुत से बच्चे उस गाँव की खोज में यहाँ आ चुके हैं। उस गाँव तक पहुँचने का रास्ता मैं जानता हूँ। लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए तुम्हें तीन मुश्किल पहेलियाँ सुलझानी होंगी।"

"ठीक है दादाजी!" चिंटू और गुल्लू तैयार हो गए।

बूढ़ा चरवाहा अब दादाजी बन गए थे। उन्होंने अपनी टोपी सीधी की और आकाश की ओर देखते हुए बोले, "यह रही पहली पहेली...!"

"मैं दिन में छिप जाता हूँ
रात में चमचमाता हूँ
सूरज साथ दोस्ती निभाता हूँ"

गुल्लू ने तुरंत जवाब दिया, "आप चाँद की बात कर रहे हैं!"

दादाजी खुश हुए और बोले, "शाबाश! तुम सही हो। अब अगली पहेली सुनो।"

"मैं रंग-बिरंगी हूँ
फूलों की साथी हूँ
उड़कर राह दिखाती हूँ।"

गुल्लू ने थोड़ा सोचा और फिर खुशी से बोली, "यह तो तितली है!"

दादाजी ने उसे शाबाशी दी और कहा, "बहुत अच्छे! अब आखिरी और तीसरी पहेली..."

"मैं हूँ काला
बटन दबाओ
करूँ उजाला।"

चिंटू और गुल्लू दोनों ने मिलकर सोचा। यह पहेली थोड़ी मुश्किल थी। तभी चिंटू और गुल्लू का ध्यान अपने हाथ पर गया। उन्होंने एक साथ जोर से कहा, "टॉर्च...!"

दादाजी बहुत खुश हुए। उन्होंने बहुत प्यार से कहा, "तुमने सभी पहेलियाँ सुलझा ली हैं, बच्चो! अब बस इस रास्ते पर सीधे चलते जाओ, तुम उस जादुई गाँव में पहुँच जाओगे।"

चिंटू और गुल्लू ने दादाजी का धन्यवाद किया और उनकी बताई हुई दिशा में चल पड़े। चिंटू और गुल्लू को कुछ ही देर में दूर से एक चमकदार रोशनी दिखाई दी। अद्‌भुत नज़ारा था मानो धरती पर हज़ारों जुगनू एक साथ नाच रहे हों। जैसे-जैसे वे उसके पास पहुँचे उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। यह सचमुच तितलियों का गाँव था जो उनकी कल्पना से भी हज़ार गुना अधिक सुंदर था।

वहाँ हर तरफ़ हवा में तैरते हुए रंग थे! कोई तितली नीले मखमली रंग जैसी थी, कोई पीले सोने जैसी, कोई गुलाबी शर्बत जैसी तो कोई ऐसी थी जिसके पंख इंद्रधनुष के सातों रंगों से बने थे। वे हवा में लयबद्ध तरीके से नाच रही थीं, फूलों पर बैठकर धीरे-धीरे मीठा रस चूस रही थीं और उनके पंखों से निकलती हल्की-हल्की आवाज़ हवा के साथ मिलकर एक मीठा-सा गीत गाती लग रही थी। हवा में चमेली और गुलाब की मीठी खुशबू फैली थी जो साँस लेने पर अंतर्मन में जादू भर रही थी।

गाँव के एक खेत के बिल्कुल बीचों-बीच एक और अद्‌भुत दृश्य था—एक बहुत बड़ा फूल, जिसकी पंखुड़ियाँ मोती जैसी सफेद थीं और केंद्र से सुनहरी आभा निकल रही थी। गाँव के बहुत से बच्चे वहाँ खेल रहे थे। एक बच्चे ने बताया कि सब उसे प्यार से "महारानी फूल" कहते हैं। इसी विशाल फूल की सबसे ऊँची पँखुड़ी पर गाँव की सबसे सुंदर और सबसे बड़ी तितली बैठी थी। ऐसा लग रहा

था जैसे उसके पंखों पर हीरे जड़े हुए हों और जो पूरे गाँव पर प्यार से नज़र रखे हुए हो। चिंटू और गोलू हैरानी से यह सब देख रहे थे। अपने हमउम्र बच्चों से बातें करना दोनों को बहुत अच्छा लग रहा था इसलिए जल्दी ही सब दोस्त बन गए।

चिंटू और गुल्लू को देखकर कई छोटी-बड़ी तितलियाँ उनके चारों ओर ऐसे मंडराने लगीं जैसे वे उन दोनों का स्वागत कर रही हों। तभी एक बूढ़ी दादी वहाँ से गुज़रीं। उन्होंने बच्चों को ज़मीन पर बैठने का इशारा किया और उन्हें गुलाब के



मीठे फूलों का रस पीने को दिया। चिंटू और गुल्लू ने चरण स्पर्श कर के दादी का धन्यवाद किया और उनसे गाँव और तितलियों के बारे में ढेर सारी जानकारी हासिल की। उन्होंने अपना पूरा दिन तितलियों के साथ दौड़कर, हँसकर और खेल-कूद कर बिताया।

चिंटू और गुल्लू ने देखा कि एक छोटा सा बच्चा भी अपने नन्हें-नन्हें पैरों से तितलियों के पीछे-पीछे मस्ती में भाग रहा है, उन्हें पकड़ने के लिए। लेकिन तितलियाँ उससे आगे-आगे भाग रही थीं। बड़ा ही सुंदर दृश्य था। गुल्लू ने मोहित होकर बड़े प्यार से पूछा, "बच्चे, तुम्हारा नाम क्या है...?" बच्चा मुस्कुराया और अपनी बोली में गुनगुनाता हुआ फिर तितलियों के पीछे दौड़ गया। बच्चा इतना छोटा था कि उसे अभी बोलना भी नहीं आता था। बूढ़ी दादी ने ही बताया कि

उसका नाम अयाँश है और वह उसका पोता है। उसे भी तितलियों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। चिंटू और गुल्लू ने रंग-बिरंगी तितलियों के ढेर सारे खूबसूरत चित्र बनाए। गुल्लू ने विशेष रूप से अपनी नोटबुक में एक ऐसा चित्र भी बनाया जिसमें एक छोटा सा बच्चा तितलियों के पीछे दौड़ रहा था।

चिंटू और गुल्लू आज बहुत खुश थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसा नज़ारा पहली बार देखा था। उनका मन कर रहा था कि बस तितलियों को देखते रहें। शाम को जब सूरज धीरे-धीरे पहाड़ के पीछे छिपने लगा और आसमानी रंग नारंगी होने लगा तभी चिंटू और गुल्लू को याद आया कि उन्हें घर भी वापस जाना है। उन्होंने सभी तितलियों को मन ही मन धन्यवाद कहा और एक-दूसरे का हाथ पकड़कर, अपने अविस्मरणीय अनुभव को दिल में संजोए दोनों घर की ओर चल पड़े।

घर पहुँचकर चिंटू और गुल्लू ने देखा कि माँ चिंता में दरवाजे पर खड़ी उनकी ही राह देख रही हैं। दोनों सीधे अपनी माँ के पास गए। माँ ने चिंतित



होकर पूछा, "कहाँ थे तुम दोनों इतनी देर? तितलियों का गाँव ढूँढने के चक्कर में घर को ही भूल गए! मेरा तो डर के मारे बुरा हाल था!"

चिंटू ने उत्साहित होकर कहा, "मम्मी! हमने सचमुच तितलियों का गाँव ढूँढ लिया! वह होमवर्क सही में सच हो गया!" चिंटू और गुल्लू ने अपनी छोटी-छोटी नोटबुक निकालीं जिसमें उन्होंने रास्ते में दादाजी की पहेलियाँ, जंगल के पेड़ों के नाम और गाँव की रंग-बिरंगी तितलियों के ढेर सारे खूबसूरत चित्र बना रखे थे।



" अरे रे रे रे... पहले घर के अंदर तो चलो फिर देखते हैं...." माँ उनकी बहादुरी और समझदारी देखकर गर्व से भर उठीं। उन्होंने बच्चों को गले लगाया। वह जानती थीं कि उन्होंने सिर्फ एक जगह की खोज नहीं की बल्कि हिम्मत, दोस्ती और मुश्किलों को सुलझाने का एक अमूल्य सबक भी सीखा है। फिर तो पूरा ही घर चिंटू और गुल्लू की तितलियों की कहानियों से रंगीन होता रहा।

अगले दिन दोनों स्कूल गए। स्कूल में सभी बच्चे अपनी-अपनी यात्रा के बारे में टीचर को बता रहे थे। कोई रंग-बिरंगे फूलों के बाग में गया था, कोई चहचहाते पक्षियों से मिलकर आया था तो किसी ने हरे-भरे खेतों की यात्रा की थी। सबने अपनी अपनी यात्रा के बारे में डायरी में लिखा था लेकिन किसी ने

भी उन यात्राओं का कोई चित्र नहीं बनाया था। फिर भी सब बच्चों की होमवर्क यात्राएँ अपने-अपने अंदाज में बहुत अनोखी थीं।

उन दोनों ने भी अपनी होमवर्क खोज यात्रा "तितलियों का गाँव" के बारे में बताया। टीचर ने उनकी मेहनत, पहेलियों को सुलझाने की बुद्धिमत्ता, गाँव के लोगों से मेल-मिलाप और यात्रा का सुंदर वर्णन सुनकर उनकी बहुत तारीफ़ की। नोटबुक में उन्होंने जो रंग-बिरंगी तितलियों के खूबसूरत चित्र बनाए थे वो भी ऐसे लगते थे कि जैसे तितलियाँ अभी नोटबुक से बाहर आकर उड़ने लगेंगी। तितलियों की कहानियाँ सुनकर कक्षा के सभी बच्चे रोमांचित हो उठे। उन्होंने टीचर से कहा कि हम भी तितलियों का गाँव देखने जाएंगे।

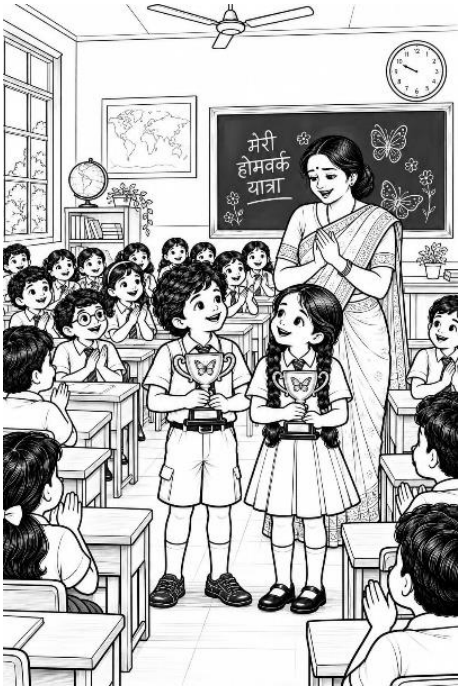

चिंटू और गुल्लू ने न केवल कक्षा में पुरस्कार जीता बल्कि यह भी साबित कर दिया कि सच्ची शिक्षा केवल किताबों में नहीं बल्कि साहस, मेल-मिलाप और अनुभवों में छिपी होती है।

□

प्रेम की आवाज़

बहुत समय पहले की बात है। उस जंगल को लोग उसकी हरी-भरी हरियाली और घनी छाया के लिए जानते थे। ऊँचे-ऊँचे पेड़ सूर्य की रोशनी को ज़मीन तक मुश्किल से पहुँचने देते थे। जंगल में हमेशा एक अजीब सा सन्नाटा पसरा रहता था लेकिन यह सन्नाटा डरावना नहीं बल्कि बड़ा शाँत और सुहावना लगता था। यहाँ जब हवा चलती तो पत्तों से "सरर-सरर" की ऐसी मीठी आवाज़ आती मानो जंगल कोई लोरी गा रहा हो। कभी-कभी किसी दूर बैठे पक्षी की "कूहु-कूहु" या सूखी लकड़ियों पर किसी छोटे जानवर के दौड़ने की "चिर-चिर" आवाज़ इस सन्नाटे को और खूबसूरत बना देती थी।

इस ठंडी छाँव और शाँति के कारण जंगल में रहने वाले सभी पशु-पक्षी बड़े प्यार से रहते थे। बाहर चाहे कितनी भी गर्मी क्यों न हो परंतु इस जंगल के भीतर आते ही ठंडी-ठंडी हवाएँ तन और मन को खुश कर देती थीं। ऐसा लगता था मानो यह जंगल कोई आम जंगल नहीं बल्कि परियों की कहानियों जैसा कोई जादुई संसार हो, जहाँ वक्त ठहर सा गया था।

इसी हरे-भरे और सुंदर जंगल पर शेर सिंह का राज था। शेर सिंह अपनी गगनभेदी दहाड़ और असाधारण शारीरिक ताकत के लिए प्रसिद्ध था। जंगल के जानवर उसे देखते ही डर के मारे काँपने लगते और दुबक जाते थे। शेर सिंह को अपनी ताकत पर इतना घमंड था कि वह हर दिन अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता रहता। कभी पेड़ों को ज़ोर से हिलाकर तो कभी निर्दोष जानवरों को डराकर। उसका मानना था कि इस जंगल में वही सबसे महान और शक्तिशाली है और उसकी ताकत ही इस जंगल की सच्ची पहचान है।

जंगल के सबसे ऊँचे, सबसे घने पेड़ की एक छोटी सी डाल पर पाखी नाम का एक पक्षी भी रहता था। पाखी न तो बड़ा था न ही उसकी आवाज़ किसी को डराने वाली थी बल्कि वह अपने शाँत, मधुर स्वभाव और कर्णप्रिय गीतों के लिए जाना जाता था, इसीलिए वह खास था। पाखी का जीवन दूसरों की मदद करने में बीतता था। जब गिलहरी का घर टूट जाता तो पाखी तिनके लाने में मदद करता। जब कोई हिरण रास्ता भटक जाता तो वह अपनी मीठी आवाज़ से उसे दिशा बताता। जब कोई दुखी होता तो वह अपनी मधुर आवाज़ में प्यारे-प्यारे गीत सुनाकर उसका दुख हर लेता। वह मानता था कि प्रेम ही जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है जो किसी भी ताकत से कहीं ज़्यादा कीमती होती है।



अपने इसी दयालु स्वभाव की वजह से पाखी अपने दोस्तों के लिए हर शाम अपनी सुरीली आवाज़ में गीत सुनाया करता था। पक्षियों को यह सब बहुत अच्छा लगता था और अक्सर कुछ जानवर भी पाखी का गाना सुनने आ

जाया करते थे। इन सबमें बहुत गहरी दोस्ती थी और इस गहरी दोस्ती का कारण थी पाखी की मधुर आवाज़ और उसका परोपकारी स्वभाव।

एक दोपहर, जब शेर सिंह जंगल में अपनी दैनिक सैर पर निकला तो अचानक उसे अपनी दहाड़ के बीच एक अनोखी, मीठी धुन सुनाई दी। वह धुन इतनी शाँत और मनमोहक थी कि शेर सिंह एक पल के लिए रुक गया। उसने ऊपर देखा। एक ऊँची टहनी पर पाखी बैठा था जो अपनी धुन में मग्न होकर गा रहा था।

शेर सिंह ने गरजने के बजाय, थोड़ी रुकी हुई आवाज़ में पाखी को अपने पास बुलाया और रौब से पूछा, "ऐ छोटे पक्षी! तुम सचमुच बहुत खूबसूरत गाते हो। तुम्हारी आवाज़ में अनोखा जादू है।" और दूसरे ही पल शेर सिंह ने अपनी प्रशंसा को तुरंत घमंड में बदलते हुए कहा, "...लेकिन इस मधुरता का क्या फायदा? तुम्हारी आवाज़ में कोई ताकत नहीं है! कोई रौब नहीं है! क्या तुम कभी मेरी तरह शक्तिशाली बनना नहीं चाहते? दुनिया को अपनी मर्ज़ी के हिसाब से झुकाना नहीं चाहते?"

पाखी ने ज़मीन पर खड़े विशाल शेर की ओर देखा। वह बिल्कुल भी डरा नहीं बल्कि उसके चेहरे पर एक शाँत मुस्कान थी। पाखी ने कोमलता से उत्तर दिया, "शक्ति केवल दहाड़ने और दूसरों को डराने से नहीं आती, शेर महाराज। सच्ची शक्ति तो बीज में छिपे विशाल पेड़ की तरह होती है जो कभी बाहर से नहीं दिखती। सच्ची शक्ति तो दया, सहयोग और मदद करने में है। जो जीव सबसे छोटे की सहायता करता है वही वास्तव में सबसे शक्तिशाली होता है।"

पाखी की लंबी-चौड़ी बात सुनकर शेर सिंह पहले तो हैरान हुआ, फिर उसने ज़ोर-ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया। उसकी हँसी पूरे जंगल में गूँज उठी। उसने अपनी मूँछें मरोड़ीं और घमंड से अपनी छाती फुलाकर बोला, "तुम क्या

जानोगे ताकत के मायने, छोटे पक्षी ! यह जंगल मेरे पंजों की ताकत से चलता है, तुम्हारे कोमल गीतों से नहीं। अपनी इस कमज़ोरी को 'सच्ची शक्ति' का नाम देना बंद करो! यह जो तुम इतना बोल रहे हो ना वह भी इसलिए कि तुम उड़ सकते हो।" शेर सिंह ने पाखी की बात को हवा में उड़ा दिया और फिर से अपनी राह पर चल पड़ा लेकिन पाखी की शाँत आँखें और उसका जवाब शेर के दिमाग में कहीं अटक गया था।

कुछ ही दिन बीते थे कि जंगल में भयंकर गर्मी की वजह से भीषण आपदा आ गई। जंगल के एक कोने से भयानक आग की लपटें उठने लगीं। हवा तेज थी, इसलिए सूखे पत्तों से होती हुई आग जंगल के हरे-भरे पेड़ों को तेजी से अपनी चपेट में लेने लगी। धुएँ का गुबार पूरे आसमान पर छा गया। जंगल के सभी जानवर अपनी जान बचाने के लिए पागलों की तरह इधर-उधर भागने लगे। चीख-पुकार और घबराहट से पूरा जंगल थर्रा उठा।

शेर सिंह भी अपनी सारी ताकत भूलकर बस भाग रहा था लेकिन भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। भागते-भागते वह एक ऐसे विशाल पेड़ के पास फँस गया जिसके चारों ओर आग की लपटें बढ़ी आ रही थीं। अपनी जान खतरे में देख, शेर सिंह ने ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ कर अपने साथी शेरों को मदद के लिए पुकारा। उसकी दहाड़ की आवाज़ दूर-दूर तक गई लेकिन कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया। जंगल के दूसरे शेर जो हमेशा उसकी दहाड़ से डरते थे, उस संकट में उसकी दहाड़ को अनसुना कर गए। उसकी ताकत की दहाड़ आग को डरा नहीं सकी, हवा को रोक नहीं सकी और ना ही उसे वहाँ से बाहर निकाल सकी। इस समय वह पूरी तरह से असहाय और घबराया हुआ था।

इस अराजकता के बीच, एक छोटा सा साया आग की ओर तेजी से उड़ता हुआ आया। वह कोई और नहीं बल्कि पाखी था! पाखी ने दूर से ही

खतरे में पड़े शेर सिंह को देख लिया था। पाखी जानता था कि छोटी चोंच से पानी लाकर आग बुझाना असंभव है इसलिए उसने तुरंत अपनी सच्ची शक्ति यानि बुद्धिमानी और संगठन का उपयोग करने का निर्णय लिया।

पाखी तुरंत ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाकर जंगल के सभी पक्षियों और जानवरों को इकट्ठा करने लगा। अपनी मधुर आवाज़ को एक तीखे आदेश में बदलकर, पाखी ने उन्हें तुरंत आग और शेर के बीच की सूखी ज़मीन से पत्ते और टहनियाँ हटाने और उनकी जगह गीली मिट्टी व हरी पत्तियाँ डालने को कहा।

जंगल के जिस हिस्से में अभी आग नहीं फैली थी वहाँ से सभी जीव



तोते, मैना, कबूतर, भालू, बंदर, हाथी और हिरण एकजुट होकर आ गए। पक्षी अपनी चोंच में गीली मिट्टी और गीली हरी पत्तियाँ भरकर लाने लगे, जबकि भालू और बंदर अपने बड़े पंजों और हाथों से रेत और मिट्टी उठाकर आग की ओर फेंकने लगे। हाथियों ने अपने मोटे पंजों से ज़मीन की मिट्टी खोदनी शुरू की और सूँड में भरकर आग पर डाली।

आग की लपटों से घिरे शेर सिंह ने अपनी आँखों से यह अविस्मरणीय दृश्य देखा। उसने देखा कि जिन छोटे-छोटे जीवों को वह

हमेशा कमज़ोर और ताकतहीन समझकर उन पर दहाड़ता था वे आज अपनी जान की परवाह किए बिना उसकी जान बचाने के लिए एक महान सेना की तरह काम कर रहे हैं। पाखी की बुद्धिमानी और प्रेम ने सैकड़ों जीवों को एक सूत्र में बाँध दिया था जबकि उसकी अपनी दहाड़ ने किसी को भी उसके पास नहीं आने दिया।

शेर सिंह के दिल में बैठा सारा घमंड और अहंकार पल भर में पिघलकर बह गया। उसे अपनी पिछली बातों पर, अपने रौब और अपनी हर दहाड़ पर गहरा पछतावा हुआ। वह अपनी जान बचाने के लिए उन छोटे जीवों का ऋणी था। उसकी आँखों में कृतज्ञता और पश्चाताप के आँसू आ गए।

जैसे ही आग की लपटें धीमी हुईं और खतरा टला, शेर सिंह ने काँपते हुए कदम आगे बढ़ाए और सीधे पाखी के सामने झुक गया। उसका सिर पहली बार किसी के सामने विनम्रता से झुका था। भारी आवाज़ में उसने कहा, "पाखी, आज तुमने मुझे असली सबक सिखाया है। मैंने सोचा था कि मेरी दहाड़ ही दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है लेकिन मेरे सबसे बड़े संकट में मेरी ताकत व्यर्थ हुई और मेरी दहाड़ किसी अपने को नहीं बुला सकी। मेरी दहाड़ से कोई नहीं डरा। तुमने सही कहा था कि सच्ची शक्ति ताकत में नहीं बल्कि प्रेम, दया, बुद्धिमानी और मदद करने की भावना में है।" कहते हुए शेर सिंह ने सच्चे दिल से माफ़ी माँगी।

"शेर महाराज, यहाँ कोई बड़ा है तो कोई छोटा, कोई कमज़ोर तो कोई ताकतवर लेकिन अगर हम सब एक हो जाएँ तो हर मुसीबत का मुकाबला मिलकर कर सकते हैं।" पाखी ने बेहद नम्रता से कहा।

उस दिन के बाद से शेर सिंह पूरी तरह बदल गया। वह अब केवल 'शेर सिंह' नहीं बल्कि जंगल का सबसे दयालु और न्यायप्रिय राजा बन गया था।

□

जादुई खजाना

आज मैं आपको एक अनोखी कहानी सुनाने जा रही हूँ... एक ऐसे युग की कहानी जब पृथ्वी अपनी सबसे शुद्ध अवस्था में थी। तो सुनिए,

हरियाली की गोद में एक छोटा-सा गाँव मीठापुर छिपा हुआ था। यह गाँव साधारण गाँव नहीं था बल्कि प्रकृति का संगीत था। गाँव का नाम, 'मीठापुर', केवल एक संज्ञा नहीं थी बल्कि एक विशेषण था, एक अनुभव था। यहाँ की हवा में हमेशा एक अदृश्य मिठास का वरण रहता था जो आस-पास उगने वाली जंगली चमेली और रात की रानी के फूलों की सुगंध से आता था। साँझ ढलते ही यह खुशबू जंगल के गीले पत्तों और ठंडी मिट्टी के साथ मिलकर एक ऐसा इत्र बनाती थी कि आत्मा तक तृप्त हो जाती थी।

मीठापुर चारों ओर से कुछ ऐसी कोमल और मखमली हरी वादियों से घिरा हुआ था कि सूर्य की किरणें भी पत्तों की जाली से छनकर ज़मीन पर सोने के टुकड़े सी बिखराती लगती थीं। गाँव की मिट्टी इतनी उपजाऊ थी कि वहाँ बोया गया हर बीज प्रेम और समृद्धि का फल देता था। यहाँ के लोग भी उसी मिट्टी की तरह सरल, संतोषी और शहद से मीठे थे। उनके चेहरे पर छल-कपट की कोई छाया नहीं थी। वे अपनी छोटी-सी दुनिया में सच्चाई और स्नेह के धागों से बुने हुए रिश्ते लगते थे। मीठापुर बाहरी दुनिया के शोर और लालच से दूर, ईमानदारी और सादगी का एक जादुई कोना था।

इसी मीठापुर गाँव के एक शाँत कोने में सरला देवी का छोटा-सा घर था जिसकी पहचान उसकी गरीबी से नहीं बल्कि चारों ओर फैली खुशबू से होती थी। सरला देवी अपने नाम के अनुरूप ही सरल थी। उम्र की ढलान पर होते हुए भी किसी तपस्या में लीन साध्वी सी दिखती थी। उसके हाथ कठोर थे

जो जीवन भर की मेहनत की कहानी अवश्य कहते थे परंतु उन हाथों से किए गए काम में हमेशा एक कोमलता झलकती थी।

सरला देवी अकेली थी, गरीब थी, यह सत्य था पर गाँव वाले जानते थे कि उसका दिल सोने जैसा है। उसकी आँखों में एक शाँत और स्थिर चमक रहती थी जो हर आने-जाने वाले को एक अजीब-सी साँत्वना देती थी। वह किसी से कुछ माँगती नहीं थी बल्कि अपने छोटे से बगीचे में लगे फल और फूल ज़रूर लोगों में बाँटती रहती थी। दरअसल सरला देवी फल और फूल नहीं बाँटती थी, वह तो अपना स्नेह बाँटती थी।

यह बगीचा सरला के लिए केवल आजीविका का साधन नहीं था, यह उसकी आत्मा का विस्तार था। सुबह की पहली किरण जब उसके फूलों पर पड़ती तो सरला उनसे ऐसे बात करती, जैसे वे उसकी अपनी संतान हों। उसने हर पौधे को ममता से सींचा था। उसके यहाँ ऐसे रंग-बिरंगे फूल खिलते थे जिनकी पंखुड़ियों पर सुबह की ओस मोतियों सी जम जाती थी। इन फूलों को पास के बाज़ार में बेचकर जो थोड़े पैसे मिलते थे उससे वह बड़ी संतुष्टि के साथ अपना जीवन चलाती थी। वह ईमानदारी से उतना ही कमाना चाहती थी जिससे किसी का हक न मारा जाए और उसका अपना स्वाभिमान भी बना रहे। सरला का जीवन सादगी की एक ऐसी मधुर कविता था जो अपनी मेहनत और नेक नीयती से लिखी जाती है।

मीठापुर गाँव में, जहाँ हर कोई श्रम और सादगी को महत्व देता था, वहीं रंजन नामक युवा एक अजीब विरोधाभास था। वह जवान था, उसका शरीर हट्टा-कट्टा था और उसमें पहाड़ तोड़ने की ताकत थी लेकिन उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी उसका आलस। रंजन के लिए मेहनत करना किसी बीमारी से कम नहीं था। वह सुबह देर से उठता, दिनभर पेड़ की छाँव में लेटा रहता और सिर्फ सपने देखता रहता था...बड़े, भव्य और बिना किसी प्रयास के पूरे

होने वाले सपने। रंजन का दिमाग हमेशा इस बात की जुगाड़ में लगा रहता था कि कैसे कम से कम काम करके अधिकतम लाभ कमाया जाए। वह गाँव के मेहनती लोगों को देखकर मन ही मन उनका मज़ाक भी उड़ाता था। उसके सबसे बड़े उपहास का पात्र थी सरला देवी। रंजन अक्सर उसे तपती धूप में, अपनी कमर झुकाए, खरपतवार हटाते या कुएँ से पानी लाते देखता जो रहता था।

एक बार रंजन फिर किसी पेड़ की छाँव में पसरा हुआ था जबकि सरला दूर अपने बगीचे में काम कर रही थी। उसे देखकर रंजन के मन में अक्सर एक ही कड़वा विचार कौंधता था..."यह बूढ़ी औरत... इसे आराम क्यों नहीं आता? यह इतनी उम्र में भी इतना कष्ट क्यों उठाती है? इन छोटे-मोटे फूलों से क्या मिलता होगा? ज़िंदगी का मज़ा तो आराम में है, ऐशो-आराम में! मुझे तो बस कोई जादुई, आसान रास्ता मिल जाए ताकि मैं बिना हाथ हिलाए ढेर सारा धन पा सकूँ और आराम से जीवन जी सकूँ।"



एक दिन गाँव में एक बौना साधु आया। साधु के हाथ में कुछ चमत्कारिक रूप से चमकदार बीज थे। गाँव के चौक पर खड़े होकर उसने ऊँची आवाज़ में घोषणा की, "हे गाँव वालो! जो कोई भी इन बीजों को लेकर जाएगा और एक साल के भीतर इन्हें ऐसे पेड़ में बदल देगा जो सबसे सुंदर और स्वादिष्ट फल दें तो मैं उन्हें एक "जादुई खजाना" दूँगा।"

घोषणा सुनकर पूरे गाँव में उत्साह की लहर दौड़ गई। हर कोई चमत्कारिक जादुई बीज लेने के लिए दौड़ पड़ा।

रंजन के कानों में जब 'जादुई खजाना' शब्द पड़ा तो उसकी आँखें चमक उठीं। उसने तुरंत सोचा, "यह तो बहुत आसान है! बस बीज बोना है और एक साल बाद खजाना मेरा! मुझे जरा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।" उसने साधु से तुरंत एक बीज लिया और उसे अपने खेत के एक कोने में, बिना मन के बो दिया और फिर उसको भूल गया।

सरला ने भी साधु से एक बीज लिया। वह जानती थी कि केवल बीज बोने से कोई जादुई फल नहीं उगता। वह उस बीज को लेकर अपने बगीचे में आई। उसने सबसे अच्छी जगह चुनी और पूरी निष्ठा के साथ बीज बो दिया। इसके बाद उसने दिन-रात उस बीज की बच्चों की तरह देखभाल की। वह रोज़ समय पर उसे पानी देती, उसके आसपास की मिट्टी को नरम रखती और ध्यान से खरपतवार हटाती रहती। सरला का उद्देश्य खजाना नहीं था बल्कि अपने कर्म के प्रति उसकी पूरी ईमानदारी थी। वह बताना चाहती थी कि मेहनत से एक छोटा सा बीज भी एक बड़े वृक्ष में बदल सकता है।

एक साल पलक झपकते ही बीत गया। साधु अपनी घोषणा के अनुसार फिर से गाँव में आया। सभी गाँव वाले अपने-अपने गमलों और पौधों को लेकर उत्सुकता से उसके सामने कतार में खड़े हो गए। जिन्होंने खेतों में बीज बोया था वो अपने खेत दिखाने के लिए उत्सुक थे। क़िस्मत की बात देखिए रंजन ने

कोई मेहनत नहीं की थी फिर भी उस के पेड़ पर भी एक चमकदार फल लगा था। रंजन फल को देखकर फूला नहीं समाया। सबसे पहले रंजन अपनी बारी के लिए आया। वह अपने बड़े, चमकदार और बेहद सुंदर दिखने वाले फल को साथ लेकर आया था। वह आत्मविश्वास से फूला हुआ था क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि उसका फल ही सबसे सुंदर है और वही विजेता बनेगा।

जब साधु ने रंजन के उस भव्य फल को चखा तो उसके माथे पर शिकन आ गई। उसने अफसोस के साथ अपना सिर हिलाया और कहा, "यह फल बाहर से भले ही सुंदर है लेकिन यह अंदर से एकदम कड़वा और बेस्वाद है। पुत्र, तुमने इसे केवल लालच और अधूरे मन से उगाया है।" उसके बाद गाँव वालों ने भी अपने-अपने पेड़-पौधे दिखाए जिसमें उनकी मेहनत के अनुसार

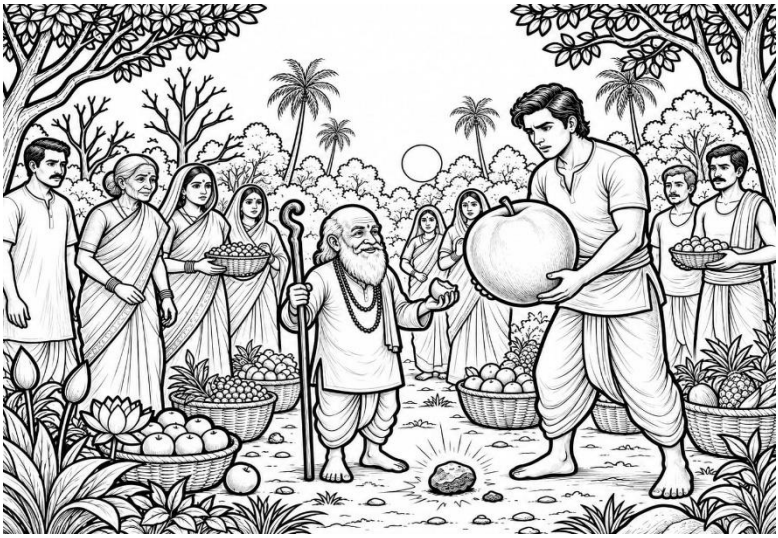

फल लगे हुए थे। साधु ने उन सब को चखा और उन सबके बारे में अपनी राय ज़ाहिर की।

सरला देवी क्योंकि उम्र में सबसे बड़ी थी इसलिए वह सबसे बाद में अपनी बारी के लिए आई। उसका फल रंजन के फल से बहुत छोटा था लेकिन उसकी मादक खुशबू मीठापुर गाँव के हर कोने में फैल रही थी। साधु ने गहरी आँखों से सरला देवी के फल को देखा फिर फल को चखा। उसकी आँखों में संतोष और ख़ुशी के आँसू आ गए। वह भावुक होकर बोला, "वाह! यह फल अत्यंत स्वादिष्ट और मीठा है क्योंकि इसे तुमने अपनी ईमानदारी और सच्ची मेहनत से सींचा है।"

कुछ देर उपरांत साधु ने रंजन के कड़वे फल से एक टुकड़ा लिया और उसे अपने हाथ में घुमाया। अचानक वह फल एक काले, बेजान पत्थर में बदल गया जो रंजन के आलस्य और लालच का प्रतीक था। पत्थर ज़मीन पर गिरकर एक धीमी, नीरस आवाज़ के साथ रुक गया।

फिर साधु ने सरला देवी के छोटे और मीठे फल से एक टुकड़ा लिया और उसे भी अपने हाथ में घुमाया। वह टुकड़ा तुरंत एक चमत्कारिक, बेशकीमती हीरे में बदल गया जिसकी अद्भुत रोशनी से मीठापुर का पूरा चौक जगमगा उठा। उस हीरे में इंद्रधनुष के रंग समाए हुए थे, जैसे सरला की मेहनत का हर पल उसमें कैद हो गया हो।

सभी गाँव वाले सन्न रह गए। रंजन, जो अब तक अपने आत्मविश्वास में फूला हुआ था, शर्म और पश्चात्ताप से धरती में गड़ गया। उसकी आँखें झुक गईं।

साधु ने हीरा सरला के काँपते हाथों में रखते हुए कहा, "हे देवी! यह जादुई खजाना नहीं बल्कि तुम्हारी ईमानदारी और सच्ची मेहनत का फल है। तुम आज से मीठापुर की सबसे धनी और सबसे सम्मानित व्यक्ति हो। तुम्हारी मेहनत ने इस बीज को केवल फल नहीं बल्कि जीवन का सबसे शुद्ध सोना दिया है।"

सरला ने हीरा लेकर तुरंत उसे साधु के चरणों में रख दिया और बोली, "साधु महाराज! मेरे लिए यही सबसे बड़ा खजाना है कि मेरी मेहनत सफल हुई। यह हीरा मेरा नहीं, मीठापुर की ईमानदारी का प्रतीक है।"



यह देखकर गाँव वाले भावुक हो उठे। रंजन भागकर सरला के चरणों में गिर गया और फूट-फूटकर रोते हुए बोला, "माँ! मुझे क्षमा कर दो। मैंने हमेशा तुम्हारी मेहनत का मज़ाक उड़ाया। आज मुझे पता चला कि आराम नहीं, कर्म ही सच्चा धर्म है।"

तो बच्चो, आओ देखते हैं कि इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है। वह जादुई खजाना कौन सा था। बौने साधु ने यह दृश्य देखकर क्या कहा होगा।

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, "मीठापुर के लोग! यह घटना याद रखना। जीवन में हर बीज चाहे वह किसी कर्म का हो, रिश्ते का हो या विचार का, ईमानदारी और मेहनत के पानी से ही मीठा फल देता है। और यही है वह जादुई खजाना!"

□

सयाना कौआ और घमंडी हंस

बात ज्यादा पुरानी नहीं है लेकिन एक समय की बात है कि प्रकृति के हृदय में एक घना और शाँत जंगल फलता-फूलता था। इस जंगल के ठीक बीचों-बीच, सूरज की किरणें जहाँ सबसे पहले पहुँचती थीं वहाँ एक मीठे और शीतल जल से भरी एक विशाल झील थी। इस झील का पानी इतना साफ़ था कि आसमान का नीला रंग उसमें बिल्कुल वैसा ही प्रतिबिंबित होता प्रतीत होता था। ऐसा लगता था मानो पानी का रंग ही नीला हो। इसी झील पर शुभ्र नाम का एक हंस राज करता था।

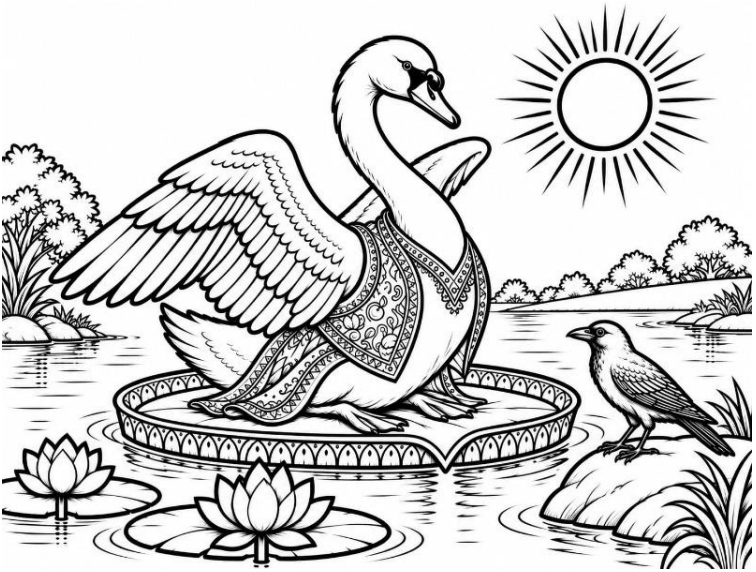

शुभ्र का नाम उसकी शुद्ध सुंदरता को सार्थक करता था। उसके पंख बर्फ़ से भी ज़्यादा सफ़ेद और चमकदार थे। जब वह पानी में तैरता तो लगता

जैसे चाँदी की कोई नौका शाँत जल पर बहती चली जा रही हो। उसके इस सुंदर रूप को देखकर हर किसी का मन प्रसन्न हो जाता था लेकिन अपनी इसी अद्वितीय सुंदरता पर शुभ्र को बहुत घमंड था। वह ख़ुद को जंगल का सबसे श्रेष्ठ और अभिजात पक्षी समझता था। उसका स्वभाव इतना अभिमानी था कि वह अपनी प्रशंसा में घंटों बिताता और हर किसी को नीचा दिखाने की कोशिश करता जिसकी वजह से अन्य पक्षी अब उसके पास आने से कतराने लगे थे।

नील नाम का एक साधारण कौआ अक्सर उसी झील पर अपनी प्यास बुझाने आया करता था। नील के पंख साँझ के आसमान जैसे काले थे और उसका रूप-रंग शुभ्र के मुकाबले बहुत ही विनम्र था। जब भी नील झील पर पानी पीने आता शुभ्र अपनी सुन्दरता पर इतराते हुए हर बार नील को देखते ही मज़ाक उड़ाना शुरू कर देता, "अरे, देखो-देखो कौन आया! ऐ काले कौए, जरा मेरे सफेद पंखों की चमक तो देखो! तुम तो केवल रात के अँधेरे जैसे हो और मैं पूर्णिमा का चाँद हूँ! तुम्हारे साधारण, भद्दे पंख मेरे सामने कुछ भी नहीं हैं।"

नील इन सब बातों पर कभी क्रोधित नहीं होता था। वह शाँत मन से पानी पीता और शुभ्र की बातों को हवा में उड़ते सूखे पत्तों जैसा मानता। शुभ्र की जली-कटी बातें सुनकर भी नील बस मुस्कुरा देता। वह जानता था कि असली सौंदर्य आँखों में नहीं वरन् मन की सरलता, बुद्धि की तीक्ष्णता और दयालुता में होता है जो दिखावे से कहीं ज़्यादा टिकाऊ है।

एक दिन जंगल पर प्रकृति की ओर से अचानक एक आपदा आ गई। आसमान से बरसने वाली बारिश कम हो गई और भीषण गर्मी अपना प्रकोप दिखाने लगी। जिस मीठे पानी की झील पर सभी जीव निर्भर थे, उसका पानी अचानक सूखने लगा। पहले-पहल तो यह सब कुछ मामूली लगा लेकिन दिन-

प्रतिदिन पानी का स्तर इतनी तेजी से गिरने लगा कि शाँत और गहरी झील एक कीचड़ भरे गड्ढे में बदलने लगी।

थोड़े ही समय में झील का तल दिखने लगा। हर जगह सूखी थी। धरती जैसे फटने लगी थी। उन दरारों पर मिट्टी थी जिन पर कभी पानी की लहरें नाचती थीं। बस कहीं-कहीं किसी कोने में ही पानी की झलक दिखाई देती थी। जंगल के सभी पक्षी भयभीत हो गए। उनके पंखों की उड़ान अब जीवन की चिंता में बदल गई थी। वे यही सोचते रहते कि कभी अगर दो बूँद पानी भी नसीब नहीं हुआ तो क्या होगा।

शुभ्र, जो हमेशा अपनी सफेदी और सुंदरता के नशे में चूर रहता था अब अपनी प्यास की वजह से तड़पने लगा। उसके चमकदार पंख अब फीके पड़ गए थे और सुंदर गर्दन पानी की तलाश में चारों ओर घूमती रहती थी। उसे अपनी शोभा की जरा भी परवाह नहीं रही थी। अब उसकी एकमात्र चिंता थी कि पानी कहाँ मिलेगा? शुभ्र का सारा घमंड इस प्राकृतिक संकट के सामने कमज़ोर पड़ गया था। उसे याद आया कि कैसे नील हमेशा शाँत रहता था और जंगल के कोने-कोने को जानता था। अपने घमंड को कुचलते हुए शुभ्र ने उस साधारण कौए को पुकारना शुरू कर दिया जिसे वह हमेशा नीचा दिखाता था। उसे लगता था कि कौआ बहुत शाँत प्रवृत्ति का है इसलिए मेरी मदद ज़रूर करेगा और यही हुआ भी।

शुभ्र ने नील से कहा, "हे प्रिय कौए, क्या तुम्हें पता है कि पीने के लिए ठंडा और मीठा पानी और कहाँ मिलेगा? मुझे बहुत प्यास लगी है।"

जब शुभ्र ने अपनी प्यास की चिंता में नील से पूछा तो नील ने जरा भी देरी या संकोच नहीं किया। उसे अपने अपमान की भी कोई बात याद नहीं रही। उसने शाँत भाव से कहा, "हाँ, मुझे पता है। इस जंगल के दूसरी तरफ़ एक बहुत बड़ा और मीठे पानी का झरना है। वहाँ खूब पानी है।"

शुभ्र ने पूछा, "लेकिन मैं वहाँ कैसे पहुँचूँगा? मुझे तो रास्ता भी नहीं पता।"

नील ने उसकी ओर नम्रता से देखा। उसकी आँखों में कोई घमंड नहीं था। बदले की कोई भावना भी नहीं थी। विपरीत इसके शुभ्र की प्यास ने उसे परेशान कर दिया था। नील ने विनम्रतापूर्वक कहा, "तुम मेरे साथ-साथ चलना। मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँगा। तुम उड़ने में भले ही मुझसे अच्छे हो और तुम्हारी रफ़्तार भी तेज है लेकिन तुम्हें जंगल के अंदरूनी रास्ते नहीं पता। मेरी काली आँखें दूर-दूर तक रास्ता देखती हैं।"

शुभ्र को अपनी ग़लती का एहसास हुआ। उसने देखा कि जिस कौए को वह हमेशा काले रंग के लिए नीचा दिखाता था वही आज उसकी जीवनरेखा बन गया है। बाकी कोई दूसरा पक्षी उसकी सहायता के लिए नहीं आया। बिना



किसी देरी के घुटनों के बल झुके हुए शुभ्र ने नील से सच्चे दिल से माफ़ी माँगी। उसकी आवाज़ में बैठा घमंड का आईना अब टूटकर बिखर गया था।

नील ने तुरंत उसे माफ कर दिया और बिना एक पल गँवाए वह धीरे-धीरे आगे उड़ चला। शुभ्र, जो उड़ने में माहिर था, अब नील के पीछे-पीछे चल रहा था। और उनके साथ-साथ उड़ रही थी जीवन की आशा और सद्भावना की लौ। नील धीरे-धीरे उड़ता, पेड़ों की हरियाली और जंगल के घुमावदार रास्तों से होता हुआ शुभ्र को झरने के पास ले गया।

झरने पर पहुँचकर शुभ्र की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने जी भर कर झरने का ठंडा और मीठा पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई। पानी ने सिर्फ उसके शरीर को ही नहीं बल्कि हृदय के अभिमान को भी धो डाला था। उसने नील को गहरे सम्मान के साथ धन्यवाद दिया और सच्चे मन से कहा, "नील, मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मैंने तुम्हारी बुद्धिमत्ता और दयालुता को कभी नहीं समझा। मैंने हमेशा बाहरी सुंदरता को देखा और तुम्हारी आंतरिक अच्छाई की उपेक्षा की। आज तुमने मुझे बचाया, मुझे जीवन दान दिया जबकि मैं हमेशा तुम्हारा मज़ाक उड़ाया करता था। मुझे माफ कर दो, दोस्त मैं समझ गया हूँ कि बाहरी दिखावा नहीं बल्कि सच्ची बुद्धिमत्ता, विनम्रता और दयालुता ही असली सौंदर्य है।

□

दयालु काकी और लालची व्यापारी

आओ बच्चो, आज मैं आपको सुमती काकी से मिलवाती हूँ। बहुत समय पहले की बात है एक छोटे से गाँव में जहाँ मिट्टी के घर और खेतों की हरियाली थी, वहाँ सुमती काकी रहती थीं। काकी की उम्र भले ही ज़्यादा थी लेकिन उनका तन चुस्त और मन किसी निर्मल जलधारा जैसा शाँत और साफ़ था। काकी के पास पाँच बकरियाँ थीं...बग्गो, पिस्ती, चीना, डब्बो और धौली। ये बकरियाँ ही उनका पूरा संसार थीं। काकी अपनी बकरियों को जानवर नहीं बल्कि अपने बच्चों की तरह मानती थीं। वह उन्हें सबसे कोमल घास और हरे-भरे पात खिलातीं और उन्हें प्यार से सहलाती रहती थीं। इसीलिए उनकी बकरियाँ भी हमेशा स्वस्थ, मोटी और दूध से भरी रहती थीं।

उसी गाँव में गोपाल नाम का एक आदमी रहता था जिसके जीवन का एकमात्र धर्म था लालच। वह एक भरा-पूरा व्यापारी था लेकिन उसका मन धन पाने की भूख में हमेशा खाली रहता था। गोपाल के पास सब कुछ था फिर भी उसे शाँति नहीं थी। वह रोज़ देखता कि काकी की बकरियाँ कितनी हृष्ट-पुष्ट हैं और उनके पास दूध की कितनी समृद्धि है। गोपाल को यह देखकर बहुत जलन होती थी। वह मन ही मन कुढ़ता, "इस बूढ़ी काकी के पास स्वस्थ बकरियों का इतना धन क्यों है?" इसी जलन और ईर्ष्या में उसने तय कर लिया कि वह धोखाधड़ी से काकी की सारी बकरियों को हथिया लेगा।

वह रात-दिन उन बकरियों को पाने की उधेड़बुन में ही लगा रहता। नींद में भी उसे बकरियाँ ही दिखाई देतीं। इसी कशमकश में कई दिन बीत गए लेकिन अभी तक उसका कोई जुगाड़ काम नहीं आया और बकरियाँ उसके हाथ नहीं लगीं। ...और एक दिन गोपाल ने अपनी योजना को अंजाम

देने का फैसला कर ही लिया। उसने देखा कि काकी बाज़ार में अकेली है तो उसे अपनी चाल चलने का सही मौका मिल गया। वह ज़हर भरी मुस्कान लिए काकी के पास गया और अत्यंत मिठास भरी आवाज़ में बोला, "काकी, आप बहुत दयालु हैं। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मेरे पास एक जादुई कड़ा है जिसे पहनने से आपकी बकरियों का दूध तुरंत दोगुना हो जाएगा। आप और भी सुखी हो जाएँगी।" काकी अपनी सादगी के कारण उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गईं और हैरानी से पूछा, "लेकिन इसके बदले में तुम क्या लोगे, बेटा? कोई भी इतनी कीमती चीज़ मुफ़्त में क्यों देगा?"

गोपाल का लालची मन मुस्कुरा उठा। उसने बनावटी उदारता दिखाते हुए कहा, "कुछ नहीं काकी, मुझे आपकी सेवा कर के जो खुशी मिलेगी वही मेरा इनाम है। हाँ, लेकिन सबसे ज्यादा ज़रूरी बात ये है कि इस कड़े को जादुई शक्ति से सक्रिय करने के लिए मुझे कुछ दिनों के लिए आपकी बकरियाँ



लेनी होंगी। मैं उन्हें अपने हरे-भरे खेत में चराऊँगा ताकि कड़े का जादू उन पर पूरी तरह से काम कर सके।"

काकी अपनी भोली सरलता के कारण धूर्त गोपाल के धोखे को समझ नहीं पाईं। उन्हें लगा कि गोपाल सचमुच एक दयालु युवक है। उन्होंने बिना किसी संदेह के अपनी पाँचों प्यारी बकरियाँ बग्गो, पिस्ती, चीना, डब्बो और धौली गोपाल के हवाले कर दीं। गोपाल धूर्तता से मुस्कुराता हुआ बकरियों को लेकर अपने रास्ते चला गया और काकी जादुई कड़े के सपने देखने लगीं।

कुछ दिन बीत गए। काकी का घर अब खाली-खाली था। बकरियों की मधुर आवाज़ और उनके पैरों की आहट के बिना काकी को हर पल बेचैनी महसूस होती थी। उन्हें लगने लगा कि अब गोपाल को बकरियाँ वापस कर देनी चाहिएँ। काकी परेशान होकर एक दिन गोपाल के घर गईं। उन्होंने विनम्रता से कहा, "गोपाल, बेटा! तुम्हें तो पता ही है कि बकरियों के अलावा मेरा कोई और सहारा नहीं। मेरी बकरियाँ मुझे वापस दे दो। मुझे अब उनकी याद सता रही है। मैं अब और उनके बिना नहीं रह सकती।"

गोपाल जो अब पूरी तरह से लालच में अंधा हो चुका था, अपने दिखावटी रूप से बाहर आया। उसके चेहरे पर अब मुस्कान नहीं बल्कि क्रूरता थी। उसने काकी को पहचानने तक का नाटक किया और कठोर आवाज़ में जवाब दिया, "कौन हो तुम और कौन सी बकरियाँ? मैं तुम्हें जानता भी नहीं, बूढ़ी औरत! मेरे पास कोई बकरियाँ नहीं हैं। लगता है तुम्हें भ्रम हो गया है। अब जाओ यहाँ से और दफ़ा हो जाओ!"

गोपाल के इस विश्वासघात से काकी का दिल टूट गया। वह आँखों में आँसू लिए निराशा और गुस्से से भर अपने घर लौट आईं। उन्हें समझ आ गया था कि गोपाल ने उन्हें धोखा दिया है और अब उनका अपनी बकरियों को वापस पाना मुश्किल है। लेकिन वह यह भी जानती थीं कि अगर वह चुप रहीं

तो गोपाल का लालच और बढ़ जाएगा। काकी अपनी पूरी हिम्मत बटोरकर सीधे गाँव के मुखिया के पास पहुँचीं। उनकी आँखों में आँसू और आक्रोश दोनों थे। काकी ने मुखिया को पूरी बात विस्तार से बताई कि कैसे गोपाल ने जादुई कड़े का बहाना बनाया और उसकी पाँचों बकरियाँ धोखे से हथिया लीं।

मुखिया एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने काकी की बात ध्यान से सुनी और तुरंत अपने सेवक को भेजकर गोपाल को पंचायत में बुलवाया। जब गोपाल घमंड से इतराता हुआ आया तो मुखिया ने शाँति से पूछा, "गोपाल, क्या तुमने सुमती काकी की बकरियाँ ली हैं...?"

गोपाल ने बिना पलक झपकाए सफ़ेद झूठ बोलते हुए कहा, "नहीं-नहीं, मैंने तो नहीं लीं। काकी बूढ़ी हो गई हैं। शरीर के साथ-साथ उनकी यादाश्त भी कमज़ोर हो गई है। हो सकता है उनकी नज़र भी कमज़ोर हो गई हो इसलिए मेरी बकरियों को अपना समझ बैठी हों। मुखिया जी, मुझे तो लगता है कि उन्हें भ्रम हो गया है। मेरे पास उनकी बकरियाँ नहीं हैं। जो बकरियाँ हैं, वो मेरी हैं।" धूर्त गोपाल कह तो बड़े विश्वास के साथ रहा था लेकिन उसकी आँखों में छल-कपट साफ़-साफ़ झलक रहा था परंतु दुख की बात यह भी थी कि इस बात का कोई सबूत नहीं था।

मुखिया यह तो जान गए थे कि लालची गोपाल झूठ बोल रहा है लेकिन सबूत के बिना न्याय करना संभव नहीं था। वह समझ गए कि इस मामले को सुलझाने के लिए अब सीधे सवाल काम नहीं करेंगे। उन्होंने एक क्षण सोचा और फिर उनके दिमाग में एक चतुर तरकीब आई। उन्होंने अपने सेवक के कान में कुछ कहा और फिर सबके सामने एक मिट्टी की मटकी लाने का आदेश दिया। मटकी को उन्होंने पंचायत के बीचों-बीच एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे रखवा दिया।

मुखिया ने अपनी गंभीर आवाज़ में दोनों से कहा, "यह कोई साधारण मटकी नहीं है। यह सत्य की मटकी है। जो भी इस मटकी को उठाएगा, झूठ का बोझ उस पर इतना भारी पड़ेगा कि सच्चाई तुरंत सबके सामने आ जाएगी!"

गोपाल का रंग मुखिया की बात सुनकर फीका पड़ गया। उसका डर अब उसकी आँखों में साफ़ झलकने लगा था। उसे लगा कि मुखिया सच कह रहे हैं और मटकी में कोई जादुई ताकत है। उसे अपनी चोरी पकड़े जाने और सबके सामने शर्मिंदा होने का डर था। इसलिए उसने तुरंत मटकी उठाने से साफ़ मना कर दिया लेकिन सुमती काकी, जिनका मन साफ़ था और हृदय निर्दोष, वह बिना किसी डर के आगे आईं। उन्होंने हिम्मत की और मटकी को आसानी से उठा लिया।

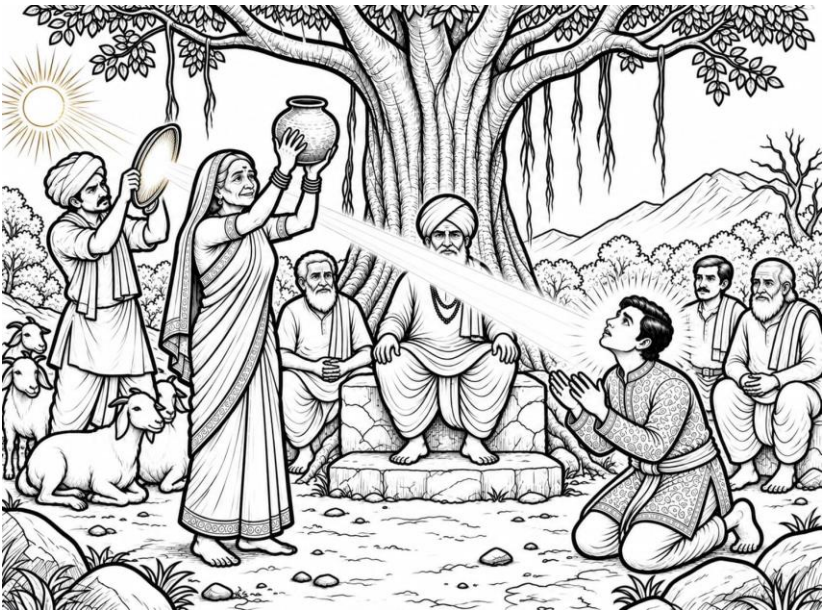

जैसे ही काकी ने मटकी उठाई वहाँ कोई जादू नहीं हुआ लेकिन मुखिया ने पहले से तैयार किया गया चमत्कार कर दिखाया! मुखिया के सेवक ने छिपाकर रखी एक रोशनी जो दर्पण से परावर्तित तेज धूप जैसी थी को गोपाल के चेहरे पर केंद्रित कर दिया। चोर की दाढ़ी में तिनका तो था ही इसलिए चमत्कारिक रोशनी का यह आभास देखकर गोपाल को लगा कि मटकी का जादू सच में काम कर गया है! और सत्य के जादू ने उसकी चोरी पकड़ ली।

गोपाल का चेहरा शर्म, डर और पश्चाताप से लाल हो गया। उसका झूठ अब उसके बस में नहीं था। वह हकलाने लगा और मुखिया के सामने घुटनों पर बैठ गया। रोते हुए उसने अपनी पूरी चोरी स्वीकार कर ली। उसने बताया कि कैसे उसने काकी के भोले-भाले स्वभाव का फायदा उठाया और दूध के लालच में धोखे से सारी बकरियाँ हथिया लीं। मुखिया ने न्याय करते हुए गोपाल को आदेश दिया कि वह काकी की पाँचों बकरियाँ तुरंत वापस करे, पंचायत द्वारा जो भी हर्जाना तय है वो भरे और उनसे सच्चे दिल से माफ़ी माँगे। गोपाल ने बिना देरी किए ऐसा ही किया।

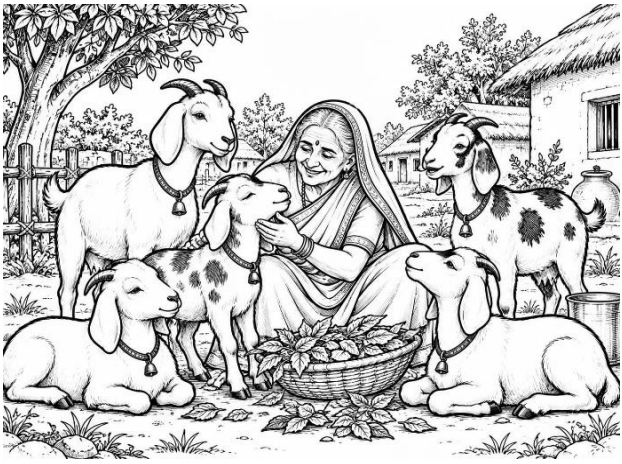

बग्गो, पिस्ती, चीना, डब्बो और धौली मेंअअ-मेंअअ करती हुईं काकी से लिपट गईं। काकी अपनी प्यारी बकरियों को वापस पाकर बहुत खुश हुईं और उन्हें खूब प्यार किया। उन्हें लगा जैसे

उन्हें अपना खोया हुआ संसार मिल गया हो। उनकी आँखों में अब आँसू नहीं बल्कि संतोष था।

काकी ने खुले मन से मुखिया जी का धन्यवाद किया। अपनी दयालुता के कारण काकी ने गोपाल को माफ तो कर दिया लेकिन एक सबक भी सिखाया कि लालच हमेशा हारता है और सच्चा सुख ईमानदारी और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में है ना कि छल-कपट करने में। गाँव वालों ने काकी की महानता के साथ-साथ मुखिया की बुद्धिमत्ता और विवेक की भी खूब प्रशंसा की।

□

बूढ़ी अम्मा और रंगीन पतंगें

एक छोटे से गाँव में जहाँ सुबह की हवा फूलों की मादक महक से लबालब भरी होती थी, एक बूढ़ी अम्मा रहती थीं जिन्हें गाँववाले प्यार से "नानी माँ" कहते थे। उनकी झोंपड़ी पुरानी और टूटी-फूटी लकड़ी की थी, दीवारों पर काई की हरी चादर चढ़ी हुई थी और बाहर का बगीचा रंगों का समंदर था। लाल, गुलाबी, काले गुलाब, पीले गेंदे, नीली जूही और सफेद फूल हमेशा नाचते रहते थे। नानी माँ की आँखें गहरी झुर्रियों में डूबी हुई थीं लेकिन चमक उनमें बिजली-सी झलकती थी जैसे जंगल का कोई खूंखार रहस्य छिपा हो। उनकी झोंपड़ी के आसपास हवा भयानक सनसनाहट करती थी। ऐसा लगता था जैसे किसी डरावने साये की फुसफुसाहट हो, जैसे ठंडी साँसें गालों को सहला रही हों! गाँव के बच्चे उनसे थर-थर काँपते थे लेकिन एक नन्हा और निडर लड़का छोटू, जिसके काले घुंघराले बाल हवा में उड़ते रहते थे और चमकदार आँखें साहस से लबरेज़ रहती थीं, नानी माँ से बिल्कुल नहीं डरता था।

एक धूप भरी दोपहर को बच्चों के लिए गाँव में "पतंग उत्सव" का शोर मच गया। मैदान पर हँसी-ठहाके गूँज रहे थे, रंग-बिरंगी पतंगें चमक रही थीं। लाल, नीली, पीली, हरी, सफेद, काली, भूरी पतंगें धागों की जंजीरों से बंधकर भी आसमान छू रही थीं। सभी बच्चे उछल-कूद मचा रहे थे लेकिन छोटू की चमचमाती पतंग अचानक फट गई ऐसे जैसे किसी अदृश्य काले पंजे ने उसे चीर डाला हो! कागज़ के टुकड़े हवा में बिखरे तो छोटू का चेहरा उदास होकर बादल सा लटक गया। काँपते कदमों से वह नानी माँ की झोपड़ी के पास बैठ गया। आँसू की बूँदें उसके गालों पर बह रही थीं। नानी माँ ने दरवाजे पर खड़ी

होकर उसे देखा और उनकी कर्कश आवाज़ गरजी, "क्या हुआ, छोटू...? तेरी आँखों में डर की आग क्यों सुलग रही है?"

छोटू ने काँपते होंठों से सारी बात बता दी। नानी माँ के होंठों पर अजब मुस्कान फैल गई और उनके पीले दाँत ऐसे चमक उठे जैसे बादलों में बिजली। "हाँ तो मुँह क्यों लटका रखा है...! किस बात का डर है तुझे, नन्हें सिपाही...?" रौबदार आवाज़ में कहते हुए वे छोटू के पास आकर बैठ गईं। "ध्यान से सुन..." अपने झुर्रीदार हाथों को हवा में नचाते हुए वे रहस्यमय आवाज़ में फुसफुसाईं, "मेरे पास एक खास पतंग है लेकिन अरे बाप रे! यह कोई खिलौना नहीं है, बच्चू! यह 'निगलम पतंग' है! हर डर को चबा-चबाकर निगल जाती है और कभी-कभी पेट फूलने पर मन के डर के खूँखार राक्षस भी उगल देती है! साहस है तो आ बच्चे...! लेकिन याद रख, एक कदम भी पीछे हटा तो तेरी हड्डियाँ चटक जाएँगी!"

छोटू का दिल धड़कन की तरह धक-धक करने लगा। माथे पर ठंडा पसीना टपकने लगा फिर भी उसने साहस की आग भड़का ही ली। नानी माँ ने उसका हाथ पकड़ा और झोंपड़ी के नीचे गुप्त गुफा में धकेल दिया जहाँ सीढ़ियाँ फिसलन भरी थीं, दीवारें चिपचिपी और हवा में सड़ाँध भरी थी। मशालें भभक-भभककर लाल-पीली लपटें बिखेर रही थीं और जिनकी परछाइयाँ दीवारों पर ता-ता थैय्या करते हुए अनोखा नृत्य कर रही थीं। इसी गुफा के बीच में जंजीरों से बंधी लोहे की पेटी रखी हुई थी जो चरमराते हुई काँप रही थी। नानी माँ ने जंग लगी चाबी घुमाई...खट्ट! पेटी का ढक्कन खुला तो छोटू ने देखा कि अंदर एक भयानक रूप से दिखने वाली पतंग पड़ी थी! पतंग के पास पड़ा काला कपड़ा लाल रंग से सना हुआ था लेकिन ऐसा प्रतीत होता था जैसे उस पर लाल खून के धब्बे हों। बीच में आँखों जैसे दिखने वाले काले-काले मोती

भी डरावनी चमक मार रहे थे। दूसरे कोने में था खूब सारी सादी और सफेद पतंगों का ढेर... ऐसे जैसे कोई बर्फ का पहाड़ हो!

"उठा बच्चे, डरता क्या है...?"



छोटू ने जैसे ही एक सफेद पतंग को छुआ, पतंग गर्र्रर कर गरजी। हवा का तूफान सा उठ गया, पंख बाज की तरह फैल गए और रंग चमकते हुए उभर आए... लाल, काले, हरे, नीले, भूरे, पीले और सुनहरे। गुफा खड़खड़ कर हिल गई जैसे कोई डर उसे धकेल रहा हो!

"एक साधु के कहने पर यह काली पतंग मैंने अपने डर के राक्षस से बनाई थी, जब मैं बहुत छोटी थी। उसकी साँसें कैद हैं इसमें! और मेरे सारे डर भी क्योंकि बचपन में डर का एक राक्षस मेरे भीतर भी रहता था, बच्चे! लेकिन बहुत पहले ही मैंने उसे मारकर इस काली पतंग में कैद कर लिया। और ये सारी सफेद पतंगें मैंने अपने मनोविज्ञान के जादू से बनाई हैं...! जब भी किसी को अपना डर भगाना होता है ना तो मुझसे एक पतंग माँग कर ले जाता है। ये सभी पतंगें अभी कोरी हैं। तुम अपना डर इनको दे सकते हो...!" छोटू आँखें फाड़कर आश्चर्य से पतंगों को देखता रहा।

छोटू को ध्यान मग्न देखकर नानी माँ रहस्यमई आवाज़ में बोलीं, "अगर इसे उड़ा पाया तो ये सारे डर निगल लेगी! लेकिन अगर ये हार गई तो मन का राक्षस तेरी हड्डियाँ चबा डालेगा! और...."

नानी माँ अभी छोटू को समझा ही रही थीं कि छोटू को ढूँढते-ढूँढते बाकी बच्चे भी उसके पीछे-पीछे गुफा में आ गए थे और चुपचाप पर्दे के पीछे छुपकर खड़े थे। नानी माँ ने बच्चों को छुपकर बातें सुनते देखा तो कुटिलता से मुस्कुराईं, आओ तुम भी अंदर आओ, बच्चो! एक-एक करके आओ और अपनी-अपनी सफेद पतंग उठाओ और मेरी बात ध्यान से सुनो, "जिस भी पतंग को बच्चे अपना-अपना डर बताएँगे, पतंग उसे अपने भीतर सोख लेगी और तुम्हारा डर छू-मंतर हो जाएगा! लेकिन ध्यान रहे डर खत्म होते ही पतंग की डोरी हर हाल में हाथ से छोड़ देनी होगी ताकि डर कभी लौटकर न आए।"

"कहाँ आ फँसे...!" सारे बच्चे मन ही मन सोचने लगे। नानी माँ की रहस्य से भरी बातें सुनकर उनका डर कुछ और बढ़ गया था।

इधर छोटू के हाथ-पैर बर्फ जैसे हो गए, उधर उत्सव का शोर उसके कानों को फाड़ रहा था। एक संघर्ष उसके दिमाग में हथौड़े चला रहा था। और फिर आखिरी हथौड़ा पड़ते ही संघर्ष और छोटू दोनों ही दौड़ पड़े, वहाँ जहाँ दूसरे सारे बच्चे बाहर उत्सव में मशगूल थे। छोटू के पीछे-पीछे उसके सभी दोस्त भी हाथ में पतंगें उठाए उत्सव में शामिल हो गए।

बाहर हवा और भी तूफानी थी, बिजलियाँ आकाश चीर रही थीं और धूल उड़ रही थी। मैदान पर बच्चे चिल्ला रहे थे। छोटू ने डोर कसकर पकड़ी और चीखा, "उड़!....बूमममममम!" पतंग आसमान फाड़ती हुई उड़ गई। आकाश काला कुहासा बन गया और बादल गरजने लगे! अब डरों का ताँडव शुरू हो गया! पतंग घूम-घूमकर उत्सव में आए हुए बच्चों के डर निगल रही थी। हर बार निगलने में धमाका हो रहा था और रंग बरस रहे थे!

ओह...! सबसे पहले नीला रंग फैल गया...उदासी का डर। जो बच्चे



उदास थे वो चीख उठे। आँखों से आँसू बहने लगे। उनके मन में काँटेदार तारें उभर आईं जो सोचते थे "हमारा कोई दोस्त नहीं, हम हमेशा अकेले ही रहेंगे!" उन सबका हृदय विचलित होने लगा। उन्हें ऐसा महसूस होने लगा जैसे उनका मन सर्द रात सा ठंडा हो रहा हो।

नानी माँ चीखीं, "यह उदासी की छाया है! इसे अपनी मुस्कान से उड़ाओ! हँसने के बाद अपनी आँखें खोलो और खुशियाँ देखो! चलो, सब बच्चे अपना-अपना हाथ बढ़ाओ, गले मिलो! जब दोस्त साथ हों तो अकेलापन कैसा? एक-दूसरे को हँसाओ! जल्दी करो! इस नीले बादल को दोस्ती की गर्मी से पिघलाओ...शाबाश!"

इधर दोस्ती के हाथ बढ़े और उधर पतंग ने झपट्टा मारकर नीला रंग ऐसे चूस लिया जैसे भँवर वस्तुओं को अपनी ओर खींच लेता है! उदासी दूर हुई तो बच्चे हँस पड़े...खिलखिलाकर... मोती जैसे दाँतों की सफेद हँसी। देखकर सफेद पतंग भी हैरान हो गई और उदासी के डर को लेकर दूर उड़ गई।

उत्सव में दूर-दूर तक हँसी के फव्वारे तैरने लगे। बच्चों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया, उनकी आँखें चमक उठीं। एक ने जब चिल्लाकर कहा, "अरे! मैं तो डर गया था कि अकेला रह जाऊँगा!" तो उत्सव में हँसी की लहर दौड़ गई।

बच्चों को हँसता देखकर लाल रंग भड़क उठा...गुस्से का डर। मोटू गरजा और आक्रोश की वजह से उसकी आँखें लाल-लाल होने लगीं। मुट्ठियाँ जोर से भींचने की वजह से सख़्त हो गईं और नसें फूलने लगीं। लाल-लाल आँखों से बोला, "मुझे मास्टर जी के गुस्से से बहुत डर लगता है। उनकी डाँट सुनते ही पैर काँप जाते हैं। स्लेट पर चुटकी मारते हैं तो आँसू आ जाते हैं। लेकिन आज मुझे भी बहुत गुस्सा आ रहा है। मैं सबकी पतंग काट दूँगा! सबसे तेज पतंग मेरी ही होगी!"

नानी माँ ने दहाड़कर कहा, "गुस्सा! यह आग है, मोटू! गुस्से को आग से नहीं, पानी से बुझाओ! शाँति से जीतो। मुट्ठी खोलो, हवा में ठंडी साँस भरो और बोलो, 'गुस्सा भाग! दोस्ती जाग!' अपने मन को शाँत करो, बेटा! मास्टर जी का गुस्सा नहीं, तुम्हारा डर और ज़िद हारनी चाहिए!"

नानी माँ दोबारा जोर से चिल्लाईं, "अपना डर पतंग को दो मोटू... जल्दी करो...!"

"ले ले पतंग, मेरा गुस्सा ले ले! गुस्सा भाग! दोस्ती जाग!" कहते हुए उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। पर यह क्या...! पतंग घूमी और लाल रंग को गटक गई। मोटू ज़मीन पर लुढ़क गया, उसकी साँसें धीमी पड़ गईं और चेहरे पर मुस्कान खिल गई। हाथ से पतंग की डोर क्या छूटी कि गुस्से के डर की पतंग दूर आसमान में उड़ गई।

"गुस्सा आता तो आग लग जाती...अब मन में शीतल हवा बह रही है!" मोटू ने कहा और आँसू बहाने लगा। बच्चे उसे रोता देखकर मोटू-मोटू चिल्लाने लगे लेकिन मोटू को फिर भी गुस्सा नहीं आया।

अभी बाकी डरों का धुआँ छँटा भी न था कि हरा रंग उमड़ आया... पढ़ाई की बीमारी का डर लिए। गुड़िया चीखी, "मुझे होमवर्क से डर लगता है। नोटबुक देखते ही थकान हो जाती है। पूरा न होने पर डाँट पड़ती है।" उसका चेहरा पीला पड़ गया जैसे किसी ने सारा खून चूस लिया हो। पसीना टपकने लगा... टप-टप-टप। काले चमकदार साँप लहराने लगे...हिस्स्स! हिस्स्स! हिस्स्स! जैसे आलस की छाया मन को जकड़ रही हो। लंबे-लंबे, चमकदार दाँत धमकाते हुए डराने लगे, "सुनो लड़की...! बीमार हो जाओगी! तुम्हारी हड्डियाँ पिघल जाएँगी!" सुनकर जैसे ही गुड़िया के पैर लड़खड़ाए, नानी माँ चिल्लाईं, "हरा रोग! यह तो आलस का ज़हर है! आलस को मार! गुड़िया...उठ और नाच! किताबों को दोस्त बना! होमवर्क कोई काम नहीं बल्कि सीखने का खेल है! अपना विश्वास लौटा! हिम्मत दिखा! जल्दी से अपना डर बता गुड़िया...!"

"ले जा पतंग, मेरा होमवर्क का डर ले जा! मेरा आलस का डर ले जा!" जैसे ही गुड़िया चिल्लाई पतंग ने साँपों को पंजों में पकड़ लिया और हरा रंग सोख लिया। गुड़िया के हाथ से पतंग की डोर छूटकर दूर उड़ गई। उसे लगा जैसे वह पूरी तरह स्वस्थ हो गई हो। हल्की होकर आसमान में उड़ रही हो। वो उछल पड़ी, नाचने लगी और गाने लगी। बच्चे उसे हैरानी से देखने लगे तो बोली, "मुझे डर था कि मैं कभी आलस के बिस्तर से न उठूँगी...पर अब मैं उड़ूँगी... आसमान तक! होमवर्क करने से क्या डरना...!"

हवा अभी गरमाई भी न थी कि भूरा रंग धुएँ की तरह फैल गया। भूरा रंग यानि भूतों का डर। भोलू काँपने लगा, उसकी रीढ़ की हड्डी झनझना उठी। उसकी आँखों के सामने सफेद साड़ी वाली चुड़ैल हँसने लगी...हा हा हा! उसके बाल उड़ रहे थे, आँखें खाली थीं, काली परछाइयाँ लपक रही थीं, "झोपड़ी में आओ, मैं तुम्हें खींच लूँगी!" डर के मारे भोलू भागने लगा तो नानी माँ दहाड़ीं,

"भूत अँधेरे का झूठ है...डर की परछाई भर और कुछ नहीं! भूतों का भ्रम होता है बस! भोलू, मुड़ और परछाईं को रौंद डाल! आँखें बंद कर, और बोल, 'तू अँधेरा है, मैं उजाला हूँ! भूतों को डरने दे, तू मत डर।"

"तू अँधेरा है, मैं उजाला हूँ! ले ले पतंग, मेरा भूतों का डर!...ले ले पतंग, मेरा भूतों का डर! वह सिर्फ कहानी थी जिसने मुझे रात में डराया था।" जैसे ही भोलू बोला पतंग ने भूरे धुएँ को अपने मुँह में ठूँस लिया और डर के सारे भूत गायब हो गए! भोलू उछल पड़ा, "आह...! कितना सुंदर मौसम है। मैंने डर को पछाड़ दिया। अब रातें स्वर्ग बन जाएंगी। नींद आएगी, बिना किसी थरथराहट के!"

भूतों की चीखें पतंग के मजबूत जबड़ों में अभी गूँज ही रही थीं कि पीला रंग चमक उठा...जानवरों का डर, कुत्ते, बिल्लियों का डर, स्कूल जाने का डर। रानी चिल्लाई। उसके पैर ज़मीन पर जड़ हो गए। कानों में शेर दहाड़ा, "...र्र्राओ! र्र्राओ!" उसके पंजे खुरदरे थे, दाँत चमक रहे थे। दूसरी ओर भेड़िए ऐसे गुर्रा रहे थे जैसे डर की परछाइयाँ जंगल में नाच रही हों, "जंगल में अकेली मत जाना वरना...!" डर के मारे रानी का दिल बैठ गया।

नानी माँ चिल्लाई, "डरो मत, बोलो रानी, अपना डर बताओ...! कुत्ते दुश्मन नहीं, दोस्त होते हैं! स्कूल डरने की जगह नहीं, जीवन की जंग जीतने का अखाड़ा है! अपनी आवाज़ उठा! और बोल, डर मुझसे डर गया, मैं जीत गई!"

"मुझे स्कूल जाने से भी डर लगता है। रास्ते में कुत्ते भौंकते हैं, दोस्त लोग चिढ़ाते हैं। सुबह उठना ही मुश्किल लगता है। ऐ पतंग! मेरे सारे डर ले जा... मैं डर से जीत गई!" पतंग ने जब रानी को बहादुरी से बोलते हुए सुना तो उड़ती हुई आई और एक झपट्टे में ही उसने कुत्तों, शेरों और भेड़ियों को निगल लिया। और धाड़ धाड़ धाड़ धाड़ पीला रंग सोख लिया। रानी हँस पड़ी, "अब

जंगल मेरा दोस्त है, स्कूल मेरा दोस्त है। हम सब कल ही जंगल जाएंगे फूलों और तितलियों से मिलने। मैं रोज स्कूल जाया करूँगी, बिना डर के।"

लेकिन तभी सबसे बड़ी तबाही आ गई! सबसे बड़ी पतंग का पेट फूल गया और आकाश फट गया। एक विशाल काला कोहरा उभरा, जैसे डरों का साया! यह कोई राक्षस नहीं था, बल्कि एक घना, ठंडा कोहरा, जो बच्चों के दिलों में छिपे सबसे बड़े डरों को लिए हुए था। उसकी काली परछाइयाँ लहरा रही थीं। वह फुसफुसाया, "सारे डर मुझे लौटाओ, वरना मैं तुम्हें अपने ठंडे आलिंगन में जकड़ लूँगा!" बिजलियाँ गिरीं, हवा सनसनाई और बच्चे डर से काँपते हुए एक-दूसरे से लिपट गए।

डर के राक्षस ने सब बच्चों के सबसे बड़े डर को उगल दिया। और सब डरों से विकराल था छोटू का पढ़ाई का डर! किताबें उछलकर दूर जा गिरीं। दाँत चबाती स्लेटें क्रंच-क्रंच कर रही थीं। तीखी नोंक वाली कलमें खरोंच-खरोंच और परीक्षाएँ चीख रही थीं, "पढ़ो! याद करो! याद करो! वरना फेल हो जाओगे! हमेशा आखिरी नंबर पर आओगे, कभी न जीत पाओगे!" कॉपी-किताबों के कागज़ काले साँप बनकर लिपट गए। कलम तलवार बन गई और छोटू लुढ़क गया। उसकी साँस रुक गई।

कोहरे रूपी राक्षस हँसा, "यह डर सबसे गहरा है, इसे मैं पहले निगलूँगा! हाहाहाहाहा...!"

"डरो मत, मेरे बच्चो!" नानी माँ ने पूरी ताकत लगाकर कहा। "यह कोहरा तुम्हारे डरों का साया मात्र है। तुम सब मिलकर इसे पिघला सकते हो! एक-एक करके अपने डर को पतंग को सौंपो, अपनी हँसी, दोस्ती, और साहस से इस कोहरे को जड़ से उड़ा दो!"

"नानी माँ! मुझे गणित से डर लगता है। जोड़-घटाव देखते ही सिर दर्द होने लगता है। फॉर्मूले याद ही नहीं रहते, हमेशा गलती हो जाती है। मुझे टेस्ट

देने से डर लगता है। कागज़ देखते ही हाथ-पैर ठंडे हो जाते हैं। सवाल पढ़ते ही दिमाग सुन्न पड़ जाता है।" छोटू की चीख निकली। रानी को छोड़कर नानी माँ छोटू की ओर लपकीं और अपनी झुर्रियों से लाल आग की लपटें फेंकीं। फुफकार की आवाज़ हुई!



"पढ़ाई का डर दे दे—पतंग को सौंप दे, मेरे बच्चे! अगर राक्षस ने उस डर को खा लिया तो तुम हमेशा पढ़ाई से डरते रहोगे। जल्दी करो, बहादुर बनो...!" उन्होंने गरजकर कहा। लेकिन छोटू तो आँखें बंद कर लेटा हुआ था। उसके मन में तूफान मचा हुआ था। फेल होने की काली छाया, बोझिल किताबें... सब उसे डरा रहे थे। लेकिन जैसे ही उसने नानी माँ की आवाज़ सुनी वो साहस से चिल्लाया, "ले ले! पढ़ाई का डर तेरा है, मेरा नहीं! ले ले पतंग, मेरा गणित का डर!... अब कभी मेरे पास मत आना।" धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! और विस्फोट हो गया! पढ़ाई के डर का सुनहरा रंग उड़ गया। किताबें नाचने लगीं, कलम गाने लगी! स्याही खुशी से फैल गई। पतंग ने पूरे के पूरे राक्षस को चूस लिया। चीखें गूँजने लगीं, राक्षस सिकुड़ गया और गायब

हो गया! पतंग की डोर छोटू के हाथ से छूटकर दूर आकाश में उड़ गई और साथ ही उड़ गया उसके भीतर का डर।

चमत्कार हो गया! हर पतंग ने अपने बच्चे के डर को रंग बनाकर आसमान में बिखेर दिया। सबके डर 'निगलम पतंग' ने निगल लिए थे। सभी बच्चे एक साथ चिल्लाए, "डर हमसे बड़ा नहीं है!" उनकी पतंगें—लाल, हरी, भूरी, पीली, सुनहरी—आसमान में नाचने लगीं। हर पतंग ने डर के कोहरे का एक हिस्सा निगला, और धीरे-धीरे काला कोहरा पिघलने लगा। धड़ाम! एक आखिरी विस्फोट हुआ, और कोहरा रंगीन बारिश में बदल गया! प्रेम और उत्साह की बूँदें उड़ने लगीं, हवा कविताएँ गाने लगी। बच्चों के डर की पतंगों की डोरें आखिरी बार छूट गईं, और उनके डर आसमान में रंग बनकर बिखर गए। हँसी, गाने, और कहानियाँ चारों तरफ फैल गईं। बच्चे उछल पड़े, "जीत गए! हम जीत गए! डर हार गया!" मोटू ने छोटू को गले लगा लिया। नानी माँ हाथ हिलाते हुए हँसी, "डर को निगल लो, पतंग बनाकर हवा में उड़ा दो! निडर होकर जीवन जीओ मेरे बच्चो...!

जैसे ही काले कोहरे का राक्षस सिकुड़ा, छोटू की पतंग आसमान में एक दिव्य सुनहरी रोशनी के साथ लहराई। छोटू ने देखा कि उसकी पतंग पर उकेरे गए गणित के कठिन सूत्र, संख्याएँ और घटाव-जोड़ के चिह्न अब डरावने साँपों की तरह नहीं, बल्कि नीली-पीली तितलियों की तरह नाच रहे थे। छोटू की आँखों में अब डर का एक कतरा भी नहीं था। उसने अपनी डोर को ढील दी और एक गहरी साँस लेते हुए ज़ोर से मुस्कुराया। गणित और पढ़ाई का वह विशालकाय राक्षस पूरी तरह पिघलकर सुनहरी स्याही की बारिश में बदल गया। छोटू ने अपनी बांहें फैला दीं और उस सुनहरी बारिश की बूँदों को अपने चेहरे पर महसूस किया। उसे पहली बार अहसास हुआ कि गणित कोई कठिन

पहेली या डर का खेल नहीं, बल्कि संख्याओं की एक बहुत ही सुंदर और मज़ेदार कला है।

जीत का उत्सव रात भर चला। ढोल-मजीरे बजते रहे।

अगले दिन शाम होते ही नानी माँ का बगीचा जीवंत फूलों से भर गया

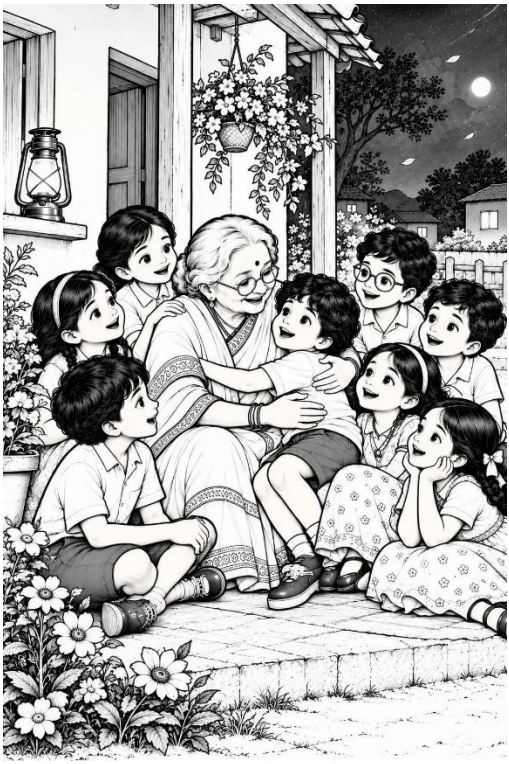

क्योंकि स्कूल से लौटने के बाद सभी बच्चे नानी माँ का धन्यवाद करने उनके घर जो पहुँचे थे। हर फूल अपने डर की कहानी सुना रहा था! कहानियाँ सुनाते-सुनाते सारे फूल नानी माँ से लिपट गए। और सबसे छोटा फूल यानि कि छोटू, गाँव का सबसे बड़ा साहसी हीरो बन गया। और पढ़ाई? वह तो अब सब बच्चों का सबसे प्यारा और रंगीन खेल बन गई थी! और डर? "डर किस बला का नाम है।" बच्चे एक-दूसरे से ठिठोली करते हुए कह रहे थे। छोटू ने नानी के गले में बाँहें डालते हुए पूछा, "नानी माँ आपने सबके मन से डर को कैसे भगाया...?

"डर को साझा करो, साहस से भरो, और पतंग की तरह उड़ो! बस ऐसे... कुछ समझे मेरे राजकुमार...!"

बच्चे नानी माँ को घेर कर बैठे हुए थे कि अचानक तेज हवा चलने लगी और घर के ओसारे में रखा दीपक बुझ गया। चारों तरफ अंधेरा छा गया। वातावरण कुछ डरावना सा हो गया। सायँ-सायँ करती हवा ऐसे लग रही थी जैसे कोई डरावना गीत गा रहा हो।

"यह क्या है... राक्षस की आवाज...?" एक बच्ची डर से काँपकर बोली।

छोटू हँस पड़ा, "यह तो हवा का खेल है, पगली! हम इसे भी हराएँगे!" सारे बच्चे एक साथ चिल्लाए, "हम नहीं डरते! हम डर से बड़े हैं!"

"मैं भी तो डरने का नाटक कर रही थी...पागल हाहाहाहाहा" रानी हँसते हुए बोली।

और फिर नानी माँ की झोंपड़ी में देर तक बच्चों की सुरीली हँसी गूँजती रही।

□

गोलू और गिनतियों का पहाड़

सुबह का समय था। सूरज की सुनहरी किरणें खिड़की से झाँक रही थीं। ना जाने किसको ढूँढ रही थीं। रसोई में गोलू की माँ लता नाश्ता बनाने में व्यस्त थी। मेज़ पर दूध का गिलास और फलों का टोकरा उन्होंने पहले ही रख दिया था। पास ही ज़मीन पर बिछे ख़ूबसूरत कालीन पर पाँच साल का गोलू सिर झुकाए बैठा था। उसके बिल्कुल सामने एक खुली हुई किताब रखी थी और पीछे से माँ की आवाज़ लगातार गूँज रही थी, "चलो गोलू, आज हम फिर से गिनती सीखते हैं। एक... दो... तीन...एक... दो... तीन..." परंतु गोलू की नज़रें



किताब पर नहीं बल्कि खिड़की के बाहर उड़ती चिड़िया पर थीं। सूरज की सुनहरी किरणें उसे रह-रह कर बुला रही थीं। उसका छोटा सा मन अभी गिनतियों के अमूर्त संसार में भटकना नहीं चाहता था। वह सिर्फ रंगों, आवाज़ों और उड़ते पंखों में खोया था।

"गोलू! ध्यान दो!" माँ की आवाज़ थोड़ी तेज हुई। "एक... दो... बोलो!"

गोलू ने उदास चेहरा बनाया, "मम्मा, मुझे नहीं समझ आती।"

"क्यों नहीं आती? कितनी बार सिखाया है। यह देखो, एक! उंगली रखो इस पर।" माँ ने गोलू की छोटी सी उंगली पकड़कर किताब पर झटके से रखी। गोलू ने उंगली हटाई और खीझकर बोला, "नहीं!"

लता को गुस्सा आने लगा। उसका सब्र जवाब दे रहा था। "देखो गोलू, अगर तुम नहीं सीखोगे तो स्कूल में पीछे रह जाओगे! सारे बच्चे सीख रहे हैं, तुम क्यों नहीं सीख पा रहे? बस बहुत हो गया। तुम्हारा रोज़ का यही रोना है। पढ़ाई के नाम पर रोने लग जाना। यह गिनती है कोई पहाड़ नहीं जिसे तुम चढ़ नहीं सकते..." उसकी आवाज़ में खीझ और झुंझलाहट थी। गोलू ने होंठ भींच लिए और उसकी आँखों में आँसू भरने लगे। उसे लगा मैं खराब बच्चा हूँ।

दोपहर हो चुकी थी लेकिन गिनती अभी तक नहीं हुई थी। गोलू अपने खिलौनों के बीच उदास बैठा था। उसने अपनी पसंदीदा गाड़ी भी नहीं उठाई। आज उसका खेलने का बिल्कुल मन नहीं हुआ। पड़ोस में रहने वाला उसका दोस्त स्वनि उससे मिलने आया तो भी वह मुँह फुलाकर बैठा रहा। खाना भी उसने अनमने मन से खाया और बिना हाथ धोए ही अपने पलंग पर जाकर सो गया।

शाम को गोलू के पापा ऑफिस से घर आए तो लता ने उनके लिए चाय बनाई। चाय का पहला घूँट भरते ही गोलू के पापा ने गुस्से से कहा, "यह कैसी चाय बनाई है तुमने...? क्या अभी तक तुम्हें चाय बनानी नहीं आई...? कितनी बार कहा है कि चाय में चीनी कम डाला करो..." गोलू के पापा बोलते जा रहे थे और लता का चेहरा रुआँसा होता जा रहा था।

"जी मैं दोबारा बना देती हूँ। उसने उदास सी आवाज़ में कहा।" इस बार लता ने ध्यान से चाय बनाई तो गोलू के पापा खुश हो गए और बोले, "बुरा मत मानना लता, थका हुआ था तो गुस्से में कह दिया।"

"जी कोई बात नहीं आप ऑफिस से थके हुए आए हैं, गलती मेरी थी। मैं आइंदा ध्यान रखूंगी।" कहकर वह गोलू के कमरे की ओर चली गई।

गोलू अभी भी सो रहा था। लता को एहसास हुआ कि उसकी डाँट ने गोलू को दुखी कर दिया है वरना इतनी देर तक वह कभी नहीं सोता जबकि उसको मालूम है यह पापा के आने का वक्त है। वह चुपचाप गोलू के पास गई, उसके माथे को प्यार से सहलाया और बेहद प्यार से बोली, "गोलू बेटा, क्या हुआ? मम्मा ने डाँटा, इसलिए बुरा लगा...है ना...?"

गोलू ने धीरे से सिर हिलाया। "मम्मा, मुझे गिनती समझ नहीं आती। मैं अच्छा बच्चा नहीं हूँ।"

लता का दिल भर आया। उसने समझा कि बच्चे के मन पर उसकी डाँट का बुरा असर हुआ है। "नहीं बेटा! तुम सबसे अच्छे बच्चे हो। बस तुम्हें गिनती सिखाने का मेरा तरीका गलत था।"

"हर बच्चा अलग होता है और हर बच्चे को सीखने का अपना समय और अपना तरीका चाहिए होता है।" लता ने सोचा और शाम को ही उसने एक नई तरकीब सोची। गोलू को खेलना बहुत पसंद था। लता ने फ्रिज से कुछ सेब निकाले और गोलू से बोली, "गोलू, आज हम सेबों से गिनती सीखेंगे। यह देखो, कितने सेब हैं?"

गोलू ने उत्सुकता से देखा। "एक... दो... तीन..." वह गिनने लगा।

लता मुस्कुराई, "वाह! तुम तो सीख रहे हो!" फिर लता ने मेज की दराज से कुछ कंचे निकाले और बड़ी कोमलता से बोली, "चलो, अब इन कंचों को गिनो।" गोलू ने मज़े से कंचे गिने। "एक... दो... तीन... चार... पाँच!"

"चलो अब ऊपर के कमरे में चलते हैं।" लता ने कहा तो दोनों सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। गोलू फटाफट सीढ़ियाँ चढ़ता जा रहा था और साथ-साथ बोलता भी जा रहा था, "छः...सात...आठ...नौ...दस..." "शाबाश बेटा तुम तो बहुत होशियार हो।" लता ने कहा तो गोलू की आँखों में चमक आ गई। उसे अब सब समझ आ रहा था। लता ने देखा कि जब गिनती किताब से निकलकर उसके सामने की वस्तुओं में आई तो गोलू के लिए वह जीवंत हो उठी।



लता का यह तरीका कामयाब हो चुका था। अगले कुछ दिनों तक लता ने इसी तरह से गोलू को गिनती सिखाई। कभी वे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए गिनते, "एक सीढ़ी, दो सीढ़ी..." कभी वे खिलौनों को गिनते, कभी खाने की चीज़ों को। लता ने गोलू के लिए छोटी-छोटी गिनती की कविता भी बनाई...

एक है सूरज आसमान में,
दो आँखें चेहरे की शान में।
तीन तितलियाँ हैं फूलों पर,
चार स्कूटर दौड़े घर-घर।

रंग-बिरंगे पाँच गुब्बारे
छः खिलौने प्यारे-प्यारे।
सात सितारे चम-चम करते,
आठ कबूतर मिलकर उड़ते।

नौ पेड़ों पर पत्ते आए,
दस चिड़ियों ने गीत सुनाए।
एक, दो, तीन, चार
गिनती सीखो बार-बार।

गोलू ने बड़े उत्साह से कविता को गाया। पहली पंक्ति लता बोलती और दूसरी गोलू। साथ-साथ गाने से कविता गोलू को रट गई और साथ ही गिनती भी।

एक शाम जब सब डाइनिंग टेबल पर खाना खाने बैठे तो लता ने पूछा, "गोलू, तुम्हें पता है तुम्हारे पापा कितनी रोटी खाते हैं...?" गोलू ने अपने पापा की प्लेट देखी और हँसते हुए बोला, "तीन...!"

पापा ने ताली बजाई तो गोलू खुश हो गया। "गोलू आँख बंद करो, देखो पापा तुम्हारे लिए क्या लाए हैं...!" कहते हुए गोलू के पापा ने उसके हाथ पर कुछ टॉफियाँ रख दीं।

"अब आँखें खोलो!"

गोलू ने आँखें खोलीं तो टॉफियाँ देखकर चहक उठा। "एक... दो... तीन...दस" वाह हमारे गोलू को तो दस तक गिनती आ गई। हमारा गोलू तो बहुत होशियार है। मम्मी-पापा ने ताली बजाई तो गोलू खुश होकर उनके गले लग गया।

धीरे-धीरे, गोलू को गिनती आसान लगने लगी। अब वह चिड़ियों को भी गिन सकता था। अपनी उंगलियों पर भी गिनती गिन सकता था। एक दिन जब स्कूल में उसकी अध्यापिका ने कहा, "गोलू, बीस तक गिनती सुनाओ" तो गोलू ने बिना किसी हिचकिचाहट के बीस तक पूरी गिनती सुना दी। अध्यापिका तो हैरान रह गई। अध्यापिका ने गोलू की बहुत तारीफ़ की। कक्षा में भी सब बच्चों ने ताली बजाई। स्कूल की छुट्टी के बाद गोलू घर आया तो उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। "मम्मा! टीचर ने मुझे 'गुड' दिया! मुझे गिनती आती है!"

लता ने गोलू को गले से लगा लिया। उसे समझ आ गया था कि बच्चे को डाँटने से नहीं बल्कि उसके मन को समझकर पढ़ाना चाहिए। गोलू ने तो गिनती सीखी ही परंतु लता ने भी धैर्य, समझ और प्यार का एक महत्वपूर्ण पाठ सीखा।

□

जादुई पत्थर का आकाश

सूर्य से तपते रेगिस्तान में एक छोटा सा गाँव था... मरु जो अपनी पानी की कमी के लिए जाना जाता था। चारों तरफ दूर-दूर तक फैला रेतीला समंदर और रेत के ऊँचे-ऊँचे उबड़-खाबड़ टीले थे जो तेज हवाओं के साथ रातों-रात अपनी जगह बदल लेते थे। दोपहर के समय जब सूरज ठीक सिर पर होता तो ऐसा लगता था मानो आसमान से आग बरस रही हो। हवा इतनी गर्म होती कि साँस लेना भी दूभर हो जाता।

गाँव के घर मिट्टी और फूस के बने हुए थे जिनकी दीवारें मोटी थीं ताकि बाहर की झुलसा देने वाली गर्मी घर के अंदर अपनी बाँहें न पसार सके। दिन के समय पूरा गाँव थम सा जाता था क्योंकि जहाँ एक ओर लोग अपने-अपने घरों की छाँव में दुबके रहते वहीं ऊँट और बकरियाँ खेजड़ी के सूखे पेड़ों के नीचे हाँफते हुए वक्त बिताते थे। ...लेकिन जैसे ही शाम ढलती और रेत अपनी गर्मी छोड़ती, गाँव में नया जीवन लौट आता। चौपाल पर हुक्के की गुड़गुड़ाहट के साथ बुजुर्ग बैठते और आसमान में चमकते तारों के नीचे पानी के आने वाले अच्छे दिनों की कहानियाँ सुनी और सुनाई जातीं।

मरु गाँव में पानी केवल एक ज़रूरत नहीं बल्कि ज़िंदगी का सबसे बड़ा संघर्ष था। गाँव की औरतें सूरज उगने से पहले ही अपने सिर पर मिट्टी के तीन-तीन घड़े रखकर निकल पड़ती थीं। मीलों दूर रेत के तपते रास्तों पर चलने के बाद उन्हें एक सूखा सा कुआँ मिलता था जिसके तल में रिसते हुए मटमैले पानी की एक-एक बूँद को वे घंटों इंतज़ार करके इकट्ठा करती थीं। यहाँ पानी भले ही कम था लेकिन लोगों की आँखों का पानी और दिलों का अपनापन कम नहीं हुआ था क्योंकि इस गाँव में मेहमान का स्वागत खाने से

नहीं बल्कि पानी के एक छोटे से प्याले से किया जाता था जो वहाँ के लोगों की सबसे बड़ी उदारता थी।

मरु गाँव के लोगों का हौसला इस बंजर ज़मीन से भी ज्यादा मजबूत था। हर साल जब मानसून के बादल इस बदनसीब गाँव को छूकर बिना बरसे आगे निकल जाते तो लोग निराश होने के बजाय अगले साल की उम्मीद में नए "टाँके" खोदने में जुट जाते। उन्हें विश्वास था कि एक दिन इस तपती रेत की छाती चीरकर पानी की कोई ऐसी धार जरूर फूटेगी जो मरु के भाग्य को हमेशा के लिए बदल देगी।

इसी गाँव में आकाश नाम का नौजवान रहता था। आकाश बहुत ही ईमानदार और दयालु था। उसके पास एक छोटा सा खेत था जिसे वह बड़ी मुश्किल से सींच पाता था। आकाश सिर्फ अपने खेत की ही फिक्र नहीं करता था बल्कि अपनी पीठ पर पानी का मटका लादकर जब वह लौटता तो अगर रास्ते में उसे कोई थका-हारा बुजुर्ग या प्यासा जानवर दिख जाता तो वह बेझिझक अपना आधा पानी उन्हें पिला देता था। लोग अक्सर उसे टोकते,



"आकाश, इस रेगिस्तान में इतना सीधा मत बन, पानी लुटाएगा तो खुद क्या

पिएगा?" परंतु आकाश हँसकर बस एक ही बात कहता, "काका, इंसान का दिल अगर सूख गया तो यह पूरी धरती ही रेगिस्तान बन जाएगी। पानी आज नहीं तो कल बरस ही जाएगा।"

एक दिन जब आकाश अपने सूखे, तपते खेत में कड़ी मेहनत कर रहा था तो उसकी कुदाल एक ऐसी चीज़ से टकरा गई जो मिट्टी में दबी हुई थी। उसने उत्सुकता से मिट्टी हटाई और वहाँ से एक चमकीला लाल पत्थर बाहर निकाला। वह पत्थर इतना आकर्षक था कि सूरज की रोशनी में हीरे की भाँति ऐसे जगमगा रहा था जैसे उसके अंदर कोई छोटी-सी आग जल रही हो। आकाश ने उसे एक साधारण परंतु सुंदर चीज़ मानकर अपनी पुरानी अनाज की कोठरी के कोने में रख दिया और काम पर लौट गया।

शाम को थका-हारा जब वह घर लौटा तो उसकी नज़र पिछले कमरे की कोठरी पर पड़ी। वह ठिठक गया। सुबह उसने खाने लायक़ बस मुट्ठी भर अनाज ही रखा था और अब कोठरी छलकाव के कगार पर थी! कोठरी की टूटी-फूटी दीवारों को धकेलता अनाज का ढेर कई गुना बढ़ गया था।

ढेर सारे अनाज को देखकर आकाश को पहले तो अपनी आँखों पर



विश्वास ही नहीं हुआ। उसने पास जाकर अनाज को हाथ से छुआ। आह! यह वही ताजा अनाज था जिसके सपने वह हमेशा देखा

करता था। उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। "यह कैसे हो सकता है?" वह बड़बड़ाया। "मेरे पास तो बहुत कम अनाज था! क्या कोई पड़ोसी रख गया...? नहीं, मेरे घर में कोई आया ही नहीं।" वह संदेह करे भी तो किस पर? वह घंटों तक अपनी लकड़ी की पुरानी कोठरी के पास बैठा रहा। उसका साधारण जीवन अचानक एक बड़े रहस्य से भर गया था। अनाज की इस वृद्धि के पीछे कोई तर्क, कोई कारण उसे समझ नहीं आ रहा था। यही सोचते-सोचते रात तो बीत गई लेकिन बात नहीं बीती। यह अद्‌भुत बात उसके दिमाग से निकल ही नहीं रही थी। उसकी नींद उड़ गई। खुशी तो थी लेकिन मन का चैन छिन गया था। हर समय दिमाग में एक उधेड़बुन होती रहती। उसने फैसला किया कि अगली सुबह वह इस रहस्य का पता लगाकर ही रहेगा।

रात भर आँखें मूँदकर भी आकाश सो नहीं पाया था। सुबह होते ही, अनाज के रहस्य को सुलझाने की बेचैनी उसके मन में करवटें ले रही थी। एक गहरा विचार उसके दिमाग में आया कि अगर इस पत्थर ने सूखी चीज़ यानि अनाज को बढ़ाया तो क्या वह गीली चीज़ जैसे पानी के साथ भी ऐसा कर सकता है? कुछ सोचते हुए उसने सावधानी से उस चमकदार लाल पत्थर को उठाया और उसे घर के एक बड़े खाली पड़े मिट्टी के घड़े में रख दिया। उसने घड़े में बस थोड़ा सा पानी भरा... इतना कि पत्थर उसमें अच्छी तरह से डूब जाए। आज उसने अपने खेत का काम छोड़ दिया क्योंकि वह इस अजीब रहस्य को अपनी आँखों से देखना चाहता था।

सारा दिन, आकाश अपने रोज़मर्रा के काम निपटाता रहा लेकिन उसका ध्यान बार-बार घड़े की तरफ ही जा रहा था। उसने गायों को चारा दिया, बड़े जतन से दूध दूहा, कपड़े धोए, चूल्हा जलाने के लिए सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा कीं और घर का कच्चा आँगन गोबर से लीपा। हर काम के बाद वह घड़े के पास जाता, झुककर देखता परंतु पानी का स्तर हर बार बिल्कुल वैसा ही

मिलता। शाम होते-होते वह थककर चूर हो चुका था। उसने हार मानते हुए अपना खाना बनाया और यह सोचकर सो गया कि शायद वह पत्थर बस अनाज के लिए ही जादुई था।

मगर अगली सुबह, एक ठंडी लहर महसूस करते हुए जब वह उठा तो उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं। घड़ा अब पूरी तरह लबालब भरा हुआ था! रात भर में पानी इतना बढ़ गया था कि वह ऊपर से छलककर ज़मीन पर बह रहा था जिससे पास की सारी ज़मीन गीली हो गई थी।

पानी को यूँ बहते देख आकाश के चेहरे पर एक चमकीली मुस्कान आ गई। अब कोई संदेह नहीं बचा था। यह पत्थर सचमुच कोई साधारण पत्थर नहीं बल्कि एक जादुई पत्थर था जिसके पास चीज़ों को कई गुना बढ़ाने की अद्‌भुत शक्ति थी। उसकी गरीबी के दिन अब शायद खत्म हो गए थे। लेकिन उस जादुई पत्थर से उसने अभी तक अपने लिए कुछ माँगा नहीं था। खुद गरीब होते हुए भी सबसे पहले उसके दिमाग में यही विचार आया कि वह इस शक्ति का उपयोग अपने गाँव के लिए कैसे कर सकता है! उसने सोचा कि यह शक्ति सिर्फ मेरी नहीं है। बरसों से मेरा गाँव सूखे की मार से जूझ रहा है। यह पत्थर हमारे लिए वरदान बन सकता है! यह सब सोचते ही उसकी आँखों में एक नई चमक आ गई। यह दौलत की नहीं बल्कि सेवा की भावना की चमक थी।

बिना एक पल गँवाए वह पत्थर को एक साफ़ कपड़े में लपेटकर सीधे गाँव के मुखिया के घर की ओर भागा। मुखिया, जो खुद गाँव की पानी की समस्या से बहुत चिंतित रहते थे, आकाश की घबराहट और उत्साह को देखकर चौंक गए। आकाश ने मुखिया को सारा किस्सा सुनाया। खेत में पत्थर मिलने से लेकर अनाज और पानी बढ़ने तक का चमत्कार। मुखिया ने पहले

तो अविश्वास भरी नज़रों से पत्थर को देखा लेकिन आकाश की ईमानदारी और आँखों में दिख रहे सच्चे भाव ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया।

मुखिया को हैरानी तो बहुत हो रही थी लेकिन फिर भी उन्होंने हिम्मत करके आकाश पर भरोसा कर लिया। फिर क्या था, उन्होंने तुरंत गाँव के लगभग सूख चुके एक कुएँ पर भीड़ जमा करवाई। आकाश के मार्गदर्शन में उन्होंने जादुई लाल पत्थर को एक बड़े बर्तन में रखा और उसमें कुएँ का थोड़ा सा पानी भरा। चमत्कार देखने के लिए सभी गाँव वाले अपनी साँसें थामे खड़े थे। और फिर, ठीक वैसा ही हुआ जैसा आकाश ने बताया था! कुछ ही घंटों में, कुएँ से निकाला गया वह थोड़ा सा पानी बर्तन से छलकने लगा और तब तक छलकता रहा जब तक कि कुआँ पूरी तरह भर नहीं गया।

एक-एक करके, गाँव के सभी सूखे कुएँ फिर से ठंडे-मीठे पानी से भर गए। वह रेगिस्तानी गाँव मरु, जो हमेशा प्यासा रहता था, अब खुशहाली से लहरा उठा था। किसान खुश थे, बच्चे पानी में खेल रहे थे और आकाश के लिए हर तरफ धन्यवाद के स्वर गूँज रहे थे। आकाश की निस्वार्थ दयालुता ने सचमुच उनके गाँव की किस्मत बदल दी थी। मुखिया जी ने वह पत्थर आकाश को सँभाल कर रखने के लिए दे दिया।

गाँव में चारों ओर खुशहाली फैल चुकी थी। आकाश की ईमानदारी के चर्चे हर ज़ुबान पर थे। लेकिन हर अच्छी चीज़ पर किसी न किसी की बुरी नज़र पड़ ही जाती है। गाँव के पास के शहर में एक लालची व्यापारी रहता था जिसका नाम धनराज था। धनराज ने जैसे ही जादुई पत्थर की कहानी सुनी कि कैसे वह थोड़ी सी चीज़ को कई गुना बढ़ा देता है तो उसके मुँह में पानी आ गया। अब वह लोभी व्यापारी किसी भी तरह उस पत्थर को चुराना चाहता था ताकि वह अकेले ही उसका लाभ उठा सके।

धनराज ने सोचा कि अनाज और पानी क्या? अगर यह पत्थर मेरे सोने और चाँदी के साथ हो तो मैं तो दुनिया का सबसे अमीर आदमी बन जाऊँगा! इस भोले-भाले किसान आकाश को पत्थर की असली क़ीमत नहीं पता। उसकी लालच की आग इतनी तेज थी कि उसने तुरंत वह पत्थर चुराने का फ़ैसला कर लिया ताकि वह अकेले उसका लाभ उठा सके।

एक रात, जब गाँव गहरी नींद में था और चाँद बादलों में छिप रहा था, धनराज चुपके से एक चोर की तरह आकाश के घर में घुसा। आकाश ज़मीन पर बिछी एक साधारण चटाई पर गहरी नींद में सो रहा था। व्यापारी ने दबे पाँव घर के अंदर घुसकर संदूक से लाल पत्थर उठा लिया। वह पत्थर पाकर इतना खुश हुआ कि उसकी साँसें तेज हो गईं। उसने तुरंत पत्थर को अपनी थैली में डाला और यह सोचते हुए वहाँ से भागा कि अब उसकी किस्मत बदल गई है।

अगले दिन, धनराज ने पूजा पाठ करने के उपरांत तुरंत अपनी तिजोरी खोली। वह दुनिया का सबसे अमीर आदमी बनने के सपने देख रहा था। उसने अपनी तिजोरी में रखे सारे सोने और चाँदी के सिक्के निकाले और गर्व से उस जादुई लाल पत्थर को उनके बीच में रख दिया। फिर उसने ईश्वर का नाम लेकर बहुत ध्यान से तिजोरी बंद की और करोड़ों-अरबों की दौलत देखने का इंतज़ार करने लगा।

अगली सुबह धनराज बड़ी बेसब्री से उठा। उसके दिल में एक करोड़पति बनने की उम्मीद और खुशी भरी थी। उसने जल्दी से अपनी बड़ी, लोहे की तिजोरी खोली। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र अंदर पड़ी, उसके चेहरे का रंग उड़ गया और आँखें डर से फैल गईं। तिजोरी में रखे हुए सारे सोने और चाँदी के सिक्के जो कल रात चमक रहे थे, अब पत्थर बन चुके थे! सोने

की चमक गायब थी और चाँदी की सफेदी खत्म। हर सिक्का, हर मोहर, यहाँ तक कि छोटे से छोटे जेवर भी, कंकड़-पत्थर में बदल गए थे!

धनराज को विश्वास ही नहीं हुआ। उसने काँपते हाथों से एक पत्थर का

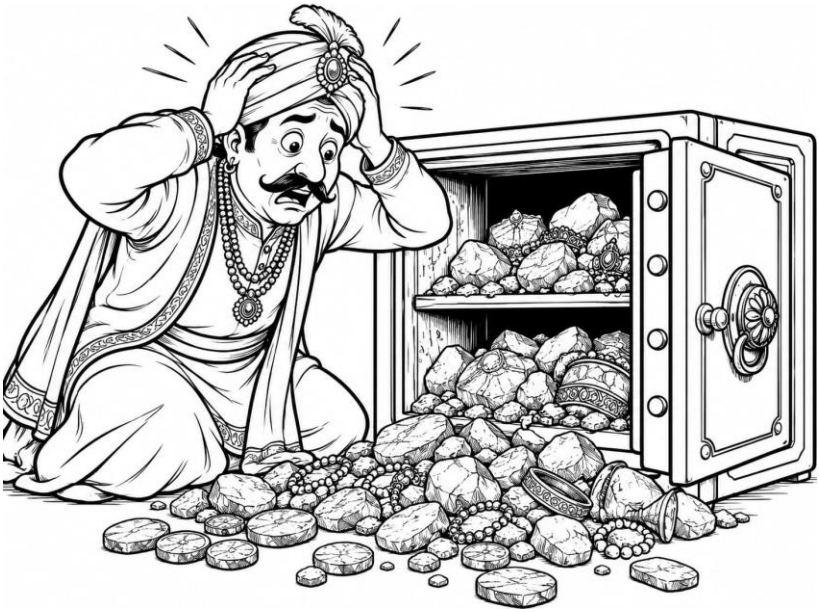

टुकड़ा उठाया। यह उसके दिल की तरह ही भारी था, ठंडा था और किसी काम का नहीं था। पत्थर ने चीज़ों को बढ़ाया तो था लेकिन लोभ को नहीं। जादुई पत्थर ने शायद यह पहचान लिया था कि वह गलत हाथों में है और उसका उपयोग केवल स्वार्थ के लिए किया जा रहा है इसलिए उसने जादू को उल्टा कर दिया था।

व्यापारी को अपनी गलती का अहसास हुआ। वह समझ गया कि जादुई पत्थर का आकाश क्या है। वह यह भी समझ गया कि यह पत्थर केवल निस्वार्थता और दयालुता के साथ ही काम करता है। इसके अलावा उसे यह

भी डर था कि इससे उसका कोई और नुकसान न हो जाए। इसलिए उसने तुरंत उस पत्थर को वापस लौटाने का फैसला कर लिया।

वह शर्मिंदा और उदास होकर उस जादुई पत्थर को लेकर वापस गाँव भागा। उसने सीधे आकाश के पास जाकर पत्थर उसे लौटा दिया और अपने लालच भरे काम के लिए माफ़ी माँगी। आकाश ने उसकी तरफ़ शाँत और दयालुता भरी नज़रों से देखा। एक सच्चा और नेक इंसान होने के कारण, आकाश ने उसे माफ कर दिया और कहा कि लालच एक ऐसी आग है जो इंसान को अंदर से जला देती है।



लोभी धनराज को माफ करने के बाद आकाश ने यह बात गहराई से महसूस की कि एक साधारण व्यक्ति के लिए इस जादुई पत्थर को अपने पास रखना सही नहीं है। यह शक्ति इतनी बड़ी थी कि किसी के भी मन में लालच पैदा कर सकती थी, जैसा कि व्यापारी के साथ हुआ। आकाश ने ठान लिया कि इस पत्थर का उपयोग किसी एक व्यक्ति के स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि पूरे गाँव की भलाई के लिए होना चाहिए।

उसने गाँव के मुखिया और सभी बुजुर्गों के साथ बैठक की। सबके सामने, आकाश ने वह चमकीला लाल पत्थर गाँव के बीच बने मंदिर में रखने

का प्रस्ताव दिया। गाँव वाले समझदार थे इसलिए उन्होंने आकाश का यह प्रस्ताव सम्मान के साथ सहर्ष मान लिया कि जब भी गाँव में कोई बड़ी ज़रूरत होगी या कोई आपदा आएगी तभी वे सब मिलकर उस पत्थर का उपयोग करेंगे। जादुई पत्थर मिल जाने की वजह से काम से जी नहीं चुराएंगे और अपनी दिनचर्या जारी रखेंगे। उस दिन से, वह जादुई पत्थर मंदिर में स्थापित कर दिया गया।

इस तरह, वह जादुई पत्थर गाँव के लिए आशा, निस्वार्थ सेवा और ईमानदारी का एक अमर प्रतीक बन गया। यह पत्थर अब सिर्फ जादू का ज़रिया नहीं था बल्कि यह उन्हें हर दिन आकाश की ईमानदारी और दयालुता की भी याद दिलाता था। गाँव वाले उस पत्थर को ईश्वर का दिया हुआ वरदान मानकर उसकी पूजा करने लगे, अपनी मन माँगी मुरादें पाने लगे पर साथ ही यह भी अच्छी तरह समझ गए थे कि लालच का फल हमेशा बुरा होता है।

□

परी और उसका जादुई बस्ता

एक छोटे और प्यारे से गाँव में परी नाम की एक बच्ची रहती थी। बच्ची आठ बरस की थी और उसका स्वभाव भी अपने नाम की तरह ही कोमल और शाँत था। जहाँ उसके हमउम्र बच्चे शोर-शराबे के साथ गलियों में भाग-दौड़ मचाते, शरारतों में उलझे रहते, वहीं परी को एकाँत प्यारा था। वह अक्सर घर के भीतर अपनी किताबों के पन्नों में किसी अज्ञात दुनिया की सैर कर रही होती या फिर अपने छोटे से बगीचे में झुककर, अकेले में पौधों से फुसफुसाकर बातें करती। परी की दुनिया किताबों और पेड़-पौधों की हरी-भरी खामोशी तक ही सिमटी हुई थी जहाँ वह सबसे अधिक खुश रहती थी।

परी के माता-पिता, उसे लेकर अक्सर चिंतित रहते थे और खासकर उसकी माँ । वे उसे इतना शाँत और गुमसुम देखते तो उनका मातृ-हृदय तड़प उठता। उन्हें लगता था कि परी शायद खुश नहीं रहती है या किसी अज्ञात डर



के कारण दूसरे बच्चों के साथ घुलती-मिलती नहीं है। उन्हें यह बात ही असहनीय लगती थी कि उनकी प्यारी-सी परी, जीवन के खेल और मस्ती से वंचित रह जाए। वे चाहते थे कि परी भी खुले आसमान के नीचे दौड़े, हँसे, गाए और भोली शरारतें करे जैसा कि उसके हमउम्र बच्चे करते हैं।

उन्होंने परी को बदलने की बहुत कोशिशें कीं। कई बार उसे जबरदस्ती पार्क में ले गए जहाँ बच्चों की किलकारियाँ गूँजती थीं। कई बार पड़ोस के बच्चों के साथ खेलने को कहा परंतु परी हमेशा कोई न कोई नया बहाना बना देती। कभी कहती "आज पौधों को पानी देना है" तो कभी कहती "किताब में जादुई परियाँ उड़ने वाली हैं" और चुपचाप एकांत में लौट जाती। माता-पिता को समझ ही नहीं आता था कि उस छोटी सी शाँत दुनिया से उसे बाहर कैसे निकालें क्योंकि वे जानते थे कि जोर-जबर्दस्ती से तो कोमल मन और भी अंतर्मुखी हो सकता है।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गए। माता-पिता भरसक कोशिश करते रहे लेकिन कोई सही परिणाम नहीं निकला।

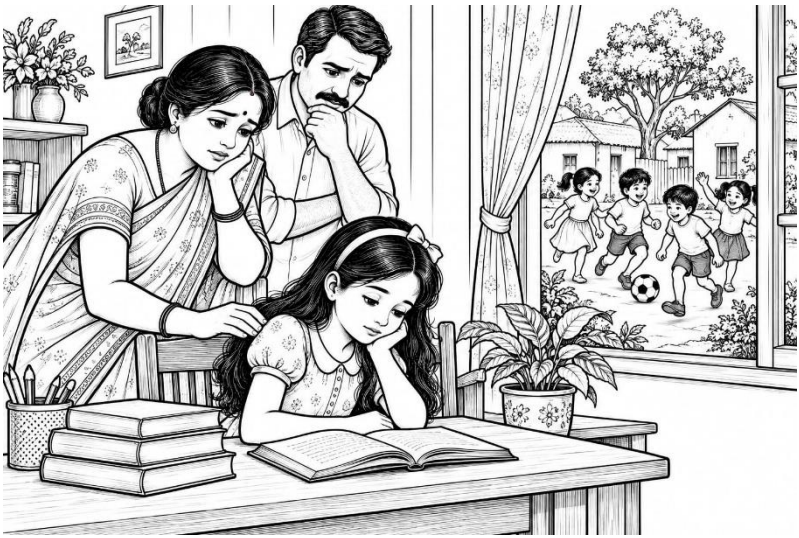

एक दिन गाँव में उत्साह की एक नई लहर आई। गाँव के स्कूल में किसी समाजसेवी संस्था की तरफ से कुछ समय के लिए राहुल सर नाम के एक नए खेल शिक्षक आए थे। राहुल सर, जिनके चेहरे पर हमेशा एक शरारती मुस्कान रहती थी, बच्चों के साथ घुलने-मिलने का एक अनूठा और प्यारा तरीका जानते थे। उन्होंने महसूस किया कि बच्चे अक्सर अपनी निजी दुनिया में सिमटे रहते हैं और मन की बातें साझा करने से हिचकिचाते हैं।

उन्होंने स्कूल के मैदान में आकर एक बड़ी-सी घोषणा की, "बच्चो! क्या तुम जादू में विश्वास करते हो? बोलो बच्चो, करते हो...?"

"हाँ मास्टर जी करते हैं..."

"ठीक है, फिर मैं तुम्हें एक-एक 'जादुई बस्ता' दूँगा!"

यह सुनकर बच्चों की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं।

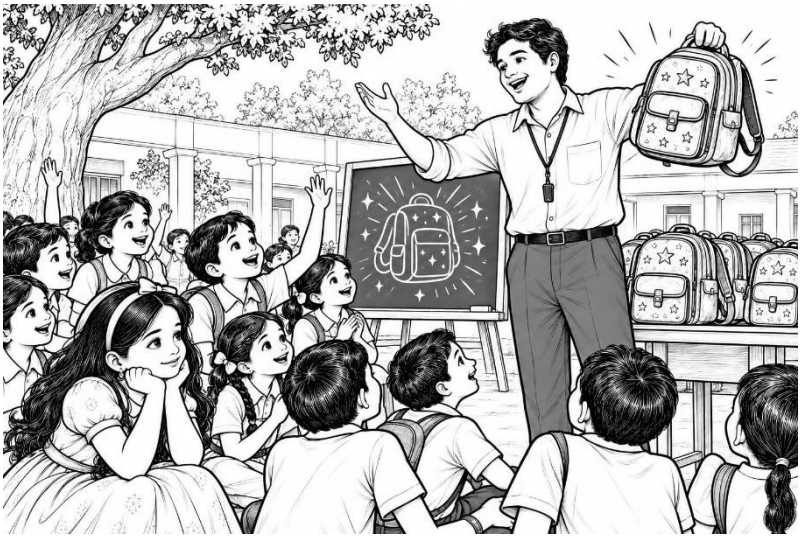

"इन बस्तों में तुम्हारी मनपसंद चीज़ें होंगी...तुम्हारे सपने, तुम्हारे प्यारे खिलौने, तुम्हारी रहस्यमयी किताबें और बहुत कुछ!" लेकिन उन्होंने तुरंत एक शर्त भी जोड़ दी जिसने सबकी उत्सुकता और बढ़ा दी। उन्होंने बताया कि इस बस्ते का जादू तभी काम करेगा जब बच्चे उनका एक नियम मानेंगे। नियम यह था कि बच्चे एक बार में केवल एक चीज़ ही बाहर निकाल सकते हैं। और उसे बाहर निकालने के बाद उनको उसे दूसरों के साथ साझा भी करना होगा। यदि वे साझा नहीं करेंगे तो बस्ता अपना जादू खो देगा। इसीलिए नियम का पालन करना अति आवश्यक है। उसके बाद वे बच्चों की कौतूहल से भरी आँखों को ढेर सारी और बातें बताते रहे जिन्हें सुन-सुनकर बच्चों की आँखें और फैलती रहीं।

राहुल सर की जादूभरी बातें सुनकर बच्चे खुशी और उत्सुकता से उछल पड़े। सब सोचने लगे कि उनके जादुई बस्ते में क्या-क्या होगा...! इस घोषणा ने न केवल बच्चों में रोमाँच भर दिया था बल्कि शाँत बैठी परी के मन में भी हलचल मचा दी थी। एक सामाजिक गतिविधि के प्रति पहली बार किसी ने छोटी-सी जिज्ञासा परी के मन में जगाई थी।

राहुल सर ने सभी बच्चों को बस्ते दिए जिन में तरह-तरह का सामान भरा हुआ था। परी को भी एक मखमली कपड़े का बना जादुई बस्ता मिला। उसने उस बस्ते को छूकर देखा। उसके एकाकी हृदय में पहली बार किसी चीज़ को लेकर एक रोमांच जागा। उसने धीरे से बस्ते का ज़िप खोला और अंदर झाँका। उसमें वे सारी चीज़ें थीं जो उसकी एकांत दुनिया का हिस्सा थीं। एक तरफ़ रंग-बिरंगी पुरानी कहानियों की किताबें थीं और दूसरी तरफ़ एक छोटा-सा पीतल का दूरबीन जिसे लेकर वह अक्सर छत पर जाकर दूर के पहाड़ों को निहारा करती थी। मानो वह दुनिया को एक सुरक्षित दूरी से देख रही हो।

परी सोचने लगी कि वह क्या निकाले। उसका मन तो सबसे पहले अपनी प्रिय किताबों को छूना चाहता था परन्तु उसे तुरंत यह एहसास हुआ कि भाग-दौड़ मचाने वाले बच्चों को शायद किताबों में उतना मज़ा न आए। वे उबाऊ महसूस कर सकते हैं। "ओह! उसने ऐसा सोचा...!" उसे इस बात पर भी हैरानी हुई। तभी उसकी नज़र दूरबीन पर पड़ी। उसने सोचा, दूरबीन सबको कुछ नया दिखाएगी। यह विचार उसके मस्तिष्क में सामाजिक बुद्धिमत्ता का पहला बीज था। परी ने हिम्मत करके दूरबीन निकालने का फैसला कर ही लिया।

स्कूल का मैदान गहमागहमी से भरा था। सभी बच्चे अपने-अपने जादुई बस्तों में से खिलौने, गेंदें, किताबें और कुछ अनोखी चीज़ें निकालकर खुशी-खुशी खेल रहे थे। परी अपनी पीतल की दूरबीन लिए हमेशा की तरह एक अलग कोने में खड़ी थी। वह दूरबीन को हाथ में कसकर पकड़े हुए थी पर उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि साझा करने की शुरुआत कैसे की जाए। उसका शाँत स्वभाव उसे बच्चों के झुंड के पास जाने से रोक रहा था।

राहुल सर, जिनकी आँखें बच्चों के व्यवहार को पढ़ने में माहिर थीं ने देखा कि परी अकेली खड़ी है। वह धीरे से, बिना कोई अनावश्यक शोर किए, परी के पास आए। उनके चेहरे पर हमेशा की तरह गर्मजोशी भरी हुई थी।

"परी," राहुल सर ने ज़मीन पर बैठते हुए उसके बराबर आने की कोशिश करते हुए प्यार से पूछा, "क्या तुम मुझे दिखाओगी कि तुम अपनी दूरबीन से क्या देखना चाहती हो? क्या तुम्हारी दूरबीन सचमुच जादू करती भी है या नहीं...?"

राहुल सर की प्यार भरी आँखों में देखकर परी ने झिझकते हुए अपनी दूरबीन उनके हाथ में थमा दी। यह पहली बार था जब उसने अपनी एकांत भरी दुनिया की कोई चीज़ किसी बाहरी व्यक्ति को सौंपी थी।

राहुल सर ने दूरबीन अपनी आँखों से लगाई। उनका चेहरा तुरंत हर्ष से खिल उठा। "अरे वाह!" उन्होंने आश्चर्य से कहा। "यहाँ से तो सामने पेड़ पर बैठी छोटी सी चिड़िया इतनी पास दिख रही है कि मानो उसे छू सकते हैं! देखो, वह दाना खा रही है। परी का बस्ता तो सचमुच जादुई है! क्या तुम भी देखना चाहोगे, बच्चो?"

यह सुनते ही, जो बच्चे मैदान में खेल रहे थे दौड़कर राहुल सर के पास आ गए। राहुल सर ने धैर्य से हर बच्चे को दूरबीन से वह दृश्य दिखाया। एक-एक कर बच्चों ने आँखें गड़ाकर चिड़िया को देखा, कभी आसमान के बादलों को तो कभी दूर के पहाड़ों को। कुछ ही देर में, परी जो अभी तक अकेली थी, के आसपास बच्चों का झुंड लग गया। वे खुशी से चिल्ला रहे थे और अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे।



परी ने यह सब हैरानी से देखा। यह शोर उसे अब अप्रिय नहीं बल्कि अपनेपन जैसा लग रहा था। जब एक बच्चे ने दूरबीन लौटाते हुए धन्यवाद कहा

तो परी को अपने अंदर एक अनोखी गरमाहट महसूस हुई। उसे पहली बार बच्चों के साथ किसी चीज़ को साझा करते हुए इतना मज़ा आया था। उसे लगा जैसे उसका अकेलापन जो एक काले बादल जैसा था कहीं बरसकर छूमंतर हो गया है।

राहुल सर ने बच्चों को एक शाँत घेरे में बिठाया। उन्होंने दूरबीन को बीच में रखते हुए कहा, "देखो, परी ने अपनी दूरबीन साझा की और हम सबने एक नया नज़ारा देखा। यदि परी इसे अकेले रखती तो क्या हम सब इतना मज़ा ले पाते? नहीं न! जब हम अपनी चीज़ें दूसरों के साथ साझा करते हैं तो खुशी दुगुनी हो जाती है। साझा करना ही सच्ची दोस्ती का जादू है!

उस दिन के बाद से परी में आया बदलाव एक सुनहरी किरण जैसा था जिसकी रोशनी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। धीरे-धीरे, परी आत्मविश्वास से भरकर हर रोज़ अपने जादुई बस्ते से एक नई चीज़ निकालने लगी। कभी वह बच्चों के बीच बैठकर अपनी जादुई कहानियों की किताबें खोलती तो कभी वह अपने बनाए रंग-बिरंगे चित्र दिखाती जिनमें तितलियों का गाँव और फूलों की बातें होतीं। कभी वह अपनी शाँत और मीठी आवाज़ में उन्हें ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाती कि सभी बच्चे मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहते, मानो वे खुद किसी परी लोक में पहुँच गए हों। बच्चों ने भी उसे अपने भाग-दौड़ वाले खेल और अपनी छोटी-छोटी शरारतों में सहर्ष शामिल कर लिया था। परी ने महसूस किया कि साझा करना केवल चीज़ों का नहीं बल्कि खुशी, विचारों और दोस्ती का भी सबसे प्यारा आदान-प्रदान है।

अब अक्सर ऐसा ही होता कि सब बच्चे मिल-जुल कर रहते। राहुल सर को यह सब बहुत अच्छा लगता था। राहुल सर की बातें सुनकर बच्चों का उत्साह आसमान छूने लगता था। एक दिन उन्होंने बच्चों को पार्टी देने की सोची। बच्चों को जोड़ने का इससे अच्छा तरीका उनकी नज़र में और कोई

नहीं था। "चलो आज हम सब कैंटीन में चलते हैं।" राहुल सर ने कहा तो बच्चे खुशी से झूम उठे।

कैंटीन का नज़ारा किसी त्योहार से कम नहीं था। एक लंबी मेज पर खाने-पीने की ढेर सारी चीज़ें रखी हुई थीं जिन्हें देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया। मेज़ पर एक तरफ़ नारंगी और पीले रंग के समोसे थे जो गरमाहट में लिपटे हुए थे। उनके साथ हरी चटनी का एक कटोरा भी रखा हुआ था। दूसरी तरफ़, रंग-बिरंगी, छोटी-छोटी पेस्ट्रीज़ सजी थीं जिन पर मीठी चेरी के टुकड़े किसी हीरे की तरह चमक रहे थे। चॉकलेट, कुकीज़ और रंग-बिरंगी खट्टी-मीठी टॉफियों का भी एक बड़ा डिब्बा था जिसकी खुशबू पूरे कमरे में फैली हुई थी। बच्चों के पीने के लिए संतरे का ताजा निकला जूस भी था।

सबसे ज़्यादा आकर्षण का केंद्र था गोल, चमकदार गुलाब जामुनों का ढेर जो प्यार की चाशनी में डूबे हुए थे। इनके साथ, कुरकुरे, आलू चिप्स के पैकेट और लाल-पीली इमली की गोलियों से भरा एक बड़ा जार भी था। हर बच्चे की आँख अपनी पसंदीदा चीज़ पर टिकी थी। यह कैंटीन नहीं बल्कि स्वाद का जादुई खजाना लग रहा था जहाँ राहुल सर के 'जादुई बस्ते' का जादू अब पेट की खुशी में बदल चुका था।

मेज पर रखी स्वादिष्ट चीज़ों को देखते ही बच्चों में एक क्षण के लिए तो होड़ ही मच गई लेकिन तभी उन्हें राहुल सर की शर्त याद आई...चीज़ों को साझा करना पहली शर्त है।

सबसे पहले चिंटू ने एक गरमा-गरम समोसा उठाया। उसने उसे खुद खाने की बजाय अपने बगल में खड़ी छोटी रिया की तरफ बढ़ाया। "रिया, क्या तुम थोड़ा समोसा खाओगी? मेरी मम्मी जैसा बनाती है यह बिल्कुल वैसा ही लगता है!" रिया ने शरमाते हुए थोड़ा सा टुकड़ा ले लिया। रिया ने फिर अपनी चॉकलेट कुकी चिंटू को दी। यह देखकर दूसरे बच्चे भी तुरंत साझा करने लगे।

किसी ने अपनी लाल टॉफी तोड़कर दोस्त को दी तो किसी ने अपनी पेस्ट्री का आधा हिस्सा बगल वाले को खिलाया। वहाँ 'यह मेरा है' की कोई आवाज़ नहीं थी बल्कि हर तरफ़ 'क्या तुम खाओगे?' की गूँज थी।

राहुल सर सभी बच्चों के पास जाकर उनका उत्साह बढ़ा रहे थे। तभी उन्होंने परी की तरफ देखा और मुस्कुराये।



परी, हमेशा की तरह, एक कोने में खड़ी होकर यह खुशी का दृश्य देख रही थी। उसके हाथ में एक छोटा-सा गुलाब जामुन था। आज वह फिर से देख रही थी कि कैसे चीज़ें साझा करने से खुशी बढ़ रही है। बच्चों की हँसी और मिलकर खाने का मज़ा उसके अकेलेपन को धीरे-धीरे तोड़ रहा था। परी ने गहरी साँस ली। उसने हिम्मत की और अपने गुलाब जामुन को आधा तोड़कर, पास खड़े एक लड़के, जिसका नाम राजू था, की तरफ बढ़ाया। "राजू... क्या तुम... क्या तुम खाओगे?" परी ने हल्की, दबी हुई आवाज़ में पूछा।

राजू, जो शरारती बच्चों में से था, परी के इस निमंत्रण से हैरान तो हुआ पर फिर खुश हो गया। उसने कहा, "ज़रूर परी! और तुम मेरी यह वाली कुकी खाओगी?"

जब परी ने गुलाब जामुन साझा किया और बदले में कुकी खाई तो उसे लगा जैसे स्वाद दुगुना हो गया है और खुशी चौगुनी। राहुल सर ने यह देखा और गर्व से मुस्कुरा दिए। परी ने उस दिन केवल खाना ही साझा नहीं किया बल्कि बच्चों के साथ अपनी दोस्ती का पहला कदम भी साझा कर लिया था।

अब उसे यह गहराई से समझ आ गया था कि दूसरों के साथ जुड़ने और अपनी दुनिया को साझा करने में कितना असीम आनंद छिपा है। उसका अकेलापन पूरी तरह पिघल चुका था।

परी के माता-पिता जो परी को घर ले जाने के लिए स्कूल आए थे, परी



में आए इस अद्‌भुत बदलाव को देखकर आँखों में गर्व के आँसू लिए भौंचक्के से खड़े थे। उन्हें अपनी पुरानी चिंताएँ अब छोटी लगने लगी थीं। उन्हें यह

अमूल्य सबक समझ आ गया था कि हर बच्चा एक अलग बीज होता है जिसे किसी निर्धारित साँचे में ढालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे अपने तरीके से खुलने का समय, सम्मान और प्रोत्साहन देना चाहिए। परी ने भी उन्हें सिखाया कि बच्चों के कोमल मन को समझने के लिए बाहर से देखने की बजाय उनके अंदर झाँकना भी ज़रूरी है।

अब, परी की दुनिया केवल बगीचे के पौधों तक सीमित नहीं थी बल्कि वह अपने पौधों के साथ-साथ, अपने दोस्तों के साथ भी खुलकर हँसती और खेलती थी। परी को दोस्तों का और दोस्तों को परी का साथ अब बहुत अच्छा लगता था।

□

बरगद की ठंडी छाँव

गाँव के एकदम छोर पर जहाँ कच्ची धूल भरी पगडंडी खेतों की लहलहाती हरियाली में खो जाती थी, एक छोटा-सा, मिट्टी का लिपा-पुता घर था। घर की छत पर खपरैल बिछे थे और आँगन में तुलसी का हरा-भरा पौधा था जो सुबह की धूप में पूजा-अर्चना के बाद कुछ और चमक जाता था। इसी शाँत और साधारण घर में रामू रहता था, साथ में उसकी मेहनती पत्नी सीता और उनका इकलौता बेटा, रवि।



रामू अपनी दुबली-पतली काया के बावजूद किसी विशाल बरगद के पेड़ जैसा था...मज़बूत, अडिग और अपने परिवार को हमेशा छाया देने वाला। उसका कद भले ही साधारण था पर इरादे पहाड़ जैसे मज़बूत थे। वह अडिग, अथक और ऐसा इंसान था जिसने कभी हार मानना नहीं सीखा था। वह अपने परिवार के लिए केवल एक व्यक्ति नहीं था बल्कि अटूट भरोसे की एक घनी छाँव था...एक ऐसा आश्रय जहाँ रवि और सीता हमेशा खुद को सुरक्षित और निश्चिंत महसूस करते थे।

रवि के मन में आज भी वे पुरानी यादें किसी मीठी धूप की तरह बसी हुई हैं। उसे याद है, कैसे उसके पिता रामू हर सुबह भोर के तारे के पूरी तरह

छिपने से पहले ही उठ जाते थे। रामू केवल किसान नहीं थे बल्कि उनका जीवन ही प्रकृति के कैलेंडर के हिसाब से चलता था। उनकी हथेलियों में हल चलाने की निशानियाँ, गहरी दरारें और कठोर छालें थीं जो दिन-रात के अथक श्रम की अनगिनत कहानियाँ कहती थीं। फिर भी उनकी आँखें मेहनत के संतोष और एक बेहतर कल की उम्मीद से भरी रहती थीं।

रवि तब बहुत छोटा था। उसे अपने पिता के साथ खेत पर जाना किसी उत्सव जैसा लगता था। गाँव में खेती का काम केवल हल चलाना नहीं होता था वरन् जीवन को सींचना भी होता था। पिता रामू रवि को अपने मजबूत कंधों पर बिठाकर ले जाते और रवि को लगता जैसे वह दुनिया का सबसे ऊँचा इंसान हो। इतना ऊँचा जो बादलों से भी बात कर सकता है।



रामू उसे हर काम प्यार से सिखाते थे। वे सिखाते थे कि सुबह-सुबह गाय का दूध कैसे दूहा जाता है, खेतों की मेढ़ें कैसे बाँधी जाती हैं ताकि पानी व्यर्थ न जाए। वे उसे बताते कि दलदल से मिट्टी खींचना और हल के पीछे सीधा चलना क्यों ज़रूरी है। रामू बीजों को बोने का तरीका सिखाते और कहते, "बेटा, बीज केवल मिट्टी में डाला ही नहीं जाता, उसे उम्मीद की नमी भी दी जाती है।" वह सिखाते कि कैसे एक छोटा-सा बीज भी सही देखभाल और अटूट भरोसे से

एक विशाल, छायादार वृक्ष बन सकता है। इन सारे कामों के बीच, रामू रवि को मिट्टी की सोंधी खुशबू से दोस्ती करना सिखाते थे। वो खुशबू जो परिश्रम के पसीने से आती है।

एक बार गाँव के फलते-फूलते जीवन में एक भीषण त्रासदी ने दस्तक दी...गाँव में अकाल पड़ गया। आसमान ने रूठकर अपनी मेहरबानी रोक ली थी। कुएँ ऐसे सूख गए थे जैसे धरती ने साँस लेना ही छोड़ दिया हो। खेतों की हरियाली सिमटकर बंजर, रूखी मिट्टी में बदल गई। चारों ओर निराशा का ऐसा गहरा अँधेरा छा गया था कि लोगों की उम्मीदें भी सूखने लगी थीं।

सीता, अपने माथे पर चिंता की लकीरें लिए, रसोई में बैठी थी। उसने खाली बर्तनों को देखा तो उसकी आवाज़ में एक अनजाना डर भर गया ,"अब क्या होगा, रामू?" उसने दुख से पूछा, "जब फसल ही नहीं होगी तो रवि को क्या खिलाएँगे? यह विपदा तो हमें तोड़ देगी।"

रामू ने सीता की ओर देख गहरी, लंबी साँस ली जो उसके शाँत हृदय में व्याप्त अडिगता को दर्शाती थी। उसकी धूप में तपी आँखों की वह पुरानी चमक जो बेहतर कल की उम्मीद लिए थी, अभी फीकी नहीं पड़ी थी। उसने अपनी पत्नी को ढाँढस बँधाते हुए कहा, "चिंता मत करो, सीता। बरगद की जड़ें आसानी से नहीं हिलतीं। बेशक मुसीबतें बड़ी हैं पर मेरा भरोसा उनसे भी बड़ा है। मैंने अभी हार नहीं मानी है।" उसकी आवाज़ में डर नहीं बल्कि संकल्प की गूँज थी। मानो वह अकाल से जूझने का खुद को एक नया पाठ सिखा रहा हो।

बहुत सोच-विचार कर रामू ने घर छोड़ने का फैसला किया। रामू का यह निर्णय जल्दबाजी में लिया गया फैसला नहीं था। शहर जाने से पहले उसने कुछ दिन तक चुपचाप गाँव के बाज़ार में अतिरिक्त मेहनत की। उसने अपने

बरसों से जोड़े हुए थोड़े-बहुत पैसे निकाले और गाँव के बनिए से कुछ अनाज, दालें और तेल-नमक का इंतज़ाम किया।



यह सूखा राशन उसने सीता को सौंपते हुए कहा, "सीता, ये कुछ दिनों के लिए काफी होगा। इसे धीरे-धीरे इस्तेमाल करना। मैं जल्द ही वापस आऊँगा पर जब तक मैं न आऊँ, रवि को भूखा मत रहने देना।" रामू जानता था कि वह परिवार के लिए जीवन-रेखा है और उसकी अनुपस्थिति में पत्नी और इकलौते बच्चे का पेट भरना सबसे ज़रूरी। अपने परिवार के लिए सुरक्षा का एक छोटा-सा किला बनाकर उसने भारी मन से अपनी पुरानी, खड़खड़ाती साइकिल निकाली और उसे लेकर एक अनजान शहर की ओर अनिश्चित दिनों के लिए चल पड़ा। यह पहली बार था जब रामू अपनी मिट्टी, अपने घर और खेतों से इतना दूर जा रहा था वह भी एक अज्ञात यात्रा पर।

दिन, हफ्ते और कुछ महीने बीत गए पर रामू वापस घर नहीं लौटा। सीता को डर था कि कहीं शहर की भीड़ और कठिनाइयाँ रवि के बरगद जैसे

पिता को तोड़ न दें। पति के विछोह की टीस मन में गहरी थी फिर भी सीता बहुत कुशलता से घर-परिवार को देख रही थी। वह घर में टोकरियाँ बनाती और बाज़ार जाकर बेचती जिससे घर खर्चे में कुछ आसानी हो जाती। गाँव के मुखिया जी के घर में उसने खाना बनाने का काम पकड़ लिया था। वहाँ से भी कुछ रुपए उसे मिलते और पका पकाया भोजन भी। विकट परिस्थितियों में सीता ने भी यूँ तो हिम्मत नहीं हारी थी परंतु सीता का कोमल हृदय पति के



इंतज़ार में रोज़ शाम को दरवाज़े पर आँखें गड़ाए रहता था। छोटा रवि पिता को याद कर बेचैन होकर पगडंडी पर धूल के गुबार को निहारता रहता। जब रवि पिता के बारे में पूछता तो सीता तरह-तरह की मीठी कहानियाँ सुनाकर रवि को समझाती कि जल्दी ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। सब दिन एक जैसे नहीं रहते।

फिर एक उदासी भरी शाम, जब सूरज डूब चुका था, दूर से एक धुंधली-सी आकृति दिखाई दी। वह आकृति धीरे-धीरे पास आ रही थी। सीता और रवि की साँसें थम गईं। हाँ! वह रामू ही था साइकिल पर एक भारी-सी बोरी लटकाए

नज़दीक आता हुआ। उसका चेहरा धूल और थकान से ढका हुआ था, कपड़े फटे थे और काया और भी दुबली हो गई थी। पर जैसे ही उसने अपने परिवार को देखा उसकी थकी आँखों में वही पुरानी, अडिग चमक लौट आई।

रामू ने बोरी ज़मीन पर उतारी। सीता ने डरते-डरते उसे खोला। उसमें कुछ अनाज के दाने थे जो परिवार की उम्मीद को ज़िंदा रखने के लिए काफी



थे। साथ ही कुछ सस्ते और मोटे कपड़े। रवि के लिए एक खिलौना भी था...उड़ने वाला प्लास्टिक का जहाज़। रामू ने बताया कि उसने शहर की कठोर सड़कों पर दिहाड़ी मजदूरी की थी। उसने रात-रात भर जागकर मालगाड़ियों से भारी बोरे उतारे थे, पत्थरों को तोड़ा था और एक पल भी आराम नहीं किया था। रात को वह रेलवे स्टेशन पर सो जाता था। उसका पसीना, हर श्रम परिवार के नाम था ताकि उसके परिवार को भूखा न रहना पड़े।

रवि ने उस दौरान देखा कि सच्चा संघर्ष क्या होता है। पिता का यह प्रेम किसी बरगद की तरह था जिसने खुद धूप सही पर अपने परिवार को हमेशा सुरक्षित छाँव दी।

आज रवि एक बड़ा आदमी है। शहर में उसका अपना कारोबार है, धन-दौलत है, सुंदर परिवार है। उसने शहर में एक सुंदर-सा घर भी बनवाया है जिसमें सब मिल-जुलकर रहते हैं। इस घर पर उसके माता-पिता के नाम की तख्ती लगी है क्योंकि वह जानता है कि यह सब किस की बदौलत है।

रवि पुरानी यादों से बाहर आया तो देखा कि माता-पिता वहीं उसके सामने बैठे हैं। उनके परिवार के लिए किए गए समर्पण, परिश्रम और त्याग को देखकर उसका मन भर आया। वह कुर्सी से उठकर माता-पिता के कदमों में जाकर बैठ गया। उसने देखा कि उसके पिता अब बूढ़े हो गए हैं। उनके बाल सफ़ेद हो गए हैं और भोजन करते हुए हाथ भी काँपते हैं। परन्तु जब वह स्वयं उनके पास बैठता है तो उसे आज भी पिता की हथेलियों में वही पुरानी मज़बूती महसूस होती है। पिता के होने में वही बरगद जैसी अडिग चमक और छाँव दिखाई देती है। और माँ में वही ममता और धैर्य जिसने उसे इस लायक बनाया।

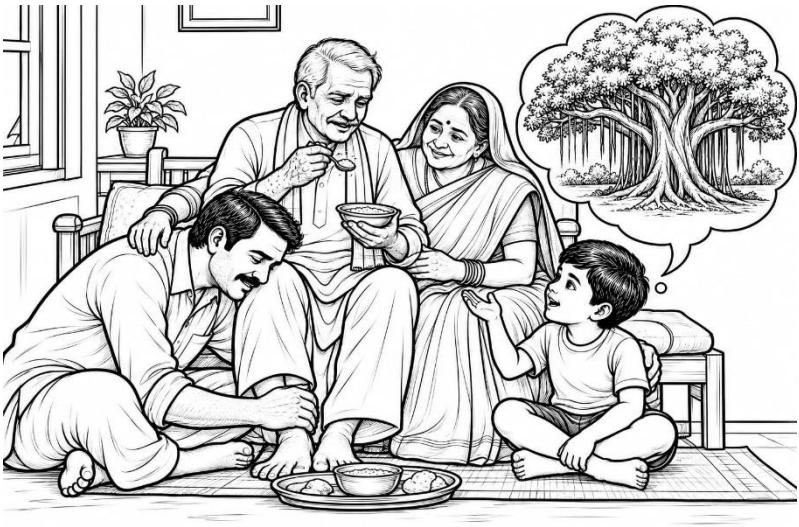

इसी बरगद जैसी छाँव तले फलते-फूलते परिवार के सबसे छोटे सदस्य रवि के पाँच वर्षीय बेटे बबलू ने आकर अपने पिता से पूछा, "पापा बरगद का पेड़ कैसा होता है..?"

रवि ने अपने पिता की ओर इशारा करते हुए गर्व से कहा, "तुम्हारे दादाजी जैसा होता है..."

"और बरगद की छाँव कैसी होती है...?"

"बहुत ठंडी... बिल्कुल दादी जैसी।" रवि ने पिताजी के पास ही बैठी अपनी माँ को गले लगाते हुए कृतज्ञता से कहा।

□

सच्चा धन

सूरज की पहली किरणें अभी पहाड़ों से झाँक ही रही थीं कि राम सिंह को काम पर निकलना पड़ा। उसके कंधे पर टँगा पुराना झोला और हाथों में औज़ारों का बक्सा, यह सब उसकी दिनचर्या की कहानी थे। उम्र अब पचास के पार थी और शरीर भी पहले जैसा मज़बूत नहीं रहा था लेकिन गाँव में उसके हुनर का कोई सानी नहीं था। वह बढ़ई था और लकड़ी का कोई भी काम उसके हाथ से छूटता नहीं था। दिन-भर वह अपनी छैनी और हथौड़ी के संगीत की धुन में खोया रहता। हर लकड़ी के टुकड़े को आकार देता, हर कील को



ठोंकता, जैसे वह सिर्फ मेज़-कुर्सी नहीं बल्कि अपनी बेटी के भविष्य की नींव रख रहा हो। वह अच्छी तरह जानता था कि इस कड़ी मेहनत की रगड़ ही राधा के सपनों को चमका सकती है।

राम सिंह की ज़िंदगी सिर्फ लकड़ी और औज़ारों के इर्द-गिर्द ही नहीं घूमती थी, उसकी दुनिया थी उसकी इकलौती बेटी राधा जो शहर में उसके भाई के घर में रहती थी और वहीं किसी कॉलेज में अपनी डिग्री के अंतिम वर्ष में पढ़ती थी। राम सिंह का सपना था कि राधा खूब पढ़े-लिखे और एक अच्छी नौकरी करे ताकि उसे रामू जैसी ज़िंदगी न

जीनी पड़े। इसी सपने को पूरा करने के लिए रामू हर सुबह सूरज उगने से पहले घर से निकलता और रात ढलने के बाद ही लौटता था। वह अक्सर सोचता रहता था कि जब राधा बड़े शहर की चमक में अपनी नई ज़िंदगी शुरू करेगी तो वह भी गंगा नहा लेगा।

एक दिन, राम सिंह काम से लौटा तो उसके पैर बुरी तरह लड़खड़ा रहे थे। उसने देखा कि राधा जो अक्सर छुट्टियों में ही आती थी आज घर पर ही थी। "राधा! तू कब आई?" राधा को अचानक घर आया देख उसने खुशी से पूछा। राधा ने चिंता से अपने पिता की ओर देखा, "पिताजी, आपकी तबीयत ठीक नहीं लग रही। आप इतने कमज़ोर क्यों होते जा रहे हैं?"



राम सिंह ने मुस्कुराने की कोशिश की, "अरे, कुछ नहीं बेटी, बस थोड़ी थकान है।" लेकिन राधा समझ गई कि कुछ तो गड़बड़ है। उसने पिता के पैरों को छूकर देखा, वे सूजे हुए थे। पैरों की नसें जैसे विद्रोह कर रही थीं। यह सिर्फ थकान नहीं थी, वर्षों की कड़ी मेहनत का बोझ था। राधा की आँखों में नमी उतर आई। उसके पिता ने उसके भविष्य के लिए अपने शरीर को भी लकड़ी की तरह घिस दिया था ताकि उसकी ज़िंदगी रेशम सी मुलायम रहे।

अगले दिन राधा अपने पिता को शहर के बड़े सरकारी अस्पताल लेकर गई। डॉक्टर ने जाँच के बाद बताया कि ज्यादा काम करने की वजह से ही

उसके पिता को कमज़ोरी थी और तुरंत आराम की सलाह दी। डॉक्टर के मुँह से यह सुनकर राधा फिर से दुखी हो गई कि उसके पिता उसके लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। राधा जानती थी कि पिता ने अपनी सारी जमा-पूँजी उसकी पढ़ाई पर ही लगा दी थी और अपनी सेहत का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखा था।

राधा की कॉलेज की पढ़ाई अब लगभग पूरी हो चुकी थी इसलिए उसने



कुछ दिन अपने पिता के पास रुकने का निर्णय लिया। साथ ही अपनी नौकरी के लिए भी आवेदन करना शुरू किया। उसे पता था कि उसके पास कोई विशेष अनुभव नहीं था, इसलिए उसे बड़ी मुश्किल से एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने का काम मिला। यह नौकरी शहर के बाहरी इलाके में थी और तनख्वाह भी ज्यादा नहीं थी। सुबह वह बस पकड़कर शहर जाती जहाँ बच्चों को पढ़ाते हुए उसका गला सूख जाता। शाम को वापस आकर वह अपनी शिक्षिका की भूमिका को भूलकर तुरंत एक नर्स और बेटी की भूमिका में ढल जाती। छुट्टी के दिन वह कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती ताकि कुछ और आमदनी हो सके। अपने पिता के इलाज का खर्च उठा सके, इसके लिए वह दिन-रात मेहनत करती। उसने अपने सभी शौक भी बंद कर दिए थे। अपनी किताबों तक को

किनारे रख दिया था। उसके लिए अब सबसे बड़ी परीक्षा उसका घर और पिता थे।

राम सिंह ने जब यह देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने कभी नहीं सोचा था कि जिस बेटी के लिए उसने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया, वही बेटी आज उसकी सेवा-सुश्रुषा में दिन-रात एक कर देगी।

धीरे-धीरे राम सिंह का इलाज शुरू हुआ। राधा उन्हें समय पर दवा देती और उनकी हर ज़रूरत का ध्यान रखती। जब पिता बिस्तर पर लेटे होते तो वह चोरी-चोरी राधा को देखते कि कैसे वह रसोई और घर का काम बिना



शिकायत के करती है। घर बुहारना, कपड़े धोना, खाना बनाना, बर्तन मांजना जैसे ढेर सारे काम थे जो राधा को अकेले करने पड़ते थे। फिर भी कैसे शाम को अपनी थकान छुपाकर चेहरे पर मुस्कान लाकर उन्हें इधर-उधर की कहानियाँ सुनाती है। वह अब राधा को उस कॉलेज की डिग्री या नौकरी के दर्जे से नहीं बल्कि उसके चरित्र की गहराई से माप रहे थे। कुछ ही दिनों में राम सिंह की

सेहत में सुधार आने लगा। भावुकता से भरकर उसने एक दिन राधा से कहा, "बेटी, तूने मेरी सेवा में अपना पूरा भविष्य लगा दिया। मैंने तो बस यही चाहा था कि तू खूब पढ़े-लिखे लेकिन..." कहते-कहते उसकी आवाज़ भर्रा गई।

राधा ने अपने पिता का हाथ थामा और बोली, "पिताजी, आपने मुझे उड़ने के लिए पंख दिए थे। आज अगर मैं उड़ पा रही हूँ तो वह आपकी बदौलत है। यह तो मेरा फर्ज़ था। पढ़ाई तो मैं नौकरी करते हुए भी कर लूँगी और इससे भी अच्छी नौकरी पा लूँगी परंतु पहले आप स्वस्थ हो जाइए।"

राम सिंह ने मुस्कुरा कर अपनी बेटी को देखा। उसकी आँखों में सिर्फ प्यार और गर्व था। उसे अपनी बेटी की आँखों में अब लकड़ी के टुकड़ों का भविष्य नहीं बल्कि त्याग और प्रेम से तराशा गया खूबसूरत चेहरा दिखाई दे रहा था। उसने देखा कि उसकी बेटी अब सिर्फ उसकी लाडली नहीं बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी है। वह समझ गया कि सच्चा धन वही है जो अपने बच्चों को सही दिशा दे सके और उनकी आँखों में अपने लिए प्रेम देख सके। और राम सिंह ने इस धन को खूब कमाया था।

□

सौभाग्य का स्वर्ण कमल

पहाड़ियों की ढलान पर बने एक छोटे से गाँव में जहाँ सूरज की सुनहरी धूप सबसे पहले घास की पत्तियों को छूती थी, एक लड़का रहता था जिसका नाम था... रोहन। अठारह वर्षीय रोहन बहुत ही जिज्ञासु और साहसी प्रवृत्ति का था। उसकी आँखें हमेशा चमकती रहती थीं मानो वे हर पल प्रकृति के नए रहस्यों को कैद करने के लिए उत्सुक हों। गाँव के बाकी बच्चे जहाँ गलियों में शोर मचाते थे, वहीं रोहन या तो बड़े-बुजुर्गों से तरह-तरह की कहानियाँ सुनता या फिर जंगल की पगडंडियों पर घूमकर नई चीज़ें सीखने और अनुभव करने के लिए तैयार रहता। उसके लिए हर पत्ता एक कहानी, हर पहाड़ एक हिम्मत और हर जंगल एक अनसुलझा सवाल था।

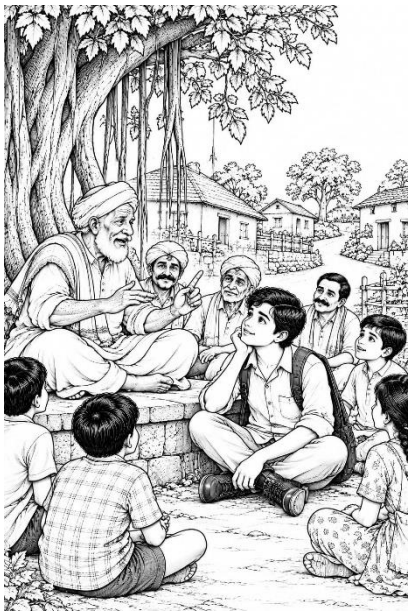

एक दिन जब गाँव के बुज़ुर्ग बरगद की छाँव में अपनी पुरानी कहानियाँ सुना रहे थे, रोहन ने एक दबी हुई फुसफुसाहट सुनी। यह फुसफुसाहट गाँव के पास फैले रहस्यमयी जंगल से जुड़ी एक किंवदंती के बारे में थी। जंगल के हृदय में जहाँ सूरज की रोशनी मुश्किल से ही पहुँचती थी, एक बहुत ही सुंदर और अकल्पनीय रूप से दुर्लभ फूल खिलता था। उस फूल को "स्वर्ण कमल" कहा

जाता था। यह कोई साधारण फूल नहीं था। किंवदंतियों के अनुसार यह फूल उस परम सौभाग्य का प्रतीक था जो केवल निस्वार्थ हृदय वालों को ही मिलता था। लोक कथाओं के अनुसार इस फूल को बहुत ही शुभ माना जाता था। गाँव वाले मानते थे कि जिसके पास भी यह स्वर्ण कमल होता है वह केवल स्वयं ही संपन्न और खुश नहीं रहता बल्कि उसकी आभा उसके आसपास के पूरे वातावरण को भी छू लेती है जिससे हर घर में संपन्नता और खुशियों की वर्षा होती है। गाँव वालों की नज़रों में यह देवताओं का फूल था और सामुदायिक कल्याण का स्रोत भी।

जब रोहन ने यह रहस्यमय किंवदंती सुनी तो उसके जिज्ञासु हृदय में एक चिंगारी भड़क उठी। उसने तुरंत निश्चय किया कि वह उस स्वर्ण कमल को अपने लिए ढूँढने नहीं जाएगा बल्कि पूरे गाँव के लिए वह सामूहिक सौभाग्य वापस लाने के लिए जाएगा जो समय के साथ फीका पड़ गया था। उसने उत्साह से अपने सबसे करीबी दोस्तों, मीना, जो तर्क में तेज थी और कालू, जो गाँव के जंगल को हथेली की तरह जानता था को बताया लेकिन स्वर्ण कमल के लिए जंगल जाने के इस विचार पर सभी डर गए। उनकी आँखों में जंगल का वो भय स्पष्ट था जिसके लिए कहा जाता था कि घने वृक्षों के बीच भटकती आत्माएँ और मायावी रास्ते हैं जो यात्रियों को हमेशा के लिए भटका देते हैं और गायब कर देते हैं। उन्होंने रोहन को भी समझाया और कहा कि जंगल में जाना खतरनाक है। वहाँ रास्ता भूलने का डर है और अगर कमल तक पहुँच भी गए तो उसे तोड़ने का साहस कौन करेगा क्योंकि किंवदंती कहती है कि कमल की रक्षा अदृश्य शक्तियाँ करती हैं। उनकी चेतावनी ठोस थी परन्तु रोहन का संकल्प उससे भी अधिक कठोर था।

रोहन ने बिना किसी को बताए, अपनी माँ की पुरानी पोटली में थोड़ा गुड़ और चने बाँधे और एक लकड़ी की छड़ी को मज़बूती से पकड़कर घर से

निकल पड़ा। जंगल जाने के बारे में वह अपनी माँ को बताना तो चाहता था लेकिन उसे डर था कि अगर उसने माँ को बताया तो माँ भी उसे जंगल जाने नहीं देगी।

गाँव की सीमा पर एक गहरी साँस लेकर उसने शाँत मृत्यु वन के भीतर कदम रखा। भीतर का माहौल वैसा ही था जैसा उसके दोस्त रवि ने बताया था। दिन के उजाले में भी पेड़ों के मोटे-मोटे पत्तों ने ऐसी गहरी छाया कर दी थी कि नीचे अँधेरा पसरा पड़ा था। हवा में पत्तों की नमी और पुरानी मिट्टी की गंध थी। रोहन का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था लेकिन उसने हर बार अपने लक्ष्य को याद किया...स्वर्ण कमल, गाँव का सौभाग्य। वह ज़मीन पर फैली टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों से बचते हुए, चुपचाप किसी नन्हें शिकारी की तरह आगे बढ़ने लगा।

आगे बढ़ते ही जंगल की भयावहता अपना असली रूप दिखाने लगी।

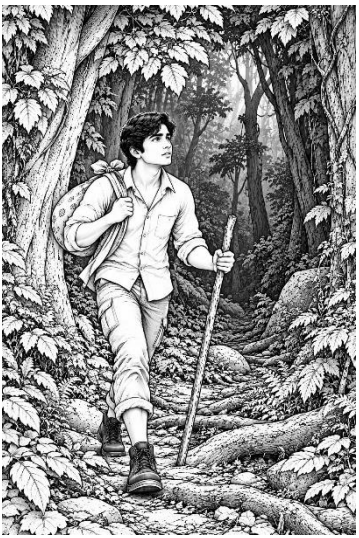

ज़मीन पर बिछी सूखी पत्तियों के नीचे कहीं नुकीले काँटे छिपे थे तो कहीं धंसने वाली दलदली मिट्टी। एक पल की लापरवाही और रोहन का पैर गीली मिट्टी में धंस गया। खुद को बाहर खींचने में उसकी आधी ताकत निचुड़ गई और साँस फूलने लगी। घने अँधेरे और एक जैसी दिखती जड़ों के जाल ने दिशाओं का ज्ञान पूरी तरह मिटा दिया था जिससे हर कदम पर रास्ता भटकने की आशंका गहरी होती जा रही थी। हवा में अचानक फैली एक अजीब, मीठी सी महक उसके सिर को भारी करने लगी और कानों में रह-

रहकर फुसफुसाहटों जैसी सरसराहटें गूँजने लगीं। रोहन ने अपनी छटपटाती घबराहट पर काबू पाने के लिए अपनी आँखें कसकर बंद कीं और अपने गाँव के उम्मीद भरे चेहरों को याद किया। ज़हरीली झाड़ियों की खरोंच से छिलती त्वचा और झाड़ियों के पीछे से जानवरों की घूरती अनजानी, चमकदार आँखों की परवाह किए बिना उसने अपने बहते खून को पोंछा और एक बार फिर स्वर्ण कमल की खोज में कदम आगे बढ़ा दिए। यह उसका हौसला और सद्भाव ही था कि एक बार भी उसे अपने निर्णय पर पछतावा नहीं हुआ।

उबड़-खाबड़ रास्तों, कई पत्थरों और झाड़ियों को पार करने के बाद आश्चर्य जनक रूप से अचानक एक मोड़ पर घनी हरियाली छँट गई। रोहन की साँसें थम गईं। सामने एक अत्यंत सुंदर और शाँत झील थी जिसके किनारे की घास ऐसी हरी थी जैसे किसी ने अभी-अभी पेंट किया हो। जंगल के भय और शोर के बाद यह दृश्य किसी जादुई द्वार के खुलने जैसा था।

शाँति और सुंदरता के उस सम्मोहक दृश्य ने रोहन की सारी थकान क्षण भर के लिए हर ली। झील के किनारे की मखमली हरी घास पर वह ढीला होकर बैठ गया। जंगल के सन्नाटे और लंबी चढ़ाई ने उसके शरीर को थका दिया था और पेट में भूख की अकुलाहट होने लगी थी। उसने अपने कंधे पर लटकी पोटली उतारी। उसमें से गुड़ का एक बड़ा टुकड़ा लिया और भुने हुए चने हाथ में ले एक पेड़ की टेक लेकर आराम से बैठ गया। गुड़ की मिठास ने उसकी जुबान पर जादुई ताज़गी भर दी। फिर एक-एक कर भुने चने चबाते हुए वह झील के ठंडे, निर्मल पानी को निहारने लगा। हर कौर के साथ उसके शरीर में खोई हुई ऊर्जा लौट रही थी और मन का डर पूरी तरह से गायब हो रहा था।

गुड़-चने खाने के बाद, रोहन झील की ओर गया और हाथ बढ़ाकर अंजलि में पानी भर दो घूँट जल पिया। पानी अद्भुत रूप से मीठा और तन-

मन में ठंडक भर देने वाला था। फिर उसने अपना मुँह और हाथ धोए जिससे सफर की पूरी सुस्ती और थकान धुल गई। अपनी लाठी पास ही घास पर टिकाकर उसने आँखें मूँद लीं। हवा के हल्के झोंकों और झील की उठती-गिरती छोटी लहरों की आवाज़ किसी मधुर लोरी जैसी लग रही थी। एक लंबी नींद ने उसके शरीर में अद्‌भुत शक्ति भर दी थी। जब उसने आँखें खोलीं तो उसका शरीर पूरी तरह तरोताजा था और मन स्वर्ण कमल की खोज के अंतिम पड़ाव के लिए पूरी तरह तैयार।

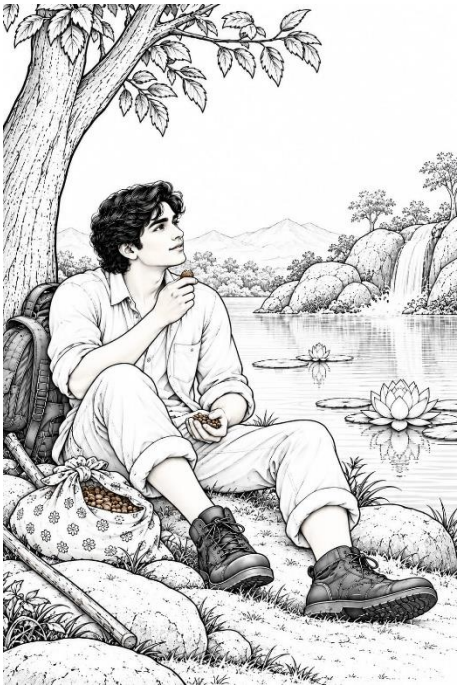

रोहन अपनी जगह से उठा और गहरी नज़रों से झील का मुआयना करने लगा। उसकी आँखें उस शाँत झील के बीचों-बीच स्थित एक छोटे से टीले पर टिकी थीं। वहाँ पानी की सतह पर वही दिव्य फूल तैर रहा था जिसकी कहानी उसने सुनी थी। यह कोई साधारण कमल नहीं था वरन् इसकी पंखुड़ियाँ पके हुए सोने की तरह दमक रही थीं। और जैसे ही उन पर सूर्य की किरणें पड़ीं, वह फूल हज़ारों हीरों की तरह चमक उठा। उसकी आभा ने न केवल झील के पानी को बल्कि आस-पास के घने वन को भी एक सुनहरी चमक दे दी। रोहन समझ गया कि यह

वास्तव में स्वर्ण कमल ही है परंतु उसके चारों ओर उसे एक अदृश्य सुरक्षा कवच भी महसूस हो रहा था

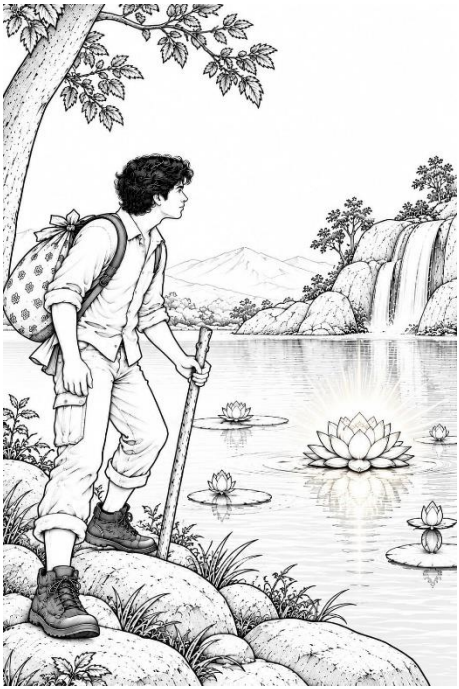

रोहन ने झील के किनारे की कुछ कम गीली मिट्टी पर अपने कदम जमाए। टीले तक सीधे तैरकर जाना बेवकूफी होती क्योंकि पानी में दलदल और अदृश्य सुरक्षा कवच का खतरा था। उसने झील के भूगोल को ध्यान से देखा और एक प्राकृतिक रास्ते की खोज की।

झील के उथले हिस्से में पानी से बाहर निकले काई से ढके पुराने पत्थरों की एक टेढ़ी-मेढ़ी कतार टीले की ओर जाती थी। ये पत्थर पूरी तरह सूखे नहीं थे। पानी की लहरें बार-बार उन्हें भिगो रही थीं जिससे उन पर जरा सी चूक भी फिसलने का कारण बन सकती थी। उसने पूरी तरह पानी में डूबे या हरी काई से ढके पत्थरों की बजाय उन खुरदरे, काले पत्थरों को चुना जो पानी से थोड़े ऊँचे थे और जिन पर धूप पड़ने के कारण काई नहीं जमी थी। वह समझ गया था कि केवल पैरों के संतुलन पर भरोसा करना बुद्धिमता नहीं थी। रोहन ने अपनी लकड़ी की छड़ी को मज़बूती से पकड़ा। आगे कदम बढ़ाने से पहले वह छड़ी से पत्थर की मजबूती और गहराई को जाँचता और आगे बढ़ता जाता।

वह हर कदम पर जल्दबाजी करने के बजाय अपना पूरा वजन धीरे-धीरे अगले पत्थर पर स्थानांतरित करता जाता। कभी अपने दोनों हाथ हवा में फैलाकर संतुलन बनाता तो कभी नीचे बहते पानी के तेज बहाव से अपनी आँखें हटाकर केवल अगले ठोस पत्थर पर ध्यान केंद्रित करता। उसे याद था कि गाँव के बड़े तालाब पर जाने के लिए भी सब लोग कुछ-कुछ ऐसा ही करते थे। उसका मन डर और उत्साह के बीच झूल रहा था। इस तरह बिना किसी जादू के, केवल अपनी व्यावहारिक सूझबूझ, शारीरिक संतुलन और धैर्य के दम पर वह उस कठिन रास्ते को पार कर स्वर्ण कमल तक पहुँच गया।

स्वर्ण कमल के पास पहुँचते ही झील की शाँत सतह पर एक अद्‌भुत दृश्य उभरा। पानी में रोहन की अपनी परछाईं गायब थी। उसकी जगह केवल उस दिव्य कमल की अलौकिक, शुद्ध आभा तैर रही थी। झील का पानी इतना निर्मल और पारदर्शी था कि रोहन को पानी के नीचे का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था। उसने देखा कि यह अलौकिक कमल केवल पानी पर तैर नहीं रहा था बल्कि उसकी बारीक जड़ें नीचे तलहटी की पवित्र मिट्टी में गहराई तक धँसी हुई थीं। पूरा वातावरण असीम शाँति से भरा हुआ था। रोहन ने श्रद्धापूर्वक अपने हाथ जोड़े और मन ही मन अपने कुल-देवता को याद करते हुए उस पावन पुष्प को नमन किया।



बिना कमल को नुकसान पहुँचाए उसे उसकी जड़ों से अलग

करना रोहन को लगभग नामुमकिन सा लग रहा था। फिर भी, उसने हिम्मत बाँधकर अत्यंत कोमलता और सावधानी से अपने हाथ ठंडे पानी में उतारे और कमल की पंखुड़ियों को स्पर्श किया। पर यह क्या...! जैसे ही रोहन का स्पर्श उस पावन पुष्प से हुआ, झील की रेशम-सी मुलायम मिट्टी ने बिना किसी खिंचाव के उस पावन जड़ को सहजता से मुक्त कर दिया मानो वह कमल युगों-युगों से स्वयं रोहन के हाथों में आने का ही इंतज़ार कर रहा हो। ठीक उसी पल, झील के उस पानी में एक तीव्र स्वर्णिम लहर दौड़ गई। रोहन का हृदय गर्व और संतोष से भर उठा। उसे गहराई से महसूस हुआ कि उसने केवल एक दुर्लभ फूल को नहीं थामा है बल्कि अपने पूरे गाँव की वर्षों पुरानी टूटती आशाओं और प्रार्थनाओं को अपने हाथों में ले लिया है।

रोहन ने अपनी पोटली से तांबे का एक पवित्र कलश निकाला। उसमें झील का शुद्ध जल भरा, टीले से आम के कुछ ताजे पत्ते लाकर सजाए और बड़े आदर के साथ स्वर्ण कमल को उसमें स्थापित कर दिया। झील को नमन करने के बाद बिना एक पल गँवाए, वह तुरंत अपने गाँव की ओर लौट पड़ा।

जब वह गाँव पहुँचा तो सूरज ढल रहा था और क्षितिज पर सिंदूरी लालिमा छा चुकी थी। गाँव के मुहाने पर उसकी माँ, पूरे गाँव वालों के साथ, एक-एक पल गिनती हुई गहरी चिंता में खड़ी थी। जैसे ही उसकी नज़र रोहन पर पड़ी, माँ का कलेजा शाँत हो गया। वह दौड़कर

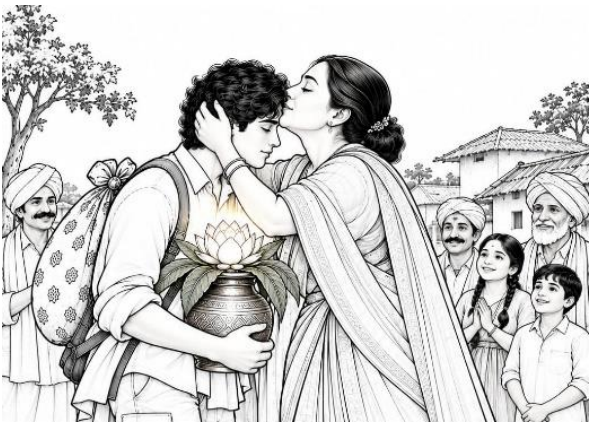

आई और रोहन को अपने सीने से लगा लिया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। पूरा गाँव रोहन को सही सलामत देखकर खुश था। सब उससे जानना चाहते थे कि वह चुपचाप कहाँ चला गया था। गाँव के चौपाल पर उस समय सन्नाटा छा गया जब रोहन ने जंगल के उस रहस्यमयी रास्ते, काई से ढके पत्थरों और अदृश्य सुरक्षा कवच की पूरी कहानी सुनाई। सब लोग उसकी हिम्मत और सूझबूझ को चकित होकर सुन रहे थे। अपनी यात्रा की पूरी कहानी सुनाने के बाद, रोहन ने अत्यंत सावधानीपूर्वक उस तांबे के पात्र को गाँव के मुखिया के हाथों में रख दिया।

जैसे ही रोहन ने पात्र से ढक्कन हटाया, स्वर्ण कमल की अलौकिक चमक से पूरी चौपाल जगमगा उठी। उस दिव्य और चमकदार पुष्प पर गाँव वालों की नज़रें पड़ते ही पूरे वातावरण में एक असीम और अविश्वसनीय शाँति छा गई। कमल की सुनहरी आभा से न केवल चौपाल बल्कि पूरा गाँव रोशन हो उठा। बरसों की निराशा के बाद, हर चेहरे पर आश्चर्य और नई उम्मीद की मुस्कान तैरने लगी। गाँव के बुजुर्गों और लोगों ने रोहन की इस अद्भुत सूझबूझ, धैर्य और साहस की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पूरा गाँव उसके पराक्रम की जय-जयकार कर उठा। माँ की आँखें खुशी और गर्व के आँसुओं से भर आईं। उसने आगे बढ़कर रोहन का माथा चूमा और छाती से लगाकर अपना अनमोल आशीर्वाद दिया।

उस स्वर्ण कमल को गाँव के बीचों-बीच स्थित पुरानी बावड़ी के जल को शुद्ध करने के बाद अत्यंत आदर के साथ स्थापित कर दिया गया। बावड़ी के निर्मल जल में तैरते ही उस दिव्य पुष्प की सुनहरी आभा पूरे गाँव पर छा गई मानो उसकी चमक हर घर के आँगन तक पहुँचना चाह रही हो।

उस पावन दिन के बाद से गाँव का भाग्य ही बदल गया। सौभाग्य और संपन्नता की एक अद्भुत लहर पूरे क्षेत्र में दौड़ गई। बंजर खेत हरी-भरी,

दोगुनी फसलों से लहलहा उठे और बरसों से फैली बीमारियाँ धीरे-धीरे गायब हो गईं। लेकिन सबसे बड़ा चमत्कार गाँव के लोगों के भीतर हुआ—कमल की उस शाँत और पावन आभा ने हर दिल से द्वेष को मिटाकर प्रेम, एकता और सहयोग का गहरा भाव जगा दिया। गाँव अब सिर्फ खुशहाल नहीं था बल्कि एक खुशहाल परिवार बन चुका था।

रोहन के दोस्तों ने उसकी इस साहसी यात्रा से एक गहरा पाठ सीखा कि सच्चा साहस किसी दैत्य से लड़ने में नहीं बल्कि अपने भीतर के डर पर विजय पाने में है। गाँव वालों को भी यह भली-भांति अहसास हो गया कि जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य भौतिक धन-दौलत में नहीं वरन् उस निस्वार्थ भाव में



छिपा है जो हम दूसरों की भलाई के लिए रखते हैं। जब संकल्प व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समुदाय के हित के लिए लिया जाता है तो राह की हर बाधा अपने आप हट जाती है।

समय बीतता गया पर रोहन का वह स्वर्ण कमल सिर्फ एक फूल बनकर नहीं रहा। वह हमेशा के लिए आशा, साहस और निःस्वार्थ प्रेम का पावन प्रतीक बन गया। उसकी अलौकिक खुशबू और सुनहरी आभा उस छोटे से गाँव की मिट्टी में इस तरह रच-बस गई कि उसकी महक सदियों तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रही।

□

शाँतिवन के रक्षक

शाँतिवन नामक एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था जिसका नाम था रोहित। रोहित का गाँव बहुत ही सुंदर और हरा-भरा था और उसका नाम 'शाँतिवन' सचमुच उस गाँव की आत्मा को दर्शाता था। वहाँ बहुत सारे पेड़ थे जो गाँव के लोगों को फल, छाया, इंधन और ऑक्सीजन देते थे। शाँतिवन की हवा इतनी शुद्ध थी कि लोग गहरी साँस लेकर अपने फेफड़ों में ताज़गी महसूस करते। बरगद की ठंडी छाँव में बैठकर बुज़ुर्ग अपने दिन की शुरुआत करते थे। पेड़ों पर बैठी चिड़ियों का संगीत उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का अटूट हिस्सा था। रोहित, जो पेड़ों को अपना दोस्त मानता था, अक्सर रात के अँधेरे में जंगल की खुशबू सूँघता था। उसे पता था कि यही जंगल उनकी असली तिजोरी है जो उन्हें ज़िंदगी देती है।

एक दिन रोहित के गाँव में एक चिकनी, चमकदार कार में एक बड़ा व्यापारी जिसका नाम मिस्टर गर्ग था आया। उसने गाँव की धूल भरी पगडंडी पर इतनी तेजी से ब्रेक लगाए कि सब लोग डर गए और किसी अनहोनी की आशंका से घर के बाहर निकल आए। गाँव के लोगों को अपने सामने देखकर उसने बड़े प्यार से उनसे बातें कीं और बातों ही बातों में उन्हें बताया कि वह उनके गाँव में एक बड़ा कारखाना लगाना चाहता है लेकिन इसके लिए उसे बहुत सारे पेड़ काटने होंगे। व्यापारी की बातें बहुत मीठी थीं, जिनमें 'विकास', 'रोज़गार', और 'आधुनिकता' जैसे भारी-भरकम शब्द थे।

उसने गाँव के सबसे पुराने बरगद के पास खड़े होकर एक बड़ा-सा नक्शा खोला। उस नक्शे पर हरी-भरी जगह की बजाय, विशाल इमारतों और चमकती चिमनियों की तस्वीरें थीं। मिस्टर गर्ग ने घोषणा की, "इन बेकार पेड़ों

को हटाकर मैं यहाँ सैंकड़ों लोगों को स्थायी रोज़गार दूँगा। आपकी गरीबी हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। बस आप सब यह ज़मीन मेरे नाम कर दो। मैं तुम्हें मुँह माँगी कीमत दूँगा।"

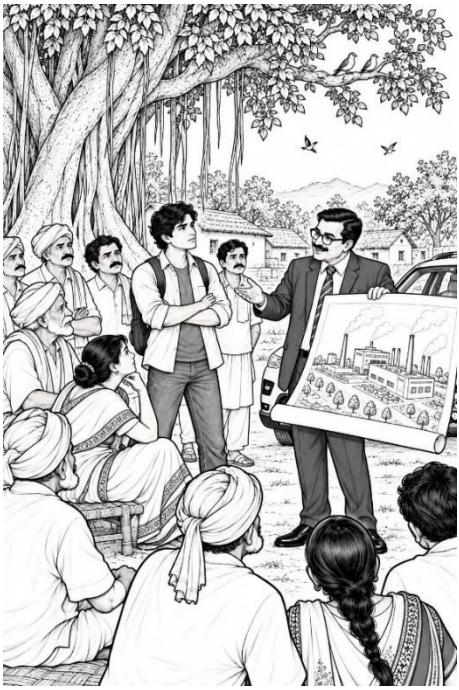

रोहित ने अचानक अपनी नज़र मिस्टर गर्ग के चमकदार जूते से हटाकर गाँव के मुखिया के चेहरे पर डाली जो मिस्टर गर्ग की हाँ में हाँ मिला रहे थे। उसके कान में तुरंत पड़ोस के 'हरियालीपुर' गाँव की दर्दनाक यादें गूँज उठीं। ठीक एक साल पहले वहाँ भी 'विकास' के नाम पर जंगल काटे गए थे। लेकिन अब वहाँ न रोज़गार था, न शुद्ध हवा। थी तो केवल खाँसी, प्रदूषण और सूखी ज़मीन। रोहन ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। यह विनाशकारी कारख़ाने की टीम पहले हरियालीपुर के पेड़ों को काटकर उसे बंजर बना चुकी है और अब वे उनके गाँव 'शांतिवन' तक भी आ पहुँचे। "मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा", रोहित ने मन ही मन प्रतिज्ञा की। यह सिर्फ पेड़ बचाने की बात नहीं थी, यह शाँतिवन की आत्मा को बचाने की लड़ाई भी थी।

परंतु गाँव के लोग व्यापारी की चिकनी चुपड़ी बातों में आते जा रहे थे। गाँव के भोले-भाले और गरीब लोगों को व्यापारी की बात ठीक लग रही थी।

उन्हें लगा कि कारखाना लगने से उन्हें रोज़गार मिलेगा और उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। पेड़ों का क्या है वे तो फिर से उग आएँगे। इसलिए बिना सोचे-समझे, बिना किसी दूरदर्शिता के उन्होंने व्यापारी को पेड़ काटने की अनुमति दे दी।

गाँव वालों ने अभी व्यापारी के नाम अपनी ज़मीन की नहीं थी लेकिन ज़ुबानी अनुमति मिलते ही, व्यापारी मिस्टर गर्ग ने तुरंत अपने मज़दूरों की टीम को गाँव भेज दिया। ये मजदूर विशाल व शोर मचाने वाली मशीनों, औजारों और तेज़ कुल्हाड़ियों के साथ गाँव में आ धमके। सबसे पहले उन्होंने गाँव की चौपाल के पास वाले पुराने बरगद के पेड़ को निशाना बनाया। यह वह पेड़ था जिसकी एक मज़बूत टहनी पर गाँव के सबसे छोटे बच्चों का रंगीन टायर वाला झूला बँधा हुआ था।

रोहित को जब पता चला तो वह भागता हुआ वहाँ पहुँचा। उसने देखा कि कुछ छोटे बच्चे जो वहाँ खेलने आए थे, डर से रो रहे हैं। रोहित ने कुल्हाड़ी लेकर खड़े मज़दूरों के सामने अपने हाथ फैला दिए। "रुक जाओ! इस पेड़ को क्यों काट रहे हो? यह हमारी बरगद की ठंडी छाँव है। यह हमारी खुशियों का पहला घर है जहाँ बच्चे इकट्ठे होते हैं! जहाँ सावन में लड़कियाँ झूला झूलती हैं। यहाँ पक्षी अपना घोंसला डालते हैं और चहचहाते हैं। यहाँ...." रोहित बोलता जा रहा था लेकिन उसकी बात कोई नहीं सुन रहा था।

रोहित को ऐसा करते देख, गाँव के कुछ बड़े-बुज़ुर्ग, जिनमें वे माता-पिता भी शामिल थे जिन्होंने रोहित को डाँटा था, वहाँ इकट्ठे हुए। एक अधेड़ किसान ने रोहित को खींचते हुए कहा, "हट जा, रोहित! अब यह ज़मीन हमारी नहीं, अब यह ज़मीन मिस्टर गर्ग की है। ये छोटी-मोटी झूले जैसी चीज़ें विकास के सामने मायने नहीं रखतीं। हमें जल्दी काम पूरा करवाना है ताकि हमारी

पहली तनख्वाह आए। पेड़ों का क्या है हम दोबारा उगा लेंगे। ज़मीन की कीमत तो कम से कम मिलेगी।"

रोहित गिड़गिड़ाया, "क्या कुछ पैसों के लिए तुम बच्चों की हँसी और चिड़ियों के घर भी बेच दोगे?"

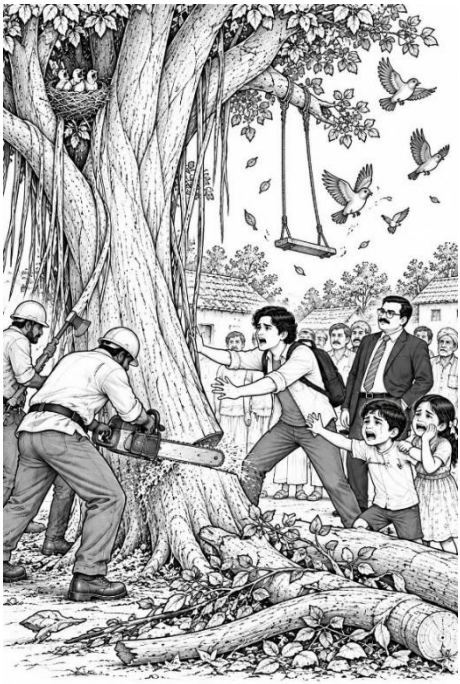

लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। एक भारी वार हुआ, और कुछ ही पलों में, बच्चों के रोने और चिड़ियों के घबराए शोर के बीच, वह बरगद का विशाल पेड़ ज़मीन पर आ गिरा। 'ठंडी छाँव' देने वाला वो सबसे पुराना पेड़ जब बड़े शोर के साथ ज़मीन पर गिरा तो लगा जैसे धरती ने गहरी कराह ली हो। बच्चों का प्रिय झूला टूटकर धूल में मिल गया और उस पेड़ पर बैठे दर्जनों पक्षियों के घोंसले उजड़ गए। कुछ पक्षी पेड़ की टहनियों के नीचे दबकर मर गए। कितने ही पक्षियों के अंडे टूट गए। यह विनाश की पहली और तीखी झलक थी। लेकिन गाँव वालों ने लालच और आशा के अंधकार में अपनी आँखें मूँद ली थीं।

रोहित ने हाथ जोड़कर, पैरों में गिरकर लोगों को फिर समझाने की कोशिश की। उसने बार-बार कहा कि पेड़ हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। "ये सिर्फ लकड़ी नहीं हैं, ये हमारे शांतिवन की धड़कन हैं! वे

हमें ऑक्सीजन देते हैं, फल देते हैं और हमें छाया देते हैं। अगर हम पेड़ काट देंगे तो हमारा जीवन बहुत ही मुश्किल हो जाएगा। हमें यह रोज़गार कुछ ही समय में ऐसी बीमारी देगा जिसका कोई इलाज नहीं होगा!"

लेकिन गाँव के लोगों ने 'तत्काल लाभ' के लालच में उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। बूढ़े-बुजुर्गों ने तर्क दिया, "तू बच्चा है, रोहित, तू रोज़ी-रोटी की कीमत नहीं जानता।"

व्यापारी ने दानव की तरह पेड़ कटवाने शुरू कर दिए। एक साल के अंदर ही गाँव ठूँठ होना शुरू हो गया। और फिर वही हुआ जो होना चाहिए था।

फलस्वरूप शांतिवन की हवा जो पहले इत्र की तरह महकती थी, अब गर्म और घुटन भरी हो गई थी। बहुत से लोगों को अस्थमा हो गया। बच्चे हर रोज़ बीमार रहने लगे। गाँव में खूब गर्मी पड़ने लगी। घर के अंदर की दीवारें भी जलने लगी थीं। लोग हर समय पसीने से तर रहते। सबसे बुरा हाल बुजुर्गों का हुआ जो बरगद की ठंडी छाँव में विश्राम करते थे। अब थकान ने उनको घेर लिया था और वे दिन-रात खाँसते रहते थे। अब क्या हो सकता था, तीर हाथ से निकल चुका था।

शांतिवन अब पहले जैसा हरा-भरा नहीं था। जहाँ कभी पत्तों की शीतल हरियाली थी, वहाँ अब केवल धूल और टूटे ठूँठों का वीरान मैदान पसरा था। उसकी आँखों में उदासी और गुस्सा था। लोग बीमार और हताश थे, जैसे गाँव की आत्मा मर चुकी हो। रोहित ने गाँव के लोगों से गहरी निराशा के साथ कहा, "आपने मेरी बात न मानकर बहुत भारी गलती की है। यह घाव गहरा है लेकिन चिंता मत कीजिए और मेरी बात ध्यान से सुनिए। पश्चाताप में समय बर्बाद करने के बजाय अब हमें पेड़ उगाने के लिए काम करना चाहिए। हमें अपने

गाँव को फिर से हरा-भरा बनाना चाहिए। इसके लिए मुझे आप सबके हाथों और संकल्प की ज़रूरत है।"

गाँव के लोगों ने रोहित की बात पर गहरे विश्वास और शर्मिंदगी के साथ सहमति जताई। सबने मिलकर एक मीटिंग की और दृढ़ फैसला किया कि अब वे अपनी ज़मीन नहीं बेचेंगे। जो पेड़ कट चुके हैं उनकी भरपाई तो मुश्किल है लेकिन नए पेड़ जरूर लगाए जाएँगे। गाँव वालों की एकता के सामने मिस्टर गर्ग को भी वापस जाना पड़ा क्योंकि कानूनी तौर पर ज़मीन अभी भी किसानों के नाम पर ही थी।

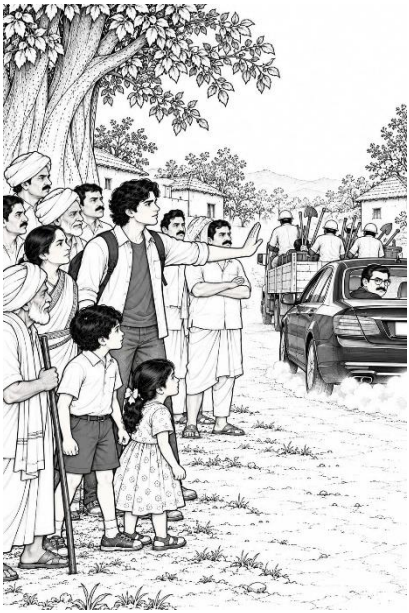

किसानों ने अपनी पिछली स्वार्थ भरी गलती को धोने के लिए मिलकर पेड़ लगाने का काम शुरू किया। रोहित ने भी इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने अपने बचपन के दोस्तों जो अब अपनी भूल स्वीकार कर चुके थे को साथ लिया और एक छोटे से सेनापति की तरह काम करता रहा। उसने पेड़ लगाने के लिए जगह तैयार की। बाज़ार से बीज और खाद लेकर आया। सुबह की पहली किरण से लेकर देर शाम तक, गाँव की हर उम्र के लोग मिट्टी में अपने सपने बोते रहे। यह केवल वृक्षारोपण नहीं था, यह प्रकृति के साथ टूटे रिश्ते को फिर से जोड़ने का सामूहिक यज्ञ था। रोहित ने अपने साथियों की मदद से गाँव में ढेर सारे पेड़ लगाए और उनकी देखभाल की।

धीरे-धीरे गाँव की दशा सुधरने लगी। पहली बारिश एक वरदान की तरह आई, जिसने छोटे पौधों को जीवन दिया। गाँव वालों के मुरझाए चेहरों पर

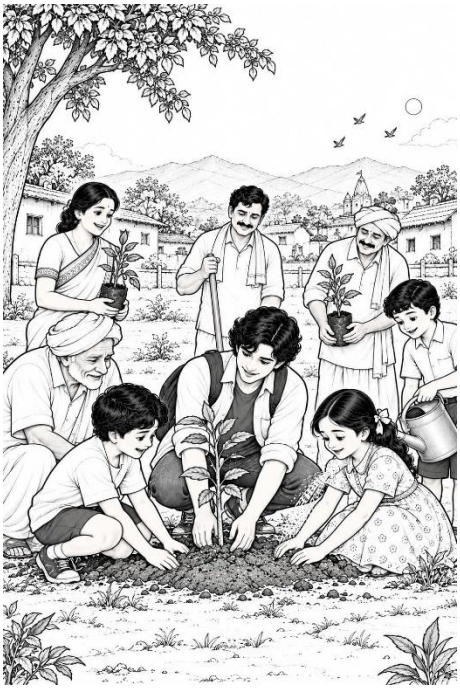

पहली मुस्कान आई। कुछ समय बाद गाँव के लोगों ने देखा कि उनका गाँव फिर से हरा-भरा हो गया है। पेड़ बड़े होने लगे थे और गाँव की सुंदरता फिर से बहाल होने लग गई थी। गाँव के लोगों ने कृतज्ञता के साथ रोहित को धन्यवाद दिया और कहा कि वह एक सच्चा 'पर्यावरणविद् और उद्धारकर्ता' है। अब गाँव की गलियों और सड़कों पर तो हरे-भरे पेड़ थे ही, हर घर के आँगन में भी जीवन का उत्सव था। उन पेड़ों पर जब पक्षी चहचहाते तो ऐसा लगता था जैसे कह रहे हों, "शुक्रिया रोहित, शुक्रिया रोहित..."

□

राजकुमारी विदूषी का स्वयंवर

एक समय की बात है। एक विशाल और समृद्ध राज्य था जिसके राजा की एक सुंदर और असाधारण रूप से बुद्धिमान बेटी थी जिसका नाम ही राजा ने राजकुमारी विदूषी रखा था। वह अपने पिता की एकमात्र संतान थी और राजा उसे केवल प्यार ही नहीं करता था बल्कि अपने राज्य का भविष्य भी मानता था। विदूषी का सौंदर्य किसी कल्पना से कम न था। उसकी आँखें इतनी गहरी थीं कि उनमें ज्ञान का तेज झलकता था। और मुखमंडल शाँत तथा दृढ़ संकल्प से भरा प्रतीत होता था। राजकुमारी विदूषी ने शास्त्रों, कलाओं और शासन-प्रणाली में महारत हासिल कर रखी थी जिसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी।

जब विवाह की बात आई तो राजा ने अपनी बेटी के लिए स्वयंवर का आयोजन करने का निर्णय लिया। वह जानता था कि विदूषी के लिए धन या शक्ति मायने नहीं रखती बल्कि बुद्धि का तेज मायने रखता है। राजा ने अपनी बेटी से कहा, "मेरी प्रिय बेटी, तुम्हारे लिए मैं एक स्वयंवर का आयोजन करना चाहता हूँ। तुम्हें बहुत सोच-समझ कर अपने जीवनसाथी का चयन करना होगा क्योंकि तुम्हारा चयन ही इस राज्य के भविष्य की दशा और दिशा तय करेगा।"

राजकुमारी सोच में पड़ गई। कुछ देर बाद उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मैं अपने जीवनसाथी का चयन करने के लिए तैयार हूँ लेकिन मैं एक अनोखी शर्त रखूँगी।"

"कैसी शर्त पुत्री...!" पिता ने हैरान होकर पूछा।

"मेरी शर्त यह है पिताजी कि जो व्यक्ति मुझे अपनी शक्ति से नहीं बल्कि ज्ञान और विवेक के बल पर वाद-विवाद में हराएगा, वही मेरा जीवन-साथी बनेगा। मैं केवल राजा या योद्धा नहीं बल्कि बुद्धि का अधिपति चाहती हूँ।"

पुत्री की बात सुनकर राजा पिता बहुत खुश हुआ। साथ ही उसे अपनी पुत्री पर गर्व भी हुआ। राजा ने अपनी बेटी की शर्त मान ली और राजकुमारी की इच्छा अनुसार 'विवेक स्वयंवर' का आयोजन किया। 'विवेक स्वयंवर' के लिए महल के मुख्य सभाकक्ष को दुल्हन की तरह सजाया गया था। विशाल गुंबदों से लटकते झूमर सोने की आभा बिखेर रहे थे। हवा में चंदन, गुलाब तथा केवड़े की धीमी सुगंध तैर रही थी। दूर-दूर के राज्यों से आए राजकुमारों के लिए बहुमूल्य आसनों की लंबी कतारें सजाई गई थीं।



ये राजकुमार अपने राज्यों की शान दिखाने के लिए भव्य, खूबसूरत और महंगे वस्त्रों तथा आभूषणों से सजे हुए थे और वे सभी अपने रजत सिंहासन पर विराजमान थे। उनके स्वागत और सम्मान के लिए राजा ने सर्वोत्तम व्यंजनों, दुर्लभ फलों और सुगंधित पेय पदार्थों का भव्य प्रबंध किया था ताकि यह

स्वयंवर मात्र एक प्रतियोगिता न लगे बल्कि एक शाही उत्सव लगे। इसका कारण यह भी था कि यदि कोई राजकुमार राजकुमारी विदुषी की शर्तों पर खरा उतरता है तो राजकुमारी का विवाह होना भी निश्चित था।

ठीक समय पर राजकुमारी विदुषी ने सभाकक्ष में प्रवेश किया। उसने गहरे नीले रंग का एक मखमली लहंगा पहना हुआ था जिस पर बारीक सोने के धागों से 'ज्ञान चक्र' के जटिल रूपांकन बने थे। उसने भारी सोने के आभूषणों के बजाय, पवित्र श्वेत मोतियों की एक सरल माला और माथे पर तेजस्विता से चमकता हीरे का टीका धारण किया था जो उसकी सादगी और उसकी आंतरिक चमक को दर्शाता था। जैसे ही वह अपने उच्च आसन पर विराजमान हुई सभी राजकुमारों की निगाहें उसकी अलौकिक सुंदरता और आत्मविश्वास पर टिक गईं लेकिन विदूषी की आँखें केवल उस व्यक्ति को तलाश रही थीं जो उसके ज्ञान को चुनौती दे सके।

स्वयंवर के पहले चरण में तीन प्रसिद्ध राजकुमार आए जो अपनी धन-संपत्ति और सैन्य शक्ति पर गर्व करते थे।

शक्ति का प्रतीक पहला राजकुमार, वीरेंद्र आत्मविश्वास से भरकर सामने आया।

राजकुमारी विदूषी ने पूछा, "राजकुमार वीरेंद्र, आप कहते हैं कि शक्ति ही अंतिम सत्य है। तो बताइए, ऐसी कौन सी शक्ति है जिसे संसार का कोई हथियार नष्ट नहीं कर सकता?"

राजकुमार वीरेंद्र ने तुरंत जवाब दिया, "राजकुमारी, वह शक्ति मेरी सेना की तलवारें और मेरे दुर्गों की दीवारें हैं जो लोहे और पत्थरों से बनी हैं!"

राजकुमारी मुस्कुराई और बोली, "क्षमा करें, राजकुमार। लोहे को जंग और दीवारों को समय नष्ट कर देता है।"



धन का प्रतीक दूसरा राजकुमार, धनंजय सोने और रत्नों से लदा हुआ बैठा था।

राजकुमारी विदूषी ने पूछा, "राजकुमार धनंजय, आप धन को सर्वोपरि मानते हैं। तो बताइए वह कौन सा खजाना है जिसे न चोर चुरा सकता है, न आग जला सकती है?"

धनंजय होठों ही होठों में मुस्कुराया और उसने तुरंत जवाब दिया, "राजकुमारी, वह खजाना बरसों से मेरे महल के तहखानों में बंद ह...हीरे-जवाहरात और सोना-चाँदी जिसे हज़ारों सैनिक और सात तालों से सुरक्षित किया गया है! वहाँ इतनी सुरक्षा है कि उस खजाने तक कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता।"

राजकुमार धनंजय का जवाब सुनकर राजकुमारी भी मन ही मन हँसी और बोली, "माफ कीजिए राजकुमार, चोर दरवाज़ा तोड़ सकता है और विपत्ति में सेवक विश्वासघात कर सकते हैं। आपका धन भौतिक है इसलिए कोई भी आपसे ज्यादा शक्तिशाली राजा उसे चुरा सकता है।"

सौंदर्य का प्रतीक तीसरा राजकुमार, शाँतनु अपनी रूप-सज्जा पर गर्व किए गद्दी पर विराजमान था।

राजकुमारी विदूषी ने पूछा, "राजकुमार शाँतनु, आप सुंदरता को ही जीवन मानते हैं। तो बताइए, वह कौन सी सुंदरता है जो बुढ़ापे से भी नहीं मुरझाती?"

राजकुमार शाँतनु को राजकुमारी का प्रश्न कुछ बचकाना सा लगा। उसने मन ही मन सोचा कि राजकुमारी की चर्चा तो विदुषी के रूप में है लेकिन उन्होंने सवाल तो बहुत ही साधारण सा पूछा है। राजकुमार शाँतनु को पूरा विश्वास हो गया कि उनके जवाब से राजकुमारी पूरी तरह संतुष्ट हो जाएँगी और उन्हीं को जयमाला पहनाएँगी।

राजकुमार शाँतनु ने दृढ़ता से जवाब दिया, "राजकुमारी, मैं समझता हूँ कि आपका प्रश्न बहुत ही साधारण सा है। वो मेरे उद्यान के दुर्लभ फूलों की कलाकृतियाँ हैं जो मेरे राजभवन के विद्वान चित्रकारों ने बनाई हैं और सदियों से दीवारों पर टिकी हुई हैं! ये सभी कलाकृतियाँ आज भी बिल्कुल नई जैसी हैं।"

राजकुमारी ने विनम्रता से कहा, "राजकुमार शाँतनु, मुझे यह बताते हुए बहुत अफसोस हो रहा है कि आपकी बात में दम नहीं है। क्योंकि फूल चाहे उद्यान के हों या कलाकृतियों के एक न एक दिन मुरझा ही जाते हैं। कलाकृतियों पर धूल जम जाती है। रंग फीके पड़ जाते हैं। सभी भौतिक वस्तुओं और शरीर की सुंदरता क्षणभंगुर होती है, राजकुमार।" राजकुमारी का जवाब सुनकर राजकुमार मुँह लटकाए अपने आसन पर बैठ गया।

सभाकक्ष में देर तक वाद-विवाद होता रहा लेकिन कोई भी व्यक्ति या राजकुमार राजकुमारी को अपने वाद-विवाद में हरा नहीं पाया। सामने सिंहासन पर विराजमान राजा अब चिंतित हो गए।

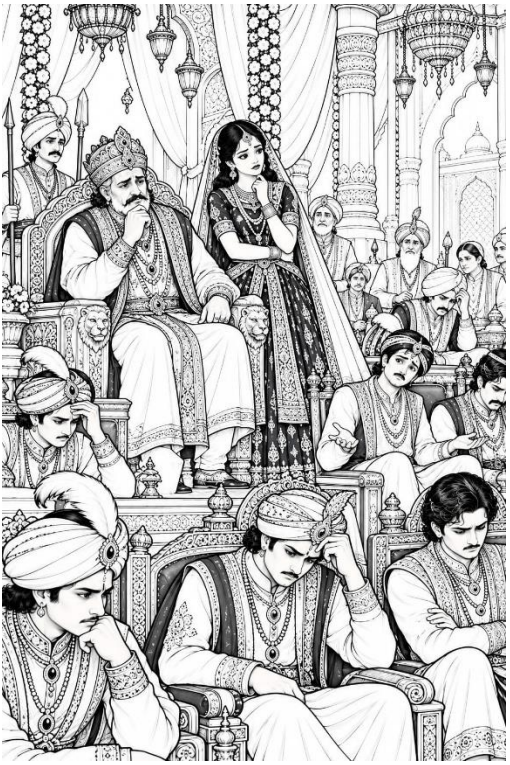

लेकिन तभी एक अत्यंत साधारण से दिखने वाले व्यक्ति ने जो कि प्रजा के साथ स्वयंवर देखने के उद्देश्य से पंडाल में मौजूद था ने हिम्मत कर स्वयंवर में शामिल होने का फैसला किया। उस युवक का नाम अभिजीत था। वह पुराने और साधारण से वस्त्रों में अवश्य था लेकिन उसकी आँखों में अथाह ज्ञान का प्रकाश झिलमिलाता जान पड़ता था।

राजा से अनुमति पाकर वह राजकुमारी के साथ वाद-विवाद में शामिल हुआ। एक पल को राजकुमारी विदुशी भी चौंक गई।

राजकुमारी ने उस गरीब युवक से पूछा, "क्या आप मुझे बता सकते हैं कि जीवन में सबसे बड़ा धन क्या है?"

अभिजीत ने विनम्रतापूर्वक दृढ़ता से जवाब दिया, "जीवन में सबसे बड़ा धन ज्ञान है। ज्ञान ही एकमात्र खजाना है, जिसे न चोर चुरा सकता है, न आग जला सकती है और जो दूसरों को जितना अधिक बाँटा जाए, उतना ही बढ़ता जाता है। ज्ञान ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो हमें जीवन में आगे बढ़ने में मदद करती।"

राजकुमारी कुछ प्रभावित हुई और उसने उस व्यक्ति से फिर पूछा, "क्या आप मुझे बता सकते हैं कि जीवन में सबसे बड़ा शत्रु कौन है?"

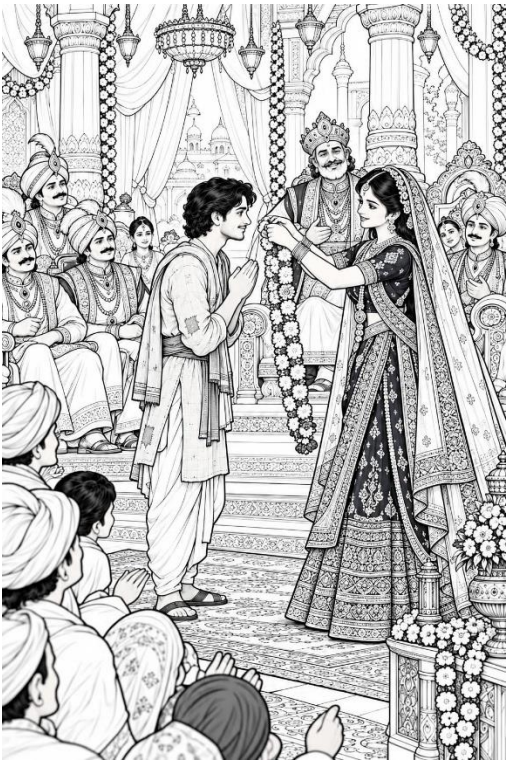

अभिजीत ने जवाब दिया, "जीवन में सबसे बड़ा शत्रु हमारा अपना अहंकार है। अहंकार एक अदृश्य दीवार है जो मनुष्य को सत्य और विनम्रता से दूर करती है। अहंकार हमें जीवन में गलत रास्ते पर ले जाता है और हमें अपने लक्ष्यों से दूर करता है।"

राजकुमारी विदुषी युवक के जवाब से दोबारा प्रभावित हुई और उसने फिर पूछा, "मुझे लगता है कि इस प्रश्न का उत्तर आप ठीक से नहीं बता पाएंगे, फिर भी मैं पूछती हूँ।"

"पूछिए राजकुमारी जी।" युवक ने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि जीवन में सबसे बड़ा मित्र कौन है?"

अभिजीत ने जवाब दिया, "राजकुमारी जी, जीवन में सबसे बड़ा मित्र हमारा अपना विवेक है। विवेक, ज्ञान और अनुभव का वह संतुलन है जो हमें हर परिस्थिति में शाँत और सही निर्णय लेने में मदद करता है। विवेक हमें

जीवन में सही और गलत के बीच का अंतर समझने में मदद करता है और हमें अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने में मदद करता है।"

राजकुमारी विदूषी के मुख मंडल पर मुस्कराहट तैर गई। उसने मुस्कुरा कर अपने राजा पिता की ओर देखा। पिता समझ गए। उन्होंने अपनी बेटी की पसंद को सहर्ष मान लिया और उस बुद्धिमान व्यक्ति को अपना दामाद बनाने की सहमति दी। ढोल नगाड़ों और शहनाइयों के बीच राजकुमारी विदूषी ने वरमाला आगे बढ़ाई और अभिजीत को अपना जीवनसाथी चुन लिया।

राजा ने अभिजीत को अपने राज्य का सबसे प्रमुख सलाहकार नियुक्त किया और राज्य के एक बड़े हिस्से का कार्यभार सौंप दिया। राजकुमारी विदूषी और अभिजीत ने मिलकर कई वर्षों तक ज्ञान, न्याय और विवेक के साथ शासन किया जिससे राज्य में अभूतपूर्व समृद्धि और शाँति आई।

□

मेरी पहली कमाई

हिमाचल की ऊँची चोटियों की गोद में बसा था वह छोटा-सा गाँव, जहाँ हरी-भरी वादियाँ मानो नीले आकाश से बातें करतीं और ठंडी हवाएँ पेड़ों की पत्तियों से सरसराती हुई गुज़रतीं। सुबह की पहली किरणें जब बर्फीली चोटियों पर पड़तीं तो पूरा गाँव सुनहरी चादर ओढ़ लेता। यहीं रहती थी रिया, चौदह बरस की एक किशोरी, जिसके काले बालों में पहाड़ी फूलों की महक बसी थी और आँखों में सपनों का अथाह सागर लहराता था। लेकिन गरीबी की ठंडी साँसें उसके सपनों को हर रोज़ ठिठुराती रहतीं। पिता राम सिंह मजूरी करते, खेतों में हल चलाते मगर कभी बे-मौसम बारिश की मार तो कभी सूखे का कहर उनकी मेहनत को बंजर बना देता।

माँ सरिता, घर की चारदीवारी में चूल्हा जलाती, रोटियाँ सेकती पर कई रातें ऐसी भी आतीं जब आटे के कनस्तर खाली रहते और परिवार भूखी आँखों से सितारों को ताकते हुए सो जाता। छोटा भाई रवि, सिर्फ सात साल का, स्कूल की किताबों का सपना देखता मगर कॉपी-किताब का खर्च उसके नन्हें कंधों पर बोझ बन जाता।

रिया का दिल प्रकृति से इतना जुड़ा था कि वह जंगलों में भटकते हुए खुद को जीवंत महसूस करती। वहाँ की सूखी पत्तियाँ, टूटी टहनियाँ, फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़े और कचरे की बिखरी चीजें उसके लिए खजाना होतीं। इनसे वह अपने हाथों के जादू से नई दुनिया रचती। कभी पीपल के बड़े-बड़े पत्तों से पत्तल और दोने बनाती, जो खाने में इस्तेमाल होते और मिट्टी में घुल जाते तो कभी जूट की पुरानी रस्सियों से मजबूत टोकरियाँ बुनती जो फल-सब्जी रखने के काम आतीं। कभी सूखी लकड़ियों से छोटी-सी नाव तराशती,

जो नदी के पानी में तैरती और बच्चों को खुशी देती। कभी वो फटे कपड़ों से रंग-बिरंगी गुड़ियाँ सिलती, जिनके चेहरे पर मुस्कान ऐसी कि देखने वाले का दिल पिघल जाए और कभी-कभी टहनियों से नन्हीं झोंपड़ियाँ खड़ी करती जो खिलौना घर बन जातीं। ये सब चीजें न सिर्फ सुंदर थीं बल्कि पर्यावरण की रक्षा का संदेश भी देती थीं कि कचरा भी उपयोगी हो सकता है। प्लास्टिक की जगह प्राकृतिक सामग्री से जीवन हरा-भरा रह सकता है। रिया रातों में चुपके से



सोचती, "अगर इनसे कुछ कमाई हो जाए तो शायद घर की दीवारों की दरारें भर जाएँ, कनस्तर में आटा भर जाए और भाई की आँखों में स्कूल का सपना चमके।"

एक दिन गाँव में वार्षिक मेला लगा। हवा में मिठास घुली हुई थी। दूर-दूर से लोग आए थे। चारों तरफ हँसी-ठिठोली, मिठाइयों की खुशबू और रंग-बिरंगे स्टॉलों का शोर छाया हुआ था। रिया के मन में भी हलचल हुई। एक दिन उसने अपनी माँ से कहा, "माँ, मैं अपने बनाए खिलौने मेले में बेचूँ...? शायद कोई पसंद कर ले और हमें कुछ पैसे मिल जाएँ।"

माँ का चेहरा चिंता की रेखाओं से भर गया। "बेटी, तू अभी इतनी छोटी है। लोग क्या कहेंगे? अगर न बिके तो दिल अलग टूटेगा तेरा। और फिर, लड़की होकर बाहर दुकान लगाना...!" मगर रिया की आँखों में जो जिद और

उम्मीद की चमक थी उसने माँ का दिल पिघला दिया। "ठीक है, बेटी जा लेकिन सावधानी से।"



रिया ने एक पुरानी बाँस की टोकरी में अपने खिलौने सजाए। हरे पत्तों की नावें, कपड़े की मुस्कुराती गुड़ियाँ, सूखी टहनियों की झोंपड़ियाँ, जूट की छोटी-छोटी टोकरियाँ और पीपल के पत्तों से बने दोने। उसने टोकरी को सिर पर रखा और मेले की भीड़ में एक शाँत कोने में जा बैठी। उसका दिल इतनी तेजी से धड़क रहा था। ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ा तूफान आने वाला है। हाथों में पसीना आ रहा था और आँखें हर आने-जाने वाले पर टिकी थीं।

मेले में लोग आते-जाते रहे। कुछ ने नज़र डाली मगर आगे बढ़ गए। कुछ ने रुककर खिलौनों के बारे में बातचीत की। रिया प्यार से सब बताती रही। मेले में खूब रौनक थी लेकिन रिया का दिल जैसे इस मेले की चहल-पहल से कटा हुआ था। उसका दिल घबराने लगा। "क्या कोई नहीं खरीदेगा?" अभी वह सोच ही रही थी कि तभी एक बूढ़ी अम्मा ठिठकीं। उनके चेहरे पर झुर्रियाँ थीं लेकिन आँखों में दादी-सी ममता। उन्होंने कपड़े की गुड़िया को हाथ में उठाया, उसे घुमाया-फिराया और बोलीं, "अरी बिटिया, ये गुड़िया तो मानो

जीवंत है! इसके चेहरे पर मुस्कान ऐसी कि मुझे मेरी पोती की याद आ गई। कितने में देगी?"

रिया की आवाज़ काँप गई, "बस पचास रुपये, अम्मा।" बूढ़ी ने अपनी थैली से दस-दस के पाँच सिक्के निकाले, रिया के हाथ में थमाए और गुड़िया लेकर चली गई। रिया ने सिक्कों को छुआ...ठंडे, चमकदार और इतने भारी कि लगा जैसे घर का सारा बोझ उतर गया हो। ये थे उसकी पहली कमाई के सिक्के! उसका चेहरा लाल हो उठा, आँखें नम हो गईं। यह महज पैसे नहीं बल्कि उसके सपनों की पहली उड़ान थी।

बूढ़ी अम्मा के जाते ही उसकी चीज़ों की तारीफ़ की बातें मेले में फैलने लगीं। पास खड़ी एक नन्ही बच्ची ने अम्मा के हाथ में चमकती गुड़िया देखी तो उसकी आँखें फैल गईं। वह अपनी माँ का हाथ झटककर दौड़ पड़ी और जिद करने लगी, "मम्मी, मुझे भी वैसी ही गुड़िया चाहिए! वो दीदी ने बनाई है न?" बच्ची की माँ मुस्कुराते हुए रिया की टोकरी तक आई और गुड़िया खरीद ली। लोग आपस में फुसफुसाने लगे, "वहाँ एक छोटी लड़की है जो कचरे से ऐसे सुंदर खिलौने बना रही है!"

मेले में बात फैलते ही एक मास्टरजी आए जिन्होंने लकड़ी की नाव देखी। "वाह, बेटी! ये नाव तो बच्चों को सिखाएगी कि कचरे से भी रचनात्मकता निकाली जा सकती है। सूखी लकड़ियाँ बीनकर ऐसी सुंदर चीज़ बनाना....यह तो पर्यावरण का सबक है।" उन्होंने सौ रुपये दिए और नाव ले ली।

फिर एक स्कूल की अध्यापिका आईं जिन्होंने तिनकों की झोंपड़ी को सराहा। "ये खिलौने बच्चों को बताते हैं कि प्लास्टिक का कचरा धरती को नुकसान पहुँचाता है जबकि प्राकृतिक चीजों से बनी ये झोंपड़ियाँ मिट्टी में मिल जाती हैं। कितनी खूबसूरत सोच है तेरी!" उन्होंने उत्सुकता से पूछा, "बेटी, तू इतने सुंदर खिलौने कैसे बना लेती है?"

रिया ने शर्माते हुए बताया, "बस, जंगल से सामान लाती हूँ और हाथों से आकार देती हूँ। कभी रंगों से सजाती हूँ, कभी धागों से बाँधती हूँ।" अध्यापिका ने मुस्कुराकर कहा, "चल, मैं तुझे कुछ टिप्स देती हूँ। अगर तू टहनियों को पहले पानी में भिगो ले तो वे ज्यादा लचीली हो जाती हैं और टूटती नहीं। और पत्तों पर प्राकृतिक रंग लगाकर और चमकदार बना सकती हो।" रिया की आँखें चमक उठीं। अध्यापिका को झोंपड़ी खरीदते देखकर मेले में अन्य लोग भी अब उसकी छोटी सी दुकान की तरफ आकर्षित होने लगे थे।



एक बाप अपनी बेटी के साथ आया, झोंपड़ी ली और बोला, "बेटी, तेरी मेहनत गाँव की लड़कियों को नया रास्ता दिखाएगी। अब बच्चे इनसे खेलेंगे न कि जहरीले प्लास्टिक से।" शाम ढलते-ढलते रिया ने नौ सौ पचास रुपये जोड़ लिए। उसके लिए ये पैसे किसी राजा के खजाने से कम न थे। मेहनत की पहली मिठास जो उसके दिल को भर रही थी।

घर लौटते हुए रिया के मन में विचारों का एक अनवरत झरना सा बह रहा था। वह भली-भाँति जानती थी कि उसके हाथों में थमे ये पैसे सिर्फ उसकी मेहनत के नहीं बल्कि पूरे गाँव के स्नेह और सहयोग की पूँजी थे।

जैसे ही उसने घर की दहलीज़ पर कदम रखा, सबसे पहले अपनी माँ को पुकारा। माँ के सामने आते ही उसने सारे पैसे उनके हाथ में रख दिए और भावुक स्वर में बोली, “माँ, मेरी पहली कमाई...” ये शब्द सुनते ही माँ की आँखों से ममता के अश्रु छलक पड़े। उन्होंने बिना कुछ कहे अत्यंत वात्सल्य से रिया को गले से लगा लिया। उस एक आलिंगन में जैसे दुनिया भर का सुकूँ सिमट आया था।

अगले दिन उसने छोटे भाई रवि की स्कूल की किताबें और कॉपियाँ खरीदीं। रवि की आँखें खुशी से चमक उठीं, "दीदी, अब मैं पढ़ सकूँगा!" बचे पैसों से रिया ने कुछ फलदार पेड़ों के बीज खरीदे। उसने गाँव के बच्चों को इकट्ठा किया जिनके छोटे-छोटे हाथ और उत्सुक आँखें थीं।

"चलो, जंगल में पौधे लगाएँगे। ये बीज उगेंगे, फल देंगे और हमारा गाँव हरा रहेगा।" बच्चे उसके साथ चले, मिट्टी खोदी, बीज बोए और पानी डाला। रिया ने उन्हें सिखाया, "कचरा फेंकना नहीं, उससे खिलौने बनाना। धरती माँ को साफ रखना, तभी वह हमें कुछ देगी।"

उसकी छोटी-सी कोशिश ने लहर पैदा कर दी। गाँव के कुछ और बच्चे जुड़े, वे भी कचरे से खिलौने बनाने लगे। जंगल में नए पौधे उगने लगे, कचरे के ढेर कम होने लगे। रिया भी अब स्कूल जाने लगी, जहाँ अध्यापिका ने उसे और भी कई प्रकार के टिप्स दिए और बताया कि कैसे प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से रंग बनाएँ, कैसे डिजाइन बेहतर करें।

समय जैसे उड़ने लगा। स्कूल के बच्चे रिया की देखा-देखी खिलौने बनाना सीखने लगे। फलस्वरुप गाँव में एक छोटी-सी कार्यशाला बन गई जहाँ युवा बेरोजगार भी शामिल होकर पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाने लगे।

रिया की पहली कमाई कोई साधारण कमाई न थी। यह एक ऐसी लौ थी जो गरीबी की अँधेरी रात में चमकी और पूरे गाँव को रोशन कर गई। इसने

सिखाया कि मेहनत और नेक इरादों से न सिर्फ परिवार उबर सकता है बल्कि समाज में भी बदलाव लाया जा सकता है। युवा बेरोजगारों को रोजगार मिला, बच्चे पर्यावरण का महत्व समझने लगे।



रिया अब बड़ी हो गई है लेकिन उसकी कहानी गाँव की हर लड़की के दिल में बसती है कि सपने जंजीरों में नहीं बंधते, वे उड़ान भरते हैं जब हाथ मेहनत से जुड़ते हैं। आज रिया का गाँव स्वच्छ और हरा-भरा है, नदियाँ साफ बहती हैं। बच्चे मुस्कुराते हुए स्कूल जाते हैं, मिलजुलकर खेलते हैं। और हर चेहरा उस नन्हीं किशोरी की हिम्मत का कर्जदार है जिसने अपनी छोटी-सी शुरुआत से बड़े बदलाव की नींव रखी।

□

नम्रता की ताकत

हिमालय की तलहटी में बसा था वह छोटा-सा गाँव जहाँ हरी-भरी घाटियाँ और दूर-दूर तक फैले जंगल मानो बच्चों की कहानियों से निकलकर जीवंत हो उठे हों। गाँव के बीचों-बीच एक प्राचीन मंदिर भी था जिसकी घंटियों की ध्वनि हवा में घुलकर हर दिल को शाँति देती थी। मंदिर के ठीक पास एक बड़ा तालाब था जिसमें पानी इतना साफ और शाँत था कि आसमान का नीला रंग उसमें उतर आता और मछलियाँ तैरती हुईं यूँ लगतीं जैसे सपनों में उड़ रही हों। सुबह की धूप में तालाब चमकता और शाम को चाँद की किरणें उसमें



नहातीं। लेकिन इस शाँत पानी में कभी-कभी छोटे-छोटे लहरें उठतीं जो बतातीं कि शाँति के नीचे भी एक अनजानी ताकत छिपी है।

उस दिन, तालाब के किनारे पर बैठा था नौ साल का छोटा-सा लड़का, नीरज। उसके मन में विचारों का तूफान भरा हुआ था। वह इतना उदास था कि उसके कंधे झुके हुए थे और आँखें नीचे की ओर टिकी हुईं। बच्चे अक्सर खुद की तुलना दुनिया से करते हैं। वे महसूस करते हैं कि वे छोटे हैं, कमजोर हैं और सब कुछ उनसे बड़ा है। नीरज को भी यही लगता

था। वह सोचता, "मैं इतना छोटा क्यों हूँ? पेड़ मुझसे कितने ऊँचे हैं, पहाड़ तो आसमान छूते हैं, नदियाँ तेज बहती हैं, बादल उड़ते हैं और आकाश अनंत। माँ-पापा मुझसे बड़े हैं, मास्टर जी की आवाज़ इतनी भारी और पड़ोस के चाचा जी तो इतने मजबूत कि सिर पर भारी बोझ उठा लेते। मैं तो बस... एक छोटा-सा बच्चा हूँ जो कुछ नहीं कर सकता।"

वह पानी में अपना प्रतिबिंब देख रहा था... छोटा-सा चेहरा, पतली बाहें और आँखों में उदासी की छाया। बच्चे का मन ऐसा ही होता है। वे अपनी कमियों को बड़ा करके देखते हैं और खुद को अकेला महसूस करते हैं जैसे दुनिया उन्हें छोड़कर आगे निकल गई हो।

अचानक हल्के कदमों की आहट हुई। एक बुजुर्ग आदमी, सफेद दाढ़ी और झुर्रियों वाले चेहरे पर मुस्कान लिए, नीरज के पास आकर बैठ गया। उसकी आँखें अनुभव से भरी थीं जैसे उन आँखों ने जीवन की सारी लहरें देखी हों। "बेटा, तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो? तुम्हारा चेहरा इतना उदास क्यों है? क्या कोई बात है जो तुम्हारे मन को कुरेद रही है? मुझे पता है बच्चे का मन नदी जैसा होता है कभी शाँत, कभी उछाल मारता। इसलिए अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी बात सुन सकता हूँ...तुम्हारी उलझन सुलझा सकता हूँ।"

नीरज ने ऊपर देखा, थोड़ा हिचकिचाया लेकिन बुजुर्ग की दयालु आवाज़ ने उसके दिल का द्वार खोल दिया। बच्चे विश्वास जल्दी करते हैं, खासकर जब कोई उन्हें बिना डाँटे सुने। "दादा जी, मैं सोच रहा हूँ कि मैं इतना छोटा और कमज़ोर क्यों हूँ। सब मुझसे बड़े हैं...ताकतवर, गुस्सैल, ऊँचे और मोटे। मैं क्या कर सकता हूँ? मैं तो बस खेलता हूँ, गिरता हूँ और रोता हूँ। हर कोई मुझे डाँटकर चला जाता है..." नीरज बोलता जा रहा था।

बुजुर्ग ने हल्के से हँसकर नीरज के कंधे पर हाथ रखा और स्नेह पूर्वक कहा, "अरे बेटा, छोटा होना कोई कमज़ोरी नहीं। देखो न, तुम्हारे पैर पर चढ़ रही यह चींटी...कितनी नन्हीं है लेकिन क्या ताकत है इसमें! यह अपने से कई गुना वजन उठाकर ले जाती है। महल जैसा बड़ा घर बना लेती है। और वहाँ



मंदिर की मुंडेर पर बैठी चिड़िया, तुमसे छोटी है लेकिन उड़ सकती है, गा सकती है। और फिर तुम अकेले छोटे नहीं हो। यह घास तुमसे भी ज्यादा छोटी है लेकिन उसने कभी शिकायत नहीं की। इसकी छोटी-छोटी जड़ें मिट्टी को कितनी मजबूती से पकड़े हुए हैं। अगर ये न होती तो यहाँ की मिट्टी बह जाती। बड़े पेड़ों की जड़ें और भी गहरी होती हैं पर घास की जड़ें भी मिट्टी को बाँधने में बहुत काम आती हैं। कभी सूई को देखा है...? कितनी छोटी होती है लेकिन कितने बड़े-बड़े कपड़े सिल देती है। कलम कितनी छोटी होती है लेकिन उसके द्वारा लिखे गए शब्दों का असर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं पर पड़ता है। उसका वार तलवार से भी ज्यादा गहरा होता है। एक छोटी सी बात हमारे

जीवन की दिशा बदल देती है, बेटा। हर किसी का अपना महत्व होता है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा।

अच्छा, बताओ, क्या तुमने कभी इस पानी को गौर से देखा है...?"

नीरज ने तालाब की ओर देखा। पानी शाँत था लेकिन उसमें हल्की हवा से छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं। "हाँ दादा जी, देखा है। यह तालाब इतना बड़ा है, इतना पानी भरा है लेकिन यह तो बहुत शाँत और साफ है।"

बुजुर्ग मुस्कुराए। "हाँ, पानी शाँत है लेकिन क्या तुम जानते हो यह कितना मजबूत है? यह पत्थरों को घिस-घिसकर चिकना कर देता है, पहाड़ों में रास्ता बना लेता है और नदियाँ बनकर बह जाता है।" तभी उन्होंने एक छोटा-सा पत्थर उठाकर पानी में डाला, जो हल्की-सी छपाक से डूब गया। "देखो, पानी ने इसे समा लिया।"

नीरज की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। बच्चे की जिज्ञासा ऐसी ही होती है। एक छोटी सी बात भी उन्हें आश्चर्य से भर देती है। वे और जानना चाहते हैं, "लेकिन दादा जी, पानी तो इतना नरम है, मुलायम! यह उँगली से छूने पर बह जाता है। यह पत्थरों को कैसे घिस सकता है? मैं तो जानता हूँ कि पानी सबकी प्यास बुझाता है, फसलें उगाता है और खेलने में मज़ा देता है। लेकिन मजबूत...यह कैसे?"

बुजुर्ग ने बच्चे के मन की परतों को छूते हुए धीरे से समझाया, "बेटा, पानी की नम्रता ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। नम्रता, यानी नरमी वह शक्ति है जो बिना लड़ाई के जीतती है। पानी कभी झगड़ता नहीं लेकिन लगातार बहता रहता है। अगर रास्ते में पत्थर आ जाए तो वह उसे काटकर आगे बढ़ जाता है... धीरे-धीरे, बिना शोर मचाए। और अगर बाढ़ आए, तो यह मकान गिरा सकता है, पेड़ उखाड़ सकता है। लेकिन शाँत रहकर एक छोटे गिलास में भी समा जाता है। देखो, इसे जिस बर्तन में डालो, यह उसी का आकार ले

लेता है... गोल, चौकोर या लंबा। पानी खुद को बदलता है, परिस्थितियों के अनुसार ढलता है लेकिन अपनी मंजिल कभी नहीं भूलता। बच्चे का मन भी वैसा ही होता है नरम और लचीला। अगर तुम गुस्से से लड़ोगे तो टूट जाओगे लेकिन नम्रता से झुकोगे तो मजबूत बनोगे।"

जब उदाहरण उनके सामने हों तो बच्चे जल्दी सीखते हैं। नीरज ने भी बहुत ध्यान से सारी बातें सुनीं और सोचा। उसकी आँखों में चमक आ गई। "दादा जी, क्या मैं भी पानी की तरह बन सकता हूँ? अगर स्कूल में कोई मुझे धक्का दे तो मैं गुस्सा न करूँ बल्कि अपना रास्ता बदल लूँ? अगर मास्टर जी डाँटें तो मैं उदास न होऊँ बल्कि सीख लूँ? मैं भी नरम रहकर मजबूत बन सकता हूँ...?"

बुजुर्ग ने सिर हिलाया, "बिल्कुल, बेटा। नम्रता तुम्हारी ताकत बनेगी। बच्चों का मन स्पंज जैसा होता है, सब कुछ सोख लेता है। अगर तुम पानी की तरह बहना सीख गए तो कोई अड़चन तुम्हें रोक नहीं सकेगी। तुम छोटे हो लेकिन तुम्हारा दिल बड़ा है। नम्र रहो लेकिन दृढ़ रहो।"

नीरज उठा, नम्रतापूर्वक पाँव छूकर बुजुर्ग को धन्यवाद कहा और घर की ओर दौड़ा। पानी की लहरें भी मानो उसके साथ मुस्कुरा रही थीं जैसे कह रही हों कि नम्रता की ताकत से दुनिया जीती जा सकती है।

अचानक, उसके मन में एक नया जज़्बा जगा... साहस का, मजबूती का। धीरे-धीरे, नीरज बदलने लगा। वह अब खुद को छोटा नहीं मानता था। जब कोई उसे चिढ़ाता तो वह मुस्कुराकर जवाब देता, गुस्सा नहीं करता। जब मुश्किल आती तो वह रास्ता बदल लेता लेकिन हार नहीं मानता। गाँव वाले कहते, "यह लड़का पानी जैसा हो गया है...शाँत, स्थिर, नम्र लेकिन अटूट।"



आज नीरज फिर तालाब पर आया। उसने एक बार फिर तालाब में झाँका लेकिन इस बार दृढ़ता से। पानी में उसका प्रतिबिंब था। लड़का मुस्कुराया। अरे यह क्या...! उसका साहस देखकर पानी भी साथ में मुस्कुराया तो नीरज का साहस दोगुना हो गया।

□

बूढ़ी माँ की आशा

उस गाँव का नाम था रामपुर। कोई बहुत बड़ा गाँव नहीं था, बस कुछ कच्चे-पक्के मकानों का झुंड, जिसके बीच से एक पतली सी पगडंडी सर्प की भाँति बल खाती हुई खेतों की ओर जाती थी। रामपुर की सुबहें भी और गाँवों की तरह ही हुआ करती थीं। बैलों की घंटियों की टुनटुनाहट, चूल्हे से निकलता धुआँ और बच्चों का किलकारी मारता मधुर शोर। लेकिन इस शोर के बीच भी एक अजीब सी खामोशी पसरी रहती थी, खासकर उन घरों में जहाँ सिर्फ पेट भरने की जुगत ही ज़िंदगी का सार बन चुकी थी।

ऐसे ही एक घर में रहती थी जमुना, एक बूढ़ी माँ जिसकी कमर उम्र के बोझ तले झुक चुकी थी और उसकी पोती, राधा जो अभी सोलह बसंत ही देख पाई थी। राधा का ब्याह करने की उम्र हो चली थी परन्तु घर में खाने को अन्न के दाने ही कम पड़ जाते थे तो ब्याह की बात कहाँ से आती? जमुना का बेटा, राधा का बाप, दो साल पहले ही शहर कमाने गया था और फिर लौटकर नहीं आया। चिट्ठी-पत्री का तो सवाल ही नहीं था। गाँव में कौन चिट्ठी लिखता और कौन पढ़ता?

उनकी ज़िंदगी में एक और सदस्य था...धन्नो, एक दुबली-पतली बकरी, जिसके शरीर पर कुछ भूरे और कुछ सफ़ेद धब्बे थे। धन्नो सिर्फ एक बकरी नहीं थी, वह उनके घर की इज़्ज़त थी, उनकी उम्मीद थी, उनकी जमा-पूँजी थी। जमुना ने उसे छोटे से पाला था, अपनी बेटी की तरह। धन्नो रोज़ एक सेर दूध देती थी, जिसे बेचकर राधा और जमुना का गुज़ारा चलता था। कभी-कभी तो उसी दूध में पानी मिलाकर वो लोग खुद भी पी लेते थे ताकि पेट की आग शाँत हो सके।

राधा का सारा दिन धन्नो की सेवा में बीतता। उसे चराना, नहलाना, उसके लिए पत्तियाँ तोड़ना। यह सब राधा का ही काम था। राधा धन्नो से ऐसे



बात करती थी जैसे वो उसकी सहेली हो। "अरी धन्नो, आज तू कम खाई है? क्या हुआ, तबीयत ठीक नहीं है का?" या "देख धन्नो, आज बाजार से गुड़ लाई हूँ तेरे लिए, खा ले।" धन्नो भी राधा की आवाज़ पहचानती थी। उसकी पुकार पर सिर उठाकर देखती और पूँछ हिला देती।

एक दिन गाँव में अकाल जैसी स्थिति आ गई। बारिश नहीं हुई थी और खेतों में दरारें पड़ गई थीं। जहाँ-तहाँ घास का एक पत्ता भी नज़र नहीं आता था। धन्नो को चराने के लिए राधा को अब दूर-दूर तक जाना पड़ता। कभी-कभी तो गाँव के बाहर वाले टीले तक भी पहुँच जाती, जहाँ थोड़ी बहुत हरियाली बची थी।

जमुना की चिंता बढ़ती जा रही थी। धन्नो का दूध कम होने लगा था। अब एक सेर की जगह आधा सेर भी मुश्किल से निकल पाता। "राधा, धन्नो को कुछ खिला-पिला, उसका दूध कम हो रहा है," जमुना ने एक शाम राधा से कहा।

राधा का चेहरा उतर गया। "माँ, कहाँ से लाऊँ? गाँव में कहीं घास नहीं बची। दूर-दूर तक जाती हूँ पर कुछ मिलता ही नहीं।"

"तो क्या हम भूखे मरेंगे? धन्नो ही तो हमारी आस है," जमुना की आवाज़ में डर था।

एक दिन गाँव का साहूकार, लाला दीनदयाल, जमुना के घर आया। लाला दीनदयाल की मोटी तोंद और उसकी आँखों में हमेशा पैसे की चमक रहती थी। उसने गाँव के अधिकतर लोगों को कर्ज़ दे रखा था और अब ब्याज पर ब्याज लगाकर उन्हें निचोड़ रहा था।

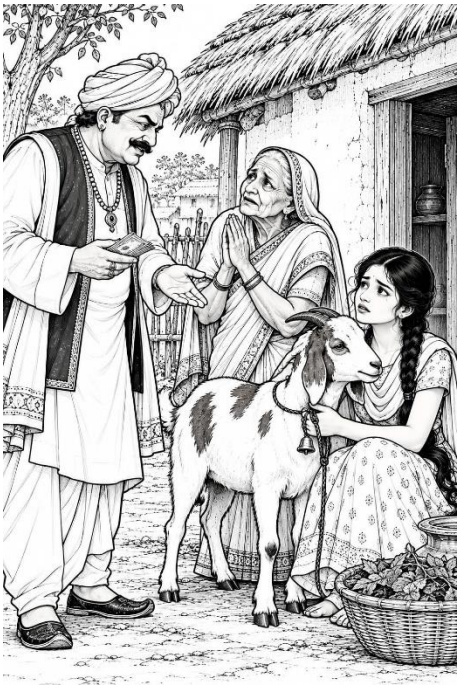

"अरी जमुना, सुना है तेरी बकरी दूध कम दे रही है?" लाला दीनदयाल ने मुँह बनाते हुए कहा।

जमुना सिहर गई। "हाँ लाला, क्या करें, दाना-पानी नहीं मिल रहा।"

"तो बेच दे उसे। मैं खरीद लूँगा। तेरे पैसे भी मिल जाएँगे और चिंता भी खत्म हो जाएगी।" लाला ने अपनी बात में मिठास घोलने की कोशिश की पर जमुना जानती थी कि इस मिठास के पीछे कितनी कड़वाहट छिपी है।

"नहीं लाला, धन्नो को कैसे बेच दूँ? वो तो हमारे घर की लक्ष्मी है।" जमुना ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"लक्ष्मी है...? हाँ, दिख रही है तेरी लक्ष्मी। दो दिन बाद दूध देना बंद कर देगी तो कहाँ से पैसा लाएगी? देख, मैं तुझसे पाँच हज़ार रुपये में खरीदूँगा। अभी दे दूँगा पैसे..." लाला ने चाल चली।

पाँच हज़ार रुपये! जमुना को लगा जैसे किसी ने उसके कान में अमृत घोल दिया हो। इतने पैसे तो उसने अपनी ज़िंदगी में एक साथ कभी देखे भी नहीं थे। राधा की शादी, घर का राशन, सब कुछ आसान हो सकता था। पर धन्नो! धन्नो को कैसे बेचे? उसकी आँखें नम हो गईं।

"नहीं लाला, धन्नो को नहीं बेच सकती।" जमुना ने दृढ़ता से कहा, चाहे उसके मन में कितनी ही उथल-पुथल क्यों न मची हो।

लाला दीनदयाल झल्ला कर चला गया।

राधा ने सब सुन लिया था। रात को जब जमुना सो गई, तो राधा धन्नो के पास गई और उसे गले लगा लिया। धन्नो ने प्यार से राधा का हाथ चाटा। राधा की आँखों से आँसू बहने लगे। "धन्नो, तू हमारी ज़िंदगी है। तुझे कैसे बेच सकते हैं?" वह बुदबुदाई।

अगले दिन राधा धन्नो को लेकर बहुत दूर निकल गई। उस पहाड़ी की ओर जहाँ लोग कम ही जाते थे। वहाँ उसे थोड़ी बहुत घास मिल गई। धन्नो ने जी भर के घास खाई और राधा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

लेकिन यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। शाम को जब वे लौट रहे थे तो राधा ने देखा कि धन्नो लंगड़ा रही है। उसके पैर में एक काँटा चुभ गया था। राधा ने काँटा निकाला पर धन्नो अब चल नहीं पा रही थी। राधा उसे गोदी में उठाकर चलने लगी पर धन्नो भारी थी और राधा इतनी मजबूत नहीं। गाँव अभी दूर था। अँधेरा घिरने लगा था।

राधा ने धन्नो को वहीं लिटा दिया और उसे सहलाने लगी। "धन्नो, क्या हुआ तुझे? चल, घर चल।" पर धन्नो दर्द से कराह रही थी।

जमुना घर पर राधा का इंतज़ार कर रही थी। जब काफी देर हो गई और राधा नहीं लौटी, तो उसकी जान हलक में आ गई। उसने लाठी उठाई और लंगड़ाती हुई गाँव के बाहर निकल गई।

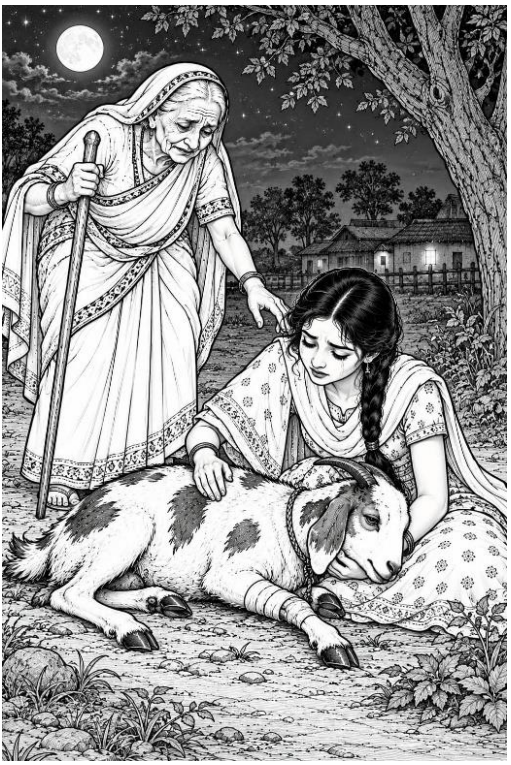

रात के सन्नाटे में जमुना को राधा की आवाज़ सुनाई दी, "माँ! धन्नो...!"

जमुना आवाज़ की दिशा में भागी। उसने देखा, धन्नो ज़मीन पर लेटी हुई थी और दर्द से तड़प रही थी।

"क्या हुआ राधा?" जमुना ने दूर से ही घबराकर पूछा।

राधा ने रोते हुए सारी बात बताई। जमुना ने धन्नो को छुआ, उसका पैर सूज गया था। "अरे मेरी बच्ची! ये तो बहुत चोट लगी है।"

दोनों माँ-बेटी वहीं रात भर धन्नो के पास बैठी रहीं। सुबह तक धन्नो की हालत और खराब हो गई। उसने दूध देना बिलकुल बंद कर दिया था।

अब जमुना के पास कोई चारा नहीं था। उसने राधा से कहा, "राधा, अब धन्नो को बेचना ही पड़ेगा। ऐसे भी ये अब ज़िंदा नहीं बचेगी। कम से कम इसके बदले कुछ पैसा तो मिल जाएगा।"

राधा का दिल बैठ गया। उसकी धन्नो! जिससे वह इतना प्यार करती थी, उसे बेचना पड़ेगा? पर जमुना की बात में सच्चाई थी। धन्नो दर्द से कराह रही थी। उसे इस तरह तड़पता देख राधा भी दुखी हो रही थी।

जमुना लाला दीनदयाल के पास गई। "लाला, मैं धन्नो को बेचने आई हूँ।" उसकी आवाज़ में एक अजीब सी उदासी थी।

लाला दीनदयाल मुस्कुराया। "मैंने कहा था ना! आखिर तूने मान ही लिया। पर अब वो बीमार है, मैं सिर्फ एक हज़ार रुपये ही दूँगा।"

जमुना को लगा जैसे किसी ने उसके पेट में छुरा घोंप दिया हो। एक हज़ार रुपये! जहाँ पाँच हज़ार का वादा था, अब सिर्फ एक हज़ार! पर उसकी मज़बूरी थी। उसने लाला को धन्नो के पास बुलाया।

लाला ने धन्नो को देखा और पैसे निकालकर जमुना को पकड़ा दिए। "ले, गिन ले।"

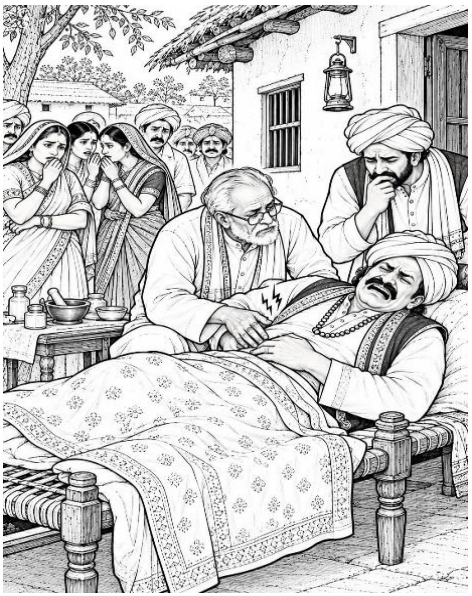

जमुना ने पैसे लिए और बिना कुछ कहे राधा के पास लौट आई। राधा ने देखा, उसकी माँ की आँखों में आँसू थे। उसने लाला को धन्नो को ले जाते हुए देखा तो उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। अपनी प्रिय धन्नो को जाते हुए देख वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

लेकिन कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। कुछ दिनों बाद गाँव में एक नई ख़बर फैली। लाला दीनदयाल

की तबीयत अचानक खराब हो गई थी। उसके पेट में ऐसा दर्द उठा कि डॉक्टर-हकीम किसी को समझ नहीं आ रहा था क्या हुआ। गाँव में कानाफूसी होने लगी कि ये धन्नो का श्राप है। उसने एक बेजुबान जानवर को उसकी बीमारी की हालत में खरीदा था। अब न धन्नो रही ना लाला।

जमुना और राधा ने भी यह बात सुनी। उन्हें दुःख तो बहुत हुआ पर एक अजीब सा संतोष भी मिला यह सोचकर कि धन्नो की आत्मा को शाँति मिली होगी, शायद।

एक महीने बाद, जब गाँव में बारिश हुई और धरती फिर से हरी-भरी हुई, तो जमुना और राधा ने दो हज़ार रुपयों से एक नई बकरी खरीदी। इस बार राधा ने उसका नाम रखा "आशा"। आशा स्वस्थ और मज़बूत थी और कुछ ही समय में दूध देने लगी।

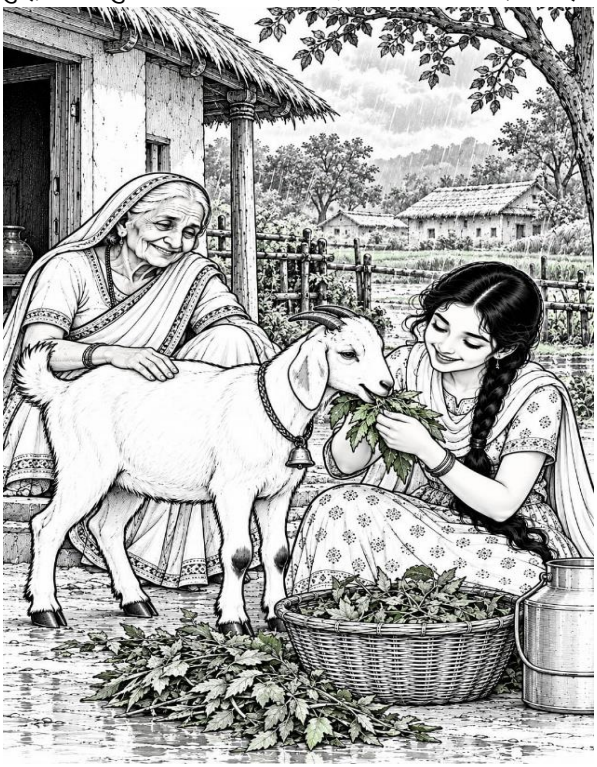

जमुना और राधा को यह बात समझ आ गई थी कि ज़िंदगी में आशा कभी नहीं छोड़नी चाहिए। एक चीज़ के

जाने से सब कुछ खत्म नहीं हो जाता। धन्नो तो चली गई थी पर उसने उन्हें एक सीख दी थी कि चाहे कितनी भी मुश्किल हो, इंसान को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। और शायद उसी सीख के कारण, उनकी ज़िंदगी में धन्नो फिर से लौट आई थी...आशा के रूप में। गाँव में अब भी गरीबी थी परन्तु जमुना और राधा के चेहरे पर एक चमक थी, एक नई उम्मीद की चमक।

□

सूखे कुएँ का पानी और गाँव की लाज

पहाड़पुर का नाम तो पहाड़पुर था पर पहाड़ वहाँ कोई न था। बस दूर क्षितिज पर, नीले धुंध में लिपटी कुछ टीलें-सी दिख जाती थीं जिन्हें गाँव वाले 'पहाड़' कहकर संतोष कर लेते थे। कभी गाँव हरा-भरा था, मिट्टी उपजाऊ पर अब नियति की मार कहो या देवताओं की नाराज़गी, गाँव का इकलौता कुआँ जो सदियों से गाँव की प्यास बुझाता आया था, सूख चला था। उसकी तलहटी में बस कुछ कीचड़ और सूखी दरारें ऐसे दिखाई देती थीं जैसे किसी बूढ़े का झुर्रीदार बदन और सूखा गला। जेठ की तपती धूप में गाँव की



हरियाली झुलस चुकी थी और खेतों की मिट्टी प्यास से फटी हुई थी।

गाँव का जीवन उस कुएँ के पानी पर ही निर्भर था। खेत सींचे जाते थे, घर-गृहस्थी चलती थी और जानवर पलते थे। अब जब कुआँ सूख गया तो गाँव में हाहाकार मच गया। सुबह का धुँधलका छँटते ही औरतें सिर पर घड़े लिए, धीमी गति से दूर के गाँवों की पगडंडियों पर चल पड़तीं। उनके कदमों में हर दिन बढ़ती थकान होती और आँखों में अथाह चिंता। माथे से बहता पसीना आँखों में आ जाता था। कपड़े मिट्टी में सन जाते

थे पर प्यास की आग कहाँ बुझती! गाँव के पशुधन भी सूखते जा रहे थे। उनकी पसलियाँ साफ दिखतीं और उनकी धीमी साँसें गाँव के अकाल की गवाही देती नज़र आती थीं।

इसी गाँव में एक बुज़ुर्ग किसान रहता था, धनीराम काका। धनीराम, जो अपने नाम के विपरीत, धनी न था पर अपने दिल का बहुत धनी था। उसकी कमर झुक चुकी थी, माथे पर चिंता की गहरी लकीरें थीं परन्तु आँखों में अभी भी ऐसी दृढ़ता थी जो हार मानने को तैयार न थी। उसके पास दो बीघे ज़मीन थी और एक अधमरा बैल जो अब कुएँ के पानी के बिना और भी सुस्त पड़ गया था। धनीराम काका की एक ही आस थी...उसकी बहू, गंगा। गंगा, अपने नाम की तरह ही पवित्र और शाँत स्वभाव की थी। उसके चेहरे पर एक अलौकिक सौन्दर्य था और आँखों में वो भोलापन जो सिर्फ गाँव की मिट्टी में ही पनप सकता था। गाँव की नई पीढ़ी में उसे सबसे सुसंस्कृत माना जाता था क्योंकि वह शहर में थोड़ा पढ़-लिखकर आई थी और उसके पास ज्ञान की वो रोशनी थी जो गाँव की अज्ञानता के अँधेरे को चीर सकती थी।

धनीराम काका का बेटा मोहन शहर चला गया था, कुछ साल पहले। गरीबी ने उसे गाँव में टिकने न दिया था। उसने एक सपना देखा था कि शहर से पैसे कमाकर लौटेगा और कुएँ की गहराई बढ़ाएगा ताकि गाँव को कभी प्यासा न रहना पड़े परंतु साल बीत गए और मोहन का कोई पता न था। धनीराम काका ने कई बार मोहन के बारे में पूछने की कोशिश की लेकिन कोई ख़बर न मिली। अब तो गाँव वाले भी उसे लगभग भूलने लगे थे। बस धनीराम काका की सूखी आँखें रोज़ पगडंडी की ओर टकटकी लगाए रहतीं।

कुआँ सूखे हुए कई महीने बीत गए थे। खेतों में दरारें पड़ने लगी थीं, फसलें सूखने लगी थीं और उनकी सूखी टहनियाँ हवा में कराहती थीं। गाँव में बीमारियाँ फैलने लगीं, खासकर बच्चों में। लोग कहने लगे कि यह देवताओं

का प्रकोप है। पंडित दीनदयाल, गाँव का मोटा-ताजा और अपनी विद्या का धनी पंडित जिसका माथा चंदन के लेप से सजा था और आँखों में ज्ञान से ज़्यादा चालाकी चमकती थी, अपनी मोटी और ख़राशदार आवाज़ में गाँव के चौपाल पर बैठा सबको समझा रहा था कि कुएँ में किसी 'अपवित्र आत्मा' का वास हो गया है।

"यह कोई साधारण बात नहीं है भाइयो!" उसने अपनी माला फेरते हुए अपनी बात पर ज़ोर देकर कहा। "देवताओं का क्रोध है। कुएँ में पवित्रता नहीं रही। जब तक कोई बड़ी तपस्या, कोई बड़ा बलिदान नहीं होगा, पानी नहीं आएगा।"

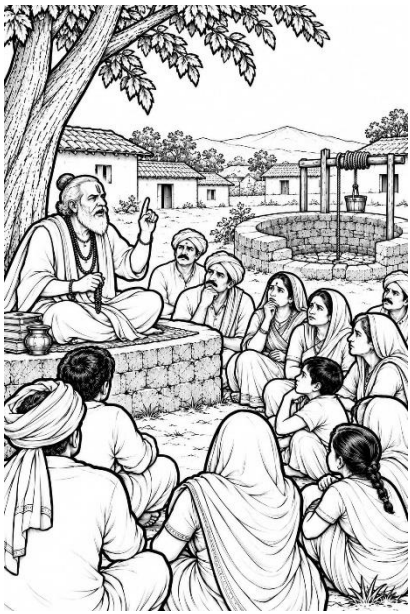

गाँव में सन्नाटा छा गया। लोग पंडित जी की बातों पर विश्वास करने लगे। उनकी अपनी बेबसी और अज्ञानता ने उन्हें किसी भी बात पर यकीन करने को मजबूर कर दिया था। उनमें से कुछ ने तो अपने बच्चों को भी पूजा-पाठ में लगा दिया। माता-पिता उन्हें भूख से निढाल देखकर भी मंदिरों में पूजा-अर्चना के लिए धकेलते रहे परन्तु पानी न आया। फिर पंडित दीनदयाल ने एक ऐसा सुझाव दिया जिसकी आवाज़ सुनकर हवा भी सहम गई। उसने रहस्यमई आवाज़ में कहा, "गाँव में किसी पवित्र और पतिव्रता स्त्री का बलिदान देना होगा। जो गाँव की सबसे पवित्र और सबसे सुंदर नारी हो, उसे कुएँ में जल-

समाधि लेनी होगी तभी देवताओं का क्रोध शाँत हो सकेगा और पानी वापस आएगा!"

उस दिन के बाद से एक गहरी चुप्पी गाँव में पसर गई। कौन देगा अपनी बेटी, अपनी बहू का बलिदान? कौन इतने बड़े पाप का भागी बनेगा? पर पंडित दीनदयाल ने अपनी धूर्त आँखों से गंगा की ओर देखा और इशारों-इशारों में उसका नाम लेना शुरू कर दिया। गंगा, जो अपनी पवित्रता, शाँत स्वभाव और थोड़ी बहुत पढ़ी-लिखी बुद्धि के कारण गाँव की सबसे आदर्श नारी मानी जाती थी, अब यही गुण उसके लिए काल बन रहे थे, विशेष कर पंडित दीनदयाल के लिए। उसकी सुंदरता और आचरण अभिशाप साबित हो रहे थे।

कुछ गाँव वाले जो पंडित जी के अंधभक्त थे या अपनी प्यास से बेहाल थे, इस बात पर राज़ी भी हो गए। "गाँव की भलाई के लिए एक जान की क्या कीमत!" वे कहने लगे। मानो एक इंसान की ज़िंदगी किसी मोलभाव की चीज़ हो। धनीराम काका ने यह सुना तो उसका कलेजा मुँह को आ गया। उसकी बहू! उसकी गंगा! जिसे उसने मोहन की आखिरी निशानी माना था उसे कैसे बलिदान कर दे?

"पंडित जी!" धनीराम काका ने हाथ जोड़कर लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, "ऐसा मत कहिए। मेरी बहू... वह निर्दोष है यह कैसा बलिदान?"

पंडित दीनदयाल ने भौंहें चढ़ाकर, अपने चेहरे पर एक बनावटी धार्मिकता लाते हुए कहा, "यह तो देवताओं का विधान है, धनीराम! अगर गाँव को बचाना है तो कोई न कोई तो आगे आएगा ही।"

गाँव में माहौल तनावपूर्ण हो गया। कुछ लोग गंगा को बचाने की बात करते तो कुछ पंडित जी के साथ होते। और इसी द्वंद्व में गाँव दो फाड़ हो गया।

गंगा सब कुछ सुनती। उसकी आँखों में आँसू थे पर चेहरे पर एक अजीब सी शाँति भी। उसे अपनी किस्मत पर गुस्सा नहीं था। उसे गुस्सा था

इस अज्ञानता पर, इस अंधविश्वास पर जो लोगों को इतना अंधा कर सकता है कि वे एक मासूम की जान लेने को तैयार हो जाएँ।

एक रात, धनीराम काका अपनी टूटी चारपाई पर लेटे थे। नींद उनकी आँखों से कोसों दूर थी। मोहन का वादा याद आता, फिर गंगा का मासूम चेहरा। गंगा, उसकी बहू, जिसकी जान दाँव पर लगी थी। तभी गंगा कमरे में आई। उसकी पदचाप इतनी हल्की थी कि कमरे में हवा भी महसूस न होती। उसने देखा, ससुर जी परेशान हैं और उनका शरीर काँप रहा है।



"पिताजी, क्या बात है?" गंगा ने शाँत आवाज़ में पूछा।

"क्या बताऊँ, बेटी," धनीराम काका ने अपने गमछे से आँसू पोंछते हुए कहा, "ये पंडित दीनदयाल... ये गाँव वाले... तेरी जान लेना चाहते हैं..." उनकी आवाज़ भर्रा गई और उनसे आगे नहीं बोला गया।

गंगा धीरे से धनीराम काका के पैरों के पास बैठ गई। उसने उनके पैरों को छूआ...उन पैरों को जो उम्र भर खेतों में मेहनत करते हुए फटे थे। "पिताजी, आप चिंता न करें अगर मेरे बलिदान से गाँव में पानी आता है तो मैं तैयार हूँ।" अपने ससुर जी को आश्वासन देने के लिए गंगा के शब्द दृढ़ थे जैसे उसने अपना मन पूरी तरह बना लिया हो।

धनीराम काका चौंककर उठ बैठे। "ये क्या कह रही है, बेटी! तू पागल तो नहीं हो गई?"

"नहीं ससुर जी," गंगा ने पूरी गंभीरता से कहा। "मैं पागल नहीं हूँ। मैंने शहर में पढ़ा है कि कुआँ सिर्फ सूखता नहीं बल्कि उसकी सतह नीचे चली जाती है। उसे गहरा खोदना पड़ता है। पर ये लोग मानेंगे नहीं। अगर मेरे बलिदान से इन्हें संतोष मिलता है और गाँव को शाँति तो मुझे कोई परवाह नहीं। पर मेरा बलिदान व्यर्थ न जाए।" गंगा की आँखों में एक अजीब सी चमक थी जैसे उसने अपनी नियति को स्वीकार कर लिया हो और अब उसे अपने त्याग को सार्थक बनाना था लेकिन मन ही मन वह कोई और जुगत भी लगा रही थी।

धनीराम काका गंगा को देखता रह गया। उसकी बहू, जो इतनी छोटी उम्र में इतना बड़ा फ़ैसला कर रही थी! उसे लगा, उसकी बहू किसी देवी से कम नहीं जो गाँव की भलाई के लिए अपनी जान दाँव पर लगाने को तैयार थी।

अगले दिन सुबह, सूरज की पहली किरणें अभी पूरी तरह से निकली भी नहीं थीं पर कुएँ के पास गाँव के लोग जमा थे। भीड़ में एक अजीब सी बेचैनी थी...कुछ में उत्सुकता, कुछ में डर, कुछ में अंधभक्ति। पंडित दीनदयाल मंत्र पढ़ रहा था। उसकी मोटी आवाज़ हवा में गूँज रही थी जैसे किसी अनहोनी को बुलावा दे रही हो। गंगा को दुल्हन की तरह सजाया गया था। लाल साड़ी, माथे पर बिंदिया, हाथों में चूड़ियाँ पर उसके चेहरे पर खुशी नहीं थी। उसकी आँखों में आँसू ज़रूर थे पर एक अजीब सी दृढ़ता भी थी। एक अलौकिक शाँति जो मौत से भी नहीं डरती। धनीराम काका एक कोने में खड़े थे। उनका शरीर काँप रहा था और कलेजा फटा जा रहा था। वह चीखना चाहते थे पर आवाज़ गले में अटक गई थी। आँसू आँखों से बहकर सूखी दाढ़ी पर आ गिरे थे।

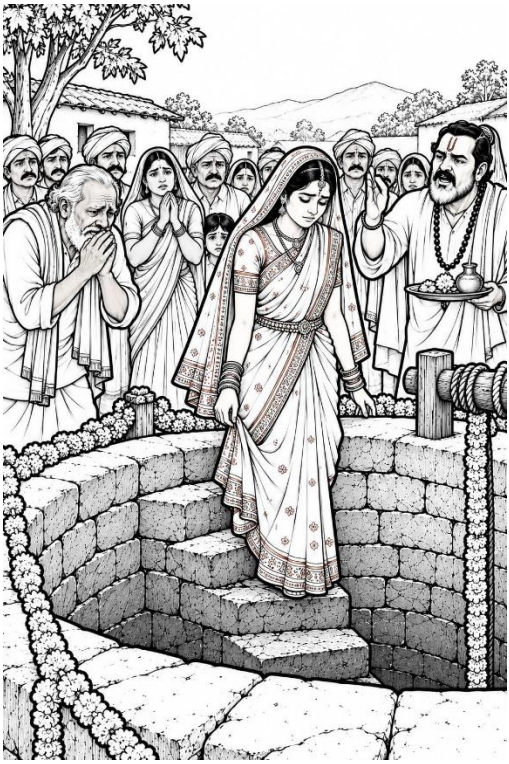

जब पंडित दीनदयाल ने गंगा को कुएँ में उतरने का आदेश दिया तो गंगा ने एक बार फिर धनीराम काका को देखा। उसकी आँखों में एक अनकहा संदेश था... "मेरा बलिदान व्यर्थ न जाए।" उसने एक लंबी साँस ली जैसे जीवन की आखिरी साँस ले रही हो और आँखें बंद कर लीं। वह कुएँ की मुँडेर की ओर बढ़ने लगी। उसके पैर डगमगा रहे थे पर आत्मा अटल थी। गाँव वालों में से कुछ ने 'जय हो!' के नारे लगाए तो कुछ की आँखों में शर्मिंदगी थी कि उन्होंने अपनी अज्ञानता के आगे एक निर्दोष की जान दाँव पर लगा दी थी।

ठीक तभी, एक अजनबी आवाज़ सुनाई दी जैसे किसी ने बिजली का झटका दिया हो।

"रुको! यह क्या हो रहा है?"

सबने चौंककर पीछे मुड़ा। एक जवान आदमी, धूल-मिट्टी से सना हुआ भागा चला आ रहा था। उसके कपड़े फटे हुए थे पर उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी जो शहर की चमक और गाँव की मिट्टी का मिश्रण थी।

उसके कंधे पर कुछ औज़ार लटके थे, खुदाई के औज़ार। यह मोहन ही था...धनीराम काका का बेटा, गंगा का पति। पास आने पर कुछ लोगों ने उसे पहचान लिया। सालों की गैर-हाजिरी के बाद वह अचानक आज गाँव लौट आया था। उसे क्या पता था कि यहाँ उसकी पत्नी का ही बलिदान दिया जा रहा है!

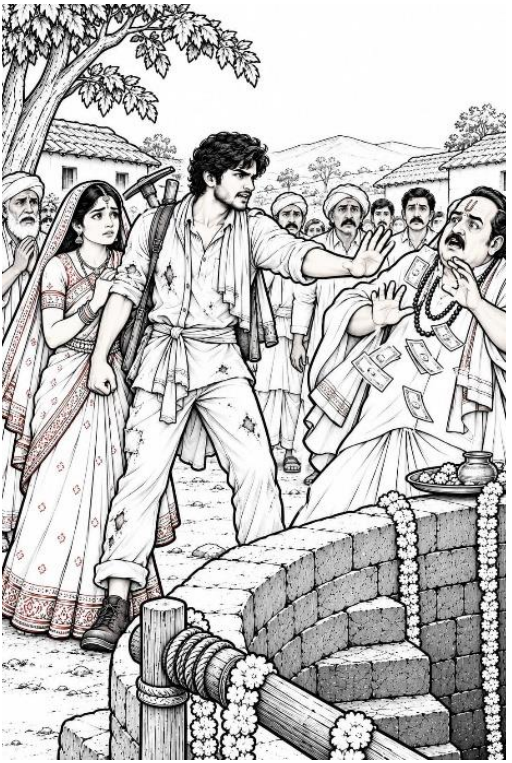

"यह सब क्या बकवास है पंडित जी!" मोहन ने गुस्से में अपनी सारी थकान भूलकर, पंडित जी की ओर बढ़ते हुए कहा। "बलिदान से पानी नहीं आता! पानी मेहनत से आता है!" उसकी आवाज़ में ऐसा रौब था जिसने पंडित जी को भी हिला दिया। पंडित दीनदयाल हकलाने लगा। उसका मोटा शरीर काँप रहा था और चेहरा पीला पड़ चुका था। वह हकलाते हुए बोला, "कौन... कौन है तू?"

"मैं मोहन हूँ!" मोहन ने गरजकर कहा। "इस गाँव का बेटा! और यह मेरी पत्नी है! इसे कोई हाथ नहीं लगाएगा!" उसने अपनी जेब से कुछ नक़द पैसे निकाले, जो उसने शहर में खून-पसीने की कमाई से जमा किए थे और

पंडित जी के मुँह पर फेंके। "ये लो अपनी दक्षिणा! और अब यहाँ से हट जाओ!"

गाँव वाले हैरान थे। मोहन! जो सालों से गायब था, एक नई उम्मीद लेकर अचानक लौट आया था। ऐसी उम्मीद जो अंधविश्वास के काले बादलों को चीर



सकती थी। गंगा को कुएँ में उतारने की बात किसी ने मोहन तक पहुंचा दी थी परंतु किसने यह भेद था। वह कुछ मज़दूर भी साथ लेता आया था जिनसे उसने तुरंत कुएँ को गहरा खोदने का आग्रह किया। गाँव वालों ने भी शर्मिंदगी और आशा के मिले-जुले भाव से मदद करनी शुरू कर दी। धनीराम काका की आँखों से आँसू बह रहे थे...खुशी के आँसू। उसका बेटा लौट आया था और उसकी बहू बच गई थी एक ऐसी ज़िंदगी से जो उसे हर रोज़ मार रही थी।

दिन-रात खुदाई चलती रही। फावड़ों की आवाज़ें, मिट्टी के ढेरों का गिरना और लोगों की उम्मीद से भरी बातें, ये सब उस सूखे कुएँ के आस-पास एक नया संगीत रच रही थीं। कई दिनों की अथक मेहनत के बाद, एक सुबह जब सूरज की किरणें कुएँ की तलहटी तक पहुँचीं तो वहाँ गीली मिट्टी की गंध आई। और फिर, धीरे-धीरे, पानी की एक पतली धारा दिखाई दी। वह धारा

बढ़ती गई और देखते ही देखते, कुएँ में साफ, ठंडा पानी भरने लगा जैसे धरती माता ने अपने पुत्रों को आशीर्वाद दिया हो।

गाँव वाले खुशी से झूम उठे। उनकी प्यास बुझ गई थी पर उससे बढ़कर, उनका अंधविश्वास टूट गया था। उन्होंने मोहन को कंधों पर उठा लिया, 'मोहन भइया की जय!' के नारे गूँजने लगे जो अब कुएँ से भी ज़्यादा ऊँचे थे। पंडित दीनदयाल एक कोने में शर्म से सिर झुकाए खड़ा था। उसकी विद्या और उसका ढोंग आज पानी-पानी हो गए थे। उसकी आवाज़ में कोई दम न बचा था। लोग उसे हिकारत भरी नज़रों से देख रहे थे।

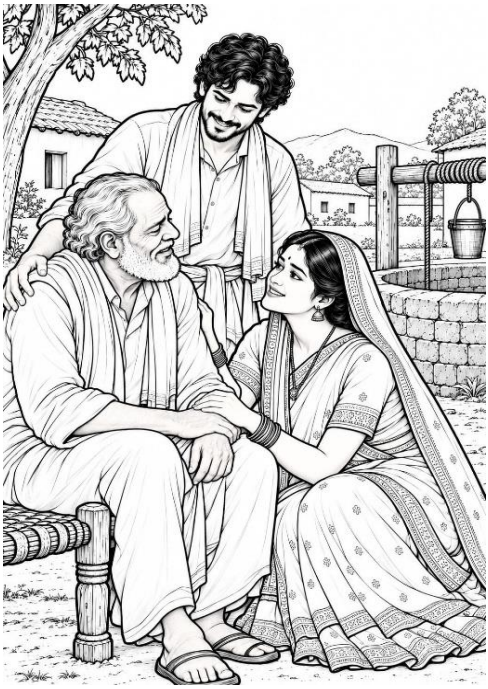

"बेटी," धनीराम काका ने मुस्कुराते हुए कहा, "तूने तो मेरी इज़्ज़त बचा ली और गाँव की भी।"

गंगा ने विनम्रता से उनके हाथ को सहलाते हुए कहा, "नहीं पिता जी। मैंने सिर्फ वही किया जो सही था। गाँव की लाज तो आप जैसे लोगों के त्याग और मोहन की मेहनत से बची है। और हाँ, बाबूजी की कहानियों से भी जिन्होंने हमें सपनों की दुनिया दिखाई।"

गाँव की गली में अब खेल-कूद का शोर था और कुएँ के पास पानी भरते हुए लोगों की चहल-पहल। सूरज धीरे-धीरे अस्त हो रहा था। उसकी लालिमा कुएँ के पानी पर ऐसे पड़ रही थी जैसे कोई सुनहरा आशीर्वाद दे रही हो। यह अब सिर्फ पहाड़पुर नहीं था बल्कि ज्ञान और मेहनत का नया प्रतीक था। एक ऐसा गाँव जहाँ अंधविश्वास के काले बादलों को ज्ञान और कर्म की रोशनी ने चीर दिया था। एक ऐसी कहानी जो दिल से निकली थी और जिसमें जीवन की गहराई और मानवीय आत्मा की अदम्य शक्ति का बखान था। सूखे कुएँ का पानी वापस आ गया था पर इस पानी के पीछे एक औरत की समझ, उसका अनकहा बलिदान, एक बेटे की अथक मेहनत और गाँव की नई सोच छिपी थी।

□

जादुई किताब का सफ़र

रिया को पुरानी चीज़ों से बहुत प्यार था। उसकी दादी का घर एक ख़ज़ाने की तरह था जहाँ हर कोने में कोई न कोई पुरानी कहानी छिपी रहती थी। गर्मियों की छुट्टियों में जब वह अपनी दादी के घर जाती तो घंटों उस पुराने संदूक के पास बैठी रहती जिसमें दादी ने बचपन की सारी चीज़ें सँभालकर रखी थीं।



आज रिया को उस संदूक में बहुत पुरानी और धूल भरी एक किताब मिली। उसके कवर पर न तो कोई नाम था और न ही कोई चित्र। बस एक चमकता हुआ सितारा बना था। रिया ने धीरे से किताब खोली। अंदर के पन्ने बिलकुल साफ़ थे मानो किसी ने उन पर कभी कुछ लिखा ही न हो। रिया ने उदास होकर सोचा, "यह तो सिर्फ खाली पन्ने हैं।" लेकिन जैसे ही उसने किताब को बंद करने की सोची, किताब से एक धीमी, गुनगुनाती आवाज़ आई, "जरा रुको, रिया..."

रिया चौंक गई। उसने आवाज़ की दिशा में देखा लेकिन वहाँ कोई नहीं था। तभी उसने महसूस किया कि किताब का सितारा चमकने लगा है और किताब के पन्ने हवा में धीरे-धीरे हिल रहे हैं। फिर जादुई रूप से, पहले पन्ने पर एक छोटी-सी परी का चित्र उभर आया। परी के बाल सुनहरे थे, रंग दूधिया और कपड़े रंग-बिरंगे तारों से बने थे। उसके एक हाथ में जादुई छड़ी थी। परी ने अपनी पतली-सी आवाज़ में कहा, "मैं शब्दों की रानी हूँ। इस किताब में जो कुछ भी तुम अपनी कल्पना से लिखोगी, वह सच हो जाएगा।"

रिया की आँखें खुशी से चमक उठीं। उसने अपनी पेंसिल उठाई और पहले पन्ने पर लिखा, "एक सुंदर जंगल, जहाँ सारे जानवर आपस में बातें कर सकते हों।"

जैसे ही उसने लिखना बंद किया, कमरे की दीवारें गायब हो गईं और रिया ने खुद को एक हरे-भरे जंगल में पाया। पेड़ों पर रंग-बिरंगे पक्षी चहक रहे थे और ज़मीन पर एक नन्ही-सी गिलहरी एक बड़े से हाथी से बातें कर रही थी। गिलहरी कह रही थी, "अरे हाथी दादा, क्या आपने आज का अख़बार पढ़ा? अख़बार में आया है कि आज जंगल में नाच-गाना होगा।"

हाथी ने सिर हिलाया, "हाँ-हाँ, सुना है। आज हम सब मिलकर मज़ा करेंगे।"

रिया को विश्वास नहीं हो रहा था। यह सब सच था! उसने सोचा कि यह तो कमाल है। वह जल्दी से दौड़कर उस पेड़ के पास गई जिस पर एक पक्षी बैठा था। उसने पक्षी से पूछा, "क्या तुम सच में बात कर सकते हो?"

पक्षी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "हाँ, रिया! जब तक यह किताब खुली रहेगी तब तक हम सब बात कर सकते हैं।"

"अरे तुम्हें तो मेरा नाम भी पता है...!"

"हाँ, मुझे मालूम है कि तुम रिया हो...!" पक्षी जोर से चहका और रिया हैरान रह गई।

रिया ने अपनी जादुई किताब का इस्तेमाल करना सीख लिया था। हर दिन वह एक नई कहानी लिखती और उसकी दुनिया बदल जाती लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि इस जादू के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं।

अगले दिन, रिया ने लिखा, "एक ऐसा समुद्र, जहाँ मछलियाँ गाती हैं और उनके गाने सुनहरे मोती बन जाते हैं।"

जैसे ही उसने लिखना बंद किया उसने अपने आप को एक विशाल समुद्र के नीचे पाया। चारों तरफ़ रंग-बिरंगी मछलियाँ थीं जो सचमुच गा रही थीं। उनके मधुर संगीत से छोटे-छोटे बुलबुले निकल रहे थे जो सुनहरे मोतियों में बदल रहे थे। रिया ने अपनी आँखें मलकर देखा, यह सच था! वह एक जादुई



पानी में थी। ऐसा पानी जिसमें वह साँस ले सकती थी और बिना किसी परेशानी के तैर सकती थी।

लेकिन तभी उसे एक उदास व्हेल मछली दिखाई दी। उसका गाना बाकी मछलियों की तरह मधुर नहीं था बल्कि बहुत कर्कश और बेसुरा था। उसके गाने से कोई मोती नहीं बन रहा था।

रिया ने व्हेल के पास जाकर पूछा, "तुम इतनी उदास क्यों हो?"

व्हेल ने धीमी आवाज़ में कहा, "मैं बचपन से ही अच्छा नहीं गा पाती। मेरे गाने से मोती नहीं बनते और मैं कभी अपनी आवाज़ से दूसरे जानवरों को खुश नहीं कर पाई।" रिया को व्हेल पर दया आई। उसने सोचा कि वह अपनी जादुई किताब से व्हेल का गाना अच्छा कर सकती है। उसने अपनी पेंसिल उठाई और लिखने की कोशिश की, "व्हेल का गाना बहुत मधुर हो जाए।"



जैसे ही उसने यह लिखा, किताब के पन्ने चमक उठे और किताब ने रिया को झिझकते हुए कहा, "रिया, तुम अपनी कहानी में किसी को नहीं बदल सकती। तुम सिर्फ नई दुनिया बना सकती हो, किसी का स्वभाव नहीं बदल सकतीं।"

रिया निराश हो गई। उसने व्हेल को बताया कि वह उसकी मदद नहीं कर सकती। व्हेल ने गहरी साँस ली और कहा, "कोई बात नहीं। कम से कम तुमने कोशिश तो की।" रिया ने सोचा कि उसे कुछ और करना होगा। उसने किताब में लिखा, "एक ऐसा यंत्र जो व्हेल के गाने को मधुर और सुंदर बना दे।"

जैसे ही उसने यह लिखा, एक छोटा-सा सितारा उसके हाथ में आया। वह एक जादुई यंत्र था। रिया ने उस यंत्र को व्हेल के पास ले जाकर उसे

दिखाया। व्हेल ने यंत्र को अपने पास रखा और जब उसने फिर से गाना शुरू किया तो यंत्र उसके गाने को सुंदर और मधुर बनाने लगा। व्हेल का बेसुरा गाना अब एक मधुर धुन में बदल गया। उसका चेहरा खुशी से खिल उठा और उसके गाने से सुनहरे मोती बनने लगे।

व्हेल ने रिया को धन्यवाद दिया और उसे एक बड़ा, चमकता हुआ सुनहरा मोती दिया।

रिया ने व्हेल से विदा ली और वापस अपनी दुनिया में आ गई। उसने अब यह सीख लिया था कि जादुई किताब का इस्तेमाल सिर्फ दुनिया बनाने के लिए नहीं बल्कि दूसरों की मदद करने के लिए भी किया जा सकता है।

रिया अब हर दिन नई कहानियाँ लिखती थी। कभी वह एक ऐसे रेगिस्तान में जाती जहाँ रेत चॉकलेट की बनी होती थी तो कभी एक ऐसे शहर में जहाँ सारी इमारतें खिलौनों से बनी होतीं। वह अपनी कहानियों के ज़रिए नए दोस्त बनाती और उनकी मदद करती।



एक दिन रिया ने लिखा, "एक ऐसी दुनिया जहाँ हवा में मिठाइयाँ उड़ती हैं और सब लोग हमेशा हँसते रहते हैं।"

जैसे ही उसने यह लिखा, वह एक रंगीन दुनिया में पहुँच गई। हवा में टॉफ़ी, चॉकलेट और मीठी गोलियाँ उड़ रही थीं। हर कोई हँस रहा था और नाच रहा

था। रिया ने भी कुछ मिठाई खाई और वह बहुत खुश हुई।

रिया अब हमेशा इसी दुनिया में खोई रहती। ना तो वह दादी से बात करती और ना ही पड़ोस के बच्चों के साथ खेलती। उसके अपने भीतर के सारे भाव भी कहीं दब गए थे। हर समय वह किसी न किसी नई कहानी की तलाश में ही रहती। रिया को इस दुनिया में घूमते हुए कई अनोखे अनुभव हुए लेकिन जल्द ही उसे एक अजीब और अस्वाभाविक बात का अहसास हुआ। इस जादुई दुनिया की किसी भी कहानी में कोई भी व्यक्ति कभी उदास या क्रोधित नहीं होता था। परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, हर चेहरे पर सिर्फ मुस्कुराहट ही चिपकी रहती थी। हद तो तब हो गई जब उसने अपनी आँखों के सामने एक छोटे बच्चे को पत्थरों पर गिरते देखा। उसके घुटने से खून बह रहा था और दर्द साफ दिख रहा था लेकिन रोने या चीखने के बजाय वह बच्चा बेसुध होकर हँसे जा रहा था। दर्द और हँसी का यह बेमेल संगम रिया को डरावना लगा।

रिया ने पास खड़े एक बुजुर्ग से झिझकते हुए पूछा, "बाबा, क्या आप लोगों को कभी गुस्सा नहीं आता? क्या कभी किसी बात का दुख नहीं होता?"

बूढ़े आदमी ने अपनी बेपरवाह हँसी के साथ जवाब दिया, "नहीं, बिटिया! हमारी इस दुनिया में सिर्फ खुशियों का राज है। हमने कभी दुख, दर्द या गुस्से जैसा कुछ महसूस ही नहीं किया।"

तब रिया को एक गहरा सच समझ आया कि यह दुनिया तो एकदम अधूरी और खोखली है। जहाँ दुख का कोई वजूद न हो, वहाँ खुशी का कोई मोल नहीं रह जाता। बिना अँधेरे के उजाले की कीमत कैसे समझ आएगी? मैंने खुशी से भरी दुनिया माँगी तो किताब ने मुझे वही दी। उसने ठान लिया कि उसे इस असंतुलन को ठीक करना होगा। रिया ने तुरंत अपनी जादुई

पेंसिल उठाई और किताब के पन्ने पर लिखा, “मुझे एक ऐसी दुनिया चाहिए, जहाँ इंसान हर भावना को पूरी शिद्दत से महसूस कर सके।”

लिखते ही किताब में से एक जादुई, नीली रोशनी फूटी। अचानक पन्ने फड़फड़ाए और वातावरण में एक भारी, गंभीर आवाज़ गूंज उठी, "तुम मेरी शक्तियों का दुरुपयोग कर रही हो! तुम्हें एक पूरी दुनिया के ताने-बाने के साथ खिलवाड़ करने का हक किसने दिया? पहले तुमने एक ऐसी दुनिया माँगी जहाँ सिर्फ खुशी हो और अब जब तुम्हें अपनी गलती का अहसास हुआ तो जादू से उसे सुधारना चाहती हो? जीवन कोई गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है जिसे तुम अपनी मर्जी से खेलती रहो! जब तक तुम खुद हर भावना की कीमत नहीं समझोगी, मेरी शक्तियाँ तुम्हारे लिए खिलौनों की तरह इस्तेमाल नहीं होंगी। समझो रिया, भावनाएँ तो जीवन के बदलते मौसमों की तरह हैं। अगर पतझड़ ही न हो तो बसंत का स्वागत कैसे होगा? क्या तुम सच में एक ऐसी बेजान दुनिया चाहती हो जहाँ डर, दुख, गुस्सा और सबसे बढ़कर... प्रेम का कोई अहसास ही न बचे?"

इससे पहले कि रिया कुछ कह पाती, जादुई किताब एक ज़ोरदार धमाके के साथ खुद-ब-खुद बंद हो गई। रोशनी गायब हो गई और एक झटके के साथ रिया उस फंतासी की दुनिया से बाहर आ गिरी। वह वापस अपनी दादी माँ के घर के उसी शाँत कमरे में बैठी थी, जहाँ हाथ में बंद किताब और मन में ढेरों सवाल बाकी थे।

रिया बहुत डर गई थी। उसे समझ आ गया था कि वह अपनी शक्तियों का ठीक से इस्तेमाल नहीं कर रही थी। उसने कुछ समय के लिए किताब को संदूक में वापस रख दिया और सोचने लगी कि क्या करना चाहिए। कुछ दिनों तक रिया ने किताब को हाथ नहीं लगाया। वह समझ गई थी कि जादू का

इस्तेमाल सोच-समझकर ही करना चाहिए और जादू का दुरुपयोग भी नहीं करना चाहिए।

जब बहुत दिनों तक रिया उदास रही और संदूक के पास नहीं गई तो दादी सब समझ गई। दादी ने रिया को अपने पास बैठाया, उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा और उसकी आँखों में झाँकते हुए बोलीं, "रिया बिटिया, अगर जीवन में कभी बारिश ही न हो, तो मिट्टी की सोंधी महक का आनंद कैसे मिलेगा? दुख और आँसू इंसान के दिल को साफ करते हैं, ताकि उसमें खुशी

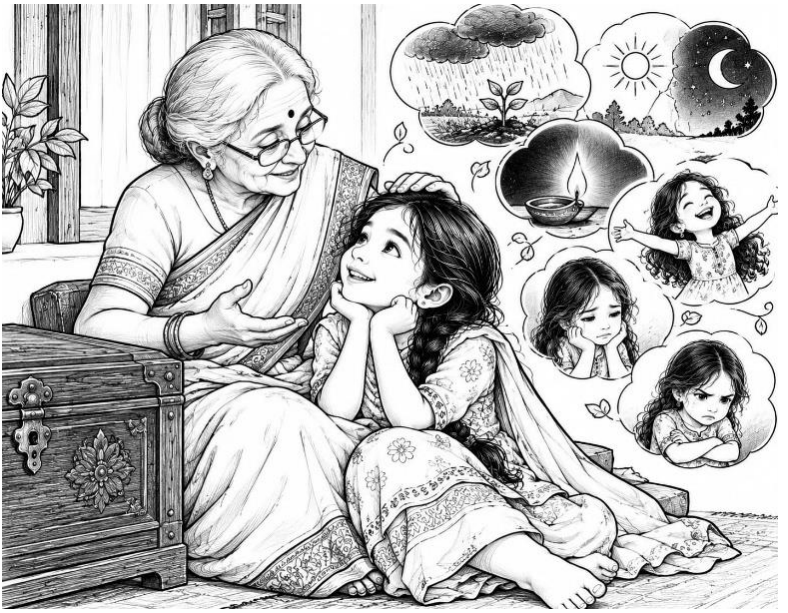

के लिए ज्यादा जगह बन सके। अगर दीया जल रहा है तो हमें अँधेरे की अहमियत भी समझनी चाहिए वरना रोशनी का चमत्कार कौन समझेगा? कल्पनाओं की दुनिया से बाहर आओ रिया...!" और फिर दादी ने रिया को सुख-दुख, दिन-रात, हँसना-रोना आदि भावनाओं से भरी हुईं ढेर सारी सच्ची कहानियाँ सुनाईं। दादी से कहानियाँ सुनकर रिया ने ज़िंदगी की छोटी-छोटी

बातों को समझना शुरू किया। दादी की ये बातें रिया के दिल में उतर गईं। उसे अहसास हुआ कि असली सीख किताबों के पन्नों में नहीं बल्कि अपनों के साथ अनुभव और दुलार में छुपी है। ऐसे ही उसने जाना कि जीवन में उदासी, डर और गुस्सा भी ज़रूरी होते हैं क्योंकि ये भावनाएँ हमें इंसान बनाती हैं और हमें खुशी की अहमियत सिखाती हैं।

बहुत दिनों बाद जब वह अगली बार संदूक के पास गई और किताब को हाथ में थामा तो इस बार उसके मन में कोई बड़ा बदलाव करने की इच्छा पैदा नहीं हुई। अब वह सिर्फ एक कहानी लिखना चाहती थी जो सचमुच मायने रखती हो। उसने पेंसिल उठाई और बहुत सोच-समझ कर ध्यान से लिखा, "एक ऐसी दुनिया जहाँ एक छोटा-सा बच्चा अपनी जादुई किताब से सीखता है कि जीवन में हर भावना का अपना एक अलग और महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह समझता है कि असली जादू सिर्फ नई दुनिया बनाने में नहीं बल्कि पहले से ही मौजूद उन दुनियाओं से कुछ सीखने में है।"

जैसे ही उसने यह लिखा, किताब से एक धीमी और शाँत रोशनी निकली। रिया को महसूस हुआ कि वह कहीं नहीं गई। वह अभी भी अपनी दादी के घर में थी लेकिन उसके मन में एक नई रोशनी भर गई थी। उसने देखा कि किताब के आख़िरी पन्ने पर जो अब तक ख़ाली था, एक छोटा-सा नोट लिखा हुआ था, "तुमने सही मायने में जादू का अर्थ समझ लिया है, रिया। असली जादू मन के भीतर है, किताब के पन्नों में नहीं।"

रिया ने किताब को देखा और मुस्कुराई। फिर उसने धीरे से किताब के पन्ने को छुआ और मन ही मन फुसफुसाई, "धन्यवाद, मुझे सही रास्ता दिखाने के लिए।" उसने अपनी पेंसिल को वापस बैग में रखा और संदूक को बंद कर दिया। वह समझ चुकी थी कि असली जादू उसके भीतर था, उसकी कल्पना में और उसकी समझ में। जादुई किताब सिर्फ एक ज़रिया थी जिसने उसे यह

सिखाया कि जीवन की सबसे अच्छी कहानियाँ वे होती हैं जो हमें खुशी के साथ-साथ ज्ञान और अनुभव भी देती हैं।

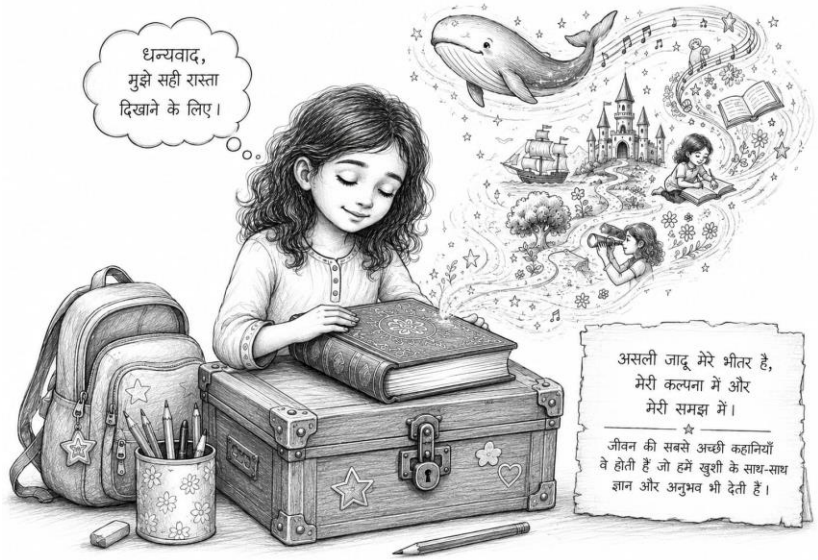

उस दिन के बाद रिया ने कभी भी उस किताब को खोलने की कोशिश नहीं की। उसने अपनी कहानियाँ अपने दिमाग़ में लिखीं और अपनी असली दुनिया को बेहतर बनाने की कोशिश की। और यही उसकी सबसे बड़ी और सबसे जादुई कहानी बन गई।

□

छोटी सी मधुमक्खी की बड़ी खोज

एक हरे-भरे बगीचे में जहाँ सुबह की ओस फूलों पर मोतियों-सी चमकती थी और हवा में मधुर सुगंध घुली रहती थी, एक छोटी-सी मधुमक्खी रहती थी जिसका नाम था मीता। मीता के पंखों पर सुनहरी धारियाँ थीं और आँखें जिज्ञासा से भरी हुईं। उसे फूलों का रस इकट्ठा करना सबसे बड़ा रोमाँच लगता था। हर रोज़ वह अपने छत्ते से निकलती, नए-नए फूलों की तलाश में उड़ान भरती और सोचती, "फूल धरती माँ के आभूषण हैं, उनका रस तो जीवन का अमृत है!" लेकिन मीता का दिल सिर्फ रस के लिए नहीं धड़कता था, वह प्रकृति के रहस्यों को भी जानना चाहती थी।



एक मखमली धूप भरी सुबह को छत्ते में मधुमक्खियों की सभा हो रही थी। एक बुजुर्ग मधुमक्खी ने बताया, "बगीचे के एक कोने में, पुराने बरगद के नीचे, एक दुर्लभ फूल खिलने वाला है। उसका रस इतना मीठा होता है कि स्वाद लेते ही सारी थकान मिट जाती है। उसकी खुशबू दूर-दूर तक फैलती है लेकिन पहुँचना आसान नहीं है। रास्ते में काँटे, हवा के झोंके और अनेकों खतरे हैं।" सुनकर मीता के पंख जोश से काँप उठे। जिज्ञासा ने उसके मन में आग जला दी। "मैं ढूँढ लूँगी!" उसने ठान लिया। दोस्तों ने चेतावनी दी, "मीता, तुम छोटी हो और खतरा बड़ा!" लेकिन मीता ने मुस्कुराकर कहा, "छोटा होना कमज़ोरी नहीं, हल्कापन है आसमान छूने का!" वह उड़ चली, अपने छोटे-से थैले में रस भरने को तैयार।

मीता की यात्रा रोमांचक थी। पहले वह लाल गुलाब के बगीचे में पहुँची। वहाँ काँटेदार झाड़ियाँ थीं लेकिन गुलाबों की लालिमा इतनी मोहक लगी कि मीता रुक गई। तभी एक भयंकर हादसा हुआ। एक काँटा उसके पंख में फँस गया! दर्द से चीख पड़ी मीता लेकिन हार भी नहीं मानी। उसने साहस से झटका देकर पंख हिलाया और पड़ोस की एक मधुमक्खी दोस्त मीरा को बुला लिया। मीरा ने मदद की और कहा, "मीता, खतरे में भी सीख है, सावधानी से उड़ो!" मीता ने थोड़ा गुलाब का रस चूसा...मीठा लेकिन तीखा। "आह! यह जुनून का रस है," उसने सोचा।

आगे बढ़ी तो जूही के बगीचे में पहुँची। सफेद जूही की पँखुड़ियाँ चाँदनी-सी चमक रही थीं लेकिन यहाँ भी एक नई चुनौती थी। तेज हवा का झोंका आया और मीता को बहा ले गया। वह पेड़ की डाल पर जा अटकी। थकान हुई तो उसने याद किया छत्ते की सीख को यानि "समूह की ताकत!" पास की मधुमक्खियों को चहचहाहट से बुलाया। वे दौड़ी चली आईं। सबने मिलकर

एक घेरा बनाकर हवा का मुकाबला किया और मीता को बचाया। जूही का रस कोमल था। "यह शाँति और एकता का रस है," मीता ने महसूस किया।

हार न मानकर वह और ऊँचा उड़ी और एक छोटी पहाड़ी पर जा



पहुँची। रास्ते में एक तितली मिली जो थकी हुई थी। मीता ने पूछा, "क्या हो गया?" तितली बोली, "भूख लगी है, रस नहीं मिल रहा।" मीता ने अपना आधा रस साँझा किया। दोस्ती का सबक लिया! तितली खुश होकर बोली, "तुम्हारा फूल बरगद के नीचे है लेकिन सावधान...! वहाँ मकड़ी का जाला है!" मीता सतर्क हो गई। पुराने बरगद के नीचे एक नीला-हल्का फूल खिल रहा था...नीलकमल जैसा लेकिन जंगली। उसकी पँखुड़ियाँ बारिश की बूँदों से नहाई हुई थीं। रस इतना शुद्ध और मीठा कि मीता को लगा, यही वह फूल है! लेकिन मकड़ी का जाला भी पास था। बरगद की पुरानी पत्तियाँ फुसफुसाकर उसे सावधानी का एहसास कराती रहीं।

मीता ने बरगद का शुक्रिया किया और चतुराई से उड़ी। जाले से बची, रस चखा और खुशी से चहक उठी.... वाह। लेकिन तभी खतरे की घंटी बजी। पहाड़ी पर घूम रही एक छोटी लड़की जिसका नाम था रानी ने वह फूल देख

लिया। रानी के हाथों में टोकरी थी और आँखों में लालच। "कितना सुंदर फूल है! तोड़ लूँगी, घर सजा दूँगी!" बुदबुदाते हुए वह फूल की ओर बढ़ी।

मीता ने देखा तो दिल धक-धक करने लगा। मीता को लगा कि वह बरगद की सदियों पुरानी ठंडी छाँव को उदास कर रही है क्योंकि घने बरगद की छाँव तले ही तो वह नीलकमल जैसा हल्का नीला फूल खिल रहा था। साहस जुटाकर मीता उड़ी और रानी के हाथ पर हल्के से बैठ गई। जब मीता रानी के हाथ पर बैठी तो उसने काटा नहीं बल्कि अपने पंखों को एक खास लय में फड़फड़ाया और अपनी नन्ही जादुई आवाज़ में रानी के मन को छुआ। बच्चे बहुत मासूम होते हैं, वे प्रकृति की भाषा बहुत जल्दी समझ जाते हैं। रानी को



ऐसा लगा जैसे कोई नन्हीं03 दोस्त सीधे उसके दिल से बात कर रही हो।

रानी ने जैसे ही फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया वो चौंकी, "अरे, मधुमक्खी!" मीता ने अपनी छोटी-सी आवाज में कहा, "रानी दीदी, रुको! फूल तोड़ना मत। इसमें भी जान है, जैसे तुम में, जैसे हम में। यह हमें खुशी देता है, हवा साफ करता है, मक्खियों को घर देता है। अगर तोड़ोगी तो यह मुरझा जाएगा और बगीचा उदास हो जाएगा। बस इसे देखो, महसूस करो लेकिन छोड़ दो ताकि यह कल फिर खिल सके।"

रानी रुक गई। मीता की बात उसके नन्हें से मन में उतर गई। बच्चे सीखते हैं जब कोई दोस्ताना तरीके से सिखाए। रानी ने मुस्कुराकर कहा, "सॉरी, मीता दीदी। मैंने सोचा नहीं था। अब मैं फूलों को सिर्फ देखूँगी और कभी नहीं तोड़ूँगी। चलो, मैं तुम्हें फूल का रस लेने में मदद करूँ। जाला भी हटाती हूँ!"

मीता ने राहत की साँस ली। रानी ने जाला साफ किया, मीता ने फूल का



थोड़ा-सा रस पिया। इतना मीठा कि लगा कि जैसे स्वर्ग का अमृत हो।

फिर वह छत्ते लौटी। छत्ते पहुँचकर मीता ने वह दुर्लभ रस सबसे पहले अपनी बुजुर्ग मधुमक्खी और पड़ोस की दोस्त मीरा के साथ साँझा किया। उसने तितली को भी धन्यवाद देने के लिए आमंत्रित किया। पूरे छत्ते ने यह जाना कि मीता सिर्फ एक मीठा रस नहीं लाई थी बल्कि अपने साथ साहस, सहयोग और इंसानों के साथ दोस्ती का एक अनमोल उपहार भी लाई थी। जब पूरा छत्ता मीता की तारीफ कर रहा था तो मीता ने भी गर्व से भरकर दोस्तों को बताया, "मैंने नया फूल ढूँढ लिया! लेकिन इस दौरान सबसे बड़ी

खोज यह हुई कि प्रकृति का सम्मान करना ही असली मिठास है। रानी दीदी ने भी वादा किया है कि अब फूल सुरक्षित रहेंगे। वह उन्हें कभी नहीं तोड़ेगी।" सुनकर मधुमक्खियों का छत्ता खुशी से गूँज उठा।

रानी की सोच भी बदल गई। वह अब बगीचे में फूलों को पानी देती, तितलियों को रस देती और मीता को देखकर लहराती। मीता की खोज ने न सिर्फ रस दिया बल्कि दोस्ती, साहस और सीख का पुल भी बाँध दिया। बगीचा अब और जीवंत हो गया था।

□

सुखवन का सुख

एक समय की बात है, हिमालय की शीतल तलहटी में बसा था एक छोटा-सा राज्य जिसका नाम था 'सुखवन'। 'सुखवन' राज्य सचमुच अपनी नाम की तरह खुशहाली का आशियाना था। चारों ओर फैली हरी-भरी घाटियाँ, चाँदी की तरह चमचमाती नदियाँ और हवा में तैरती भीनी-भीनी सुगंध इस राज्य को किसी जीवित फंतासी जैसा रूप देती थीं। यहाँ के न्यायप्रिय राजा विक्रम और दयालु रानी सुमित्रा केवल शासन नहीं करते थे बल्कि प्रजा को अपनी संतान की तरह पालते भी थे। राजा के सफेद बालों में वर्षों के अनुभव की गरिमा थी तो रानी की आँखों में असीम वात्सल्य। राज्य में धन-धान्य का भंडार कभी खाली न होता था और प्रजा अपने राजा-रानी की दीर्घायु के गीत गाते नहीं थकती थी।



राजा-रानी अपनी प्रजा की भलाई के लिए नित नए प्रयास करते। राजा अगर व्यापार और सुरक्षा के रास्ते सुगम बनाते तो रानी शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रबंध में जुटी रहतीं।

वार्षिक 'फसल महोत्सव' के दौरान जब पूरा राज्य नाच-

गाने और दावतों में डूब हुआ था तब एक गरीब किसान का नन्हां बच्चा गिरकर चोटिल हो गया। राजा विक्रम ने स्वयं आगे बढ़कर अपने हाथों से उस बच्चे को उठाया और उसके घाव पर पट्टी बाँधी। इस सहृदयता ने प्रजा के दिलों में राजपरिवार के प्रति अगाध प्रेम भर दिया।

लेकिन समय का पहरा सदा एक-सा नहीं रहता। एक दिन सुखवन की

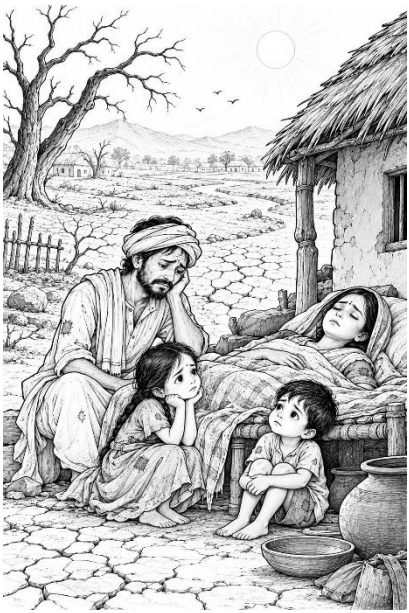

इस हँसती-खेलती खुशहाली को न जाने किसकी बुरी नज़र लग गई। नीले आसमान से बादल अचानक ऐसे गायब हुए जैसे कभी थे ही नहीं। देखते ही देखते भीषण सूखे ने पूरे राज्य को अपनी चपेट में ले लिया। कल-कल बहती नदियाँ सूखकर रेतीले रास्तों में बदल गईं, लहलहाते खेत बंजर होकर दरकने लगे और अकाल का काला साया चारों ओर मँडराने लगा। हरियाली की जगह धूल और मायूसी ने ले ली।

स्थिति तब दिल दहला देने वाली हो गई जब गाँव-गाँव में भुखमरी पैर पसारने लगी। गरीब किसान रामू की बीमार पत्नी बिस्तर से लग चुकी थी और उसके मासूम बच्चे एक-एक निवाले के लिए तरस रहे थे। लाचार रामू जब रोते हुए महल पहुँच तो राजा विक्रम ने बिना एक पल गँवाए शाही अन्न भंडार के दरवाज़े प्रजा के लिए खोल दिए। किंतु प्रकृति की मार इतनी निष्ठुर थी कि शाही भंडार भी खाली होने लगे। भूख से बिलखते लोगों का धैर्य जवाब देने

लगा और जिस राज्य में कभी प्रेम और भाईचारे का संगीत गूँजता था, वहाँ अब चोरी, लूटपाट और अराजकता का खौफनाक सन्नाटा छाने लगा।

एक रात गाँव के सरकारी गोदाम में सन्नाटे को चीरती हुई कुछ आहटें गूँजीं। अकाल से बेबस होकर कुछ चोर अनाज चुराने की नीयत से भीतर घुस आए थे। किस्मत से गाँव के साहसी युवक हरि की नज़र उन पर पड़ गई। हरि ने बिना अपनी जान की परवाह किए शोर मचा दिया। पकड़े जाने के डर से चोर तो भाग निकले लेकिन भागते-भागते उन्होंने हरि पर हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। इस वारदात ने पूरे सुखवन में दहशत का ज़हर घोल दिया। जो लोग कल तक एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी थे, आज वही अविश्वास के साए में जीने लगे। लोग घरों में बंद रहने लगे। ढलते सूरज के साथ घर के किवाड़ बंद हो जाते। मासूम बच्चे डर के मारे सहम उठते और राज्य में असुरक्षा की काली छाया घनी होती चली गई।

जब यह दुखद खबर महल तक पहुँची तो राजा विक्रम का दिल तड़प उठा। उन्होंने व्यथित होकर रानी से कहा, "रानी, भूख ने हमारी प्रजा से उनका विवेक और सुरक्षा का अहसास छीन लिया है। अगर ऐसा ही रहा तो सुखवन भीतर से टूट जाएगा।"

प्रजा के बिखरते हौसले को सँभालने के लिए राजा और रानी ने महल के प्राँगण में एक विशाल सभा का आयोजन किया। सभा में जुटी भीड़ के चेहरों पर भुखमरी की लाचारी और डर की लकीरें साफ दिख रही थीं। माहौल में एक भारी उदासी छाई थी। तभी राजा विक्रम की ओजस्वी और गंभीर आवाज़ गूँजी, "मेरे प्रिय प्रदेशवासियो! यह कठिन समय हमारी सहिष्णुता और इंसानियत की परीक्षा का है। संकट के इस दौर में अगर हम आपस में ही लड़ने लगे या एक-दूसरे से डरने लगे तो अकाल से पहले हमारी नीतियाँ हार जाएँगी। हमें एक-दूसरे की ढाल बनना होगा। हमें एक-दूसरे को प्यार और

आपसी सहयोग देना होगा। कोई भूखा न सोए। जिसके पास अनाज का एक दाना भी अधिक है, वह अपने भूखे पड़ोसी के साथ उसे बाँटे। जब हम एक-दूसरे का हाथ थामेंगे तभी सुखवन इस विपदा से उबर पाएगा।"

राजा के शब्दों ने बुझते हुए दिलों में उम्मीद की चिंगारी जला दी। कई लोगों की आँखें भर आईं। तभी रानी सुमित्रा आगे आईं और अत्यंत वात्सल्य भरे स्वर में बोलीं, "हमारी धरती माँ आज रुष्ट नहीं बल्कि थक चुकी है। हमने हमेशा प्रकृति से सिर्फ लेना सीखा है, उसे देना नहीं। अगर हम नदियों की स्वच्छता लौटाएँ, नए पौधे रोपें और मूक जीवों पर दया दिखाएँ तो हमारी यह पवित्र वसुंधरा मुस्कुरा उठेगी और हमें फिर से धन-धान्य से सराबोर कर देगी।"

राजा-रानी के इन शब्दों ने प्रजा के मन से भय निकालकर एकता और सेवा का भाव भर दिया। इन संदेशों ने जादू तो कर दिया लेकिन संकट इतना गहरा था कि नदियाँ खुद-ब-खुद बहने वाली नहीं थीं। केवल बातों से सूखे कुएँ नहीं भर सकते थे। ज़मीनी हकीकत अब भी भयावह थी।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए राजा विक्रम ने पड़ोसी राज्यों की ओर मदद के हाथ बढ़ाने का फैसला किया। उनकी दूरदर्शी पुत्री राजकुमारी अन्नपूर्णा का विवाह समृद्ध पड़ोसी राज्य 'जलवन' के राजकुमार से हुआ था। जलवन की ख़ासियत यह थी कि वहाँ के निवासी वर्षा की एक-एक बूँद को तालाबों, बावड़ियों और कुंडों में सहेजकर रखने की कला जानते थे। जल-संरक्षण की इसी प्राचीन और बुद्धिमत्तापूर्ण परंपरा के कारण, भीषण से भीषण अकाल भी जलवन की खुशहाली को छू नहीं पाता था।

राजकुमारी अन्नपूर्णा को जब अपने मायके 'सुखवन' के भीषण अकाल की खबर मिली, तो उनका हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने बिना एक पल का

विलंब किए अपने पिता राजा विक्रम को संदेश भिजवाया, "पिताजी, धैर्य रखें! मैं जलवन के सहयोग से शीघ्र ही सुखवन की ओर जल-धाराएँ मोड़ रही हूँ।"

जलवन के कुशल इंजीनियरों ने अथक प्रयास करके विशाल पाइपों और नहरों की शृंखला के माध्यम से जलवन के जलाशयों का पानी सुखवन की सूखी नदियों की ओर प्रवाहित कर दिया। सूखी, दरकी हुई धरती पर जब पानी की पहली कल-कल करती धारा पहुँची तो प्रजा के लिए वह किसी दिव्य चमत्कार से कम न था। खेतों को जीवन मिला और लोगों की आँखों में खोई हुई आस लौट आई।

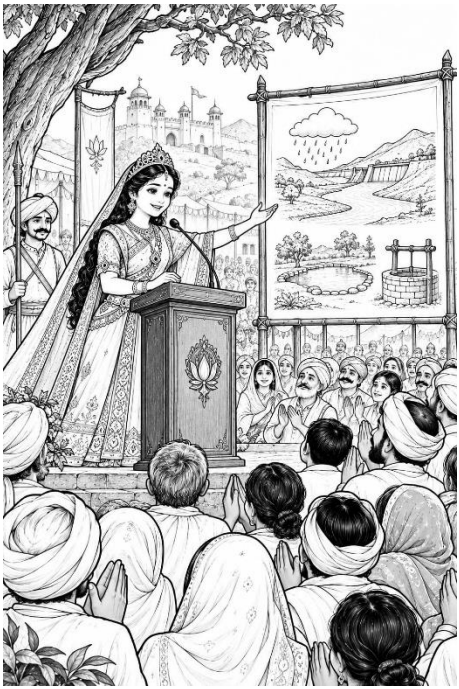

इसके तुरंत बाद, राजकुमारी अन्नपूर्णा स्वयं सुखवन पहुँचीं। प्रजा को संबोधित करते हुए उन्होंने एक विशाल जनसभा में प्रेरणादायी विचार रखे, "सुखवन के मेरे प्रियजनो! जल ही जीवन का असली आधार है। हमें वर्षा की एक-एक बूँद को सहेजने की कला सीखनी होगी। तालाबों का जीर्णोद्धार करें, नए कुएँ खोदें और जल की बर्बादी को पूरी तरह रोकें। मैंने जलवन में देखा कि कैसे छोटी-छोटी नदियों को जोड़कर और बाँध बनाकर अकाल को मात दी जा सकती है। आइए, हम सब भी मिलकर अपनी धरती को फिर से हरा-भरा बनाएँ!"

राजकुमारी के इस आह्वान पर पूरा प्राँगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। देखते ही देखते अन्नपूर्णा के कुशल नेतृत्व में राज्य भर में 'जल संरक्षण अभियान' का नगाड़ा बज गया। जन-आंदोलन का रूप ले चुके इस अभियान में बच्चे, युवा और बुजुर्ग सब कंधे से कंधा मिलाकर जुट गए। बच्चों ने पुराने तालाबों से कचरा हटाकर उन्हें साफ किया तो किसानों ने अपनी-अपनी जमीनों पर जल-संचयन के लिए गड्ढे और पोखर खोदे। प्रजा की इस अथक मेहनत और एकजुटता का सुखद परिणाम जल्द ही दिखने लगा और राज्य की स्थिति में चमत्कारी सुधार होने लगा।

इस पूरे घटनाक्रम ने राजा विक्रम और रानी सुमित्रा की आँखें खोल दीं। उन्हें इस सत्य का बोध हुआ कि सुखवन को किसी की 'नज़र' नहीं लगी थी बल्कि वर्षों से नदियों के अविरल बहने के कारण वे जल-प्रचुरता के भ्रम में जी रहे थे। इसी गफलत में उन्होंने पूर्वजों की प्राचीन जल-संरक्षण प्रणालियों की अनदेखी कर दी थी। अपनी इस ऐतिहासिक भूल का प्रायश्चित करने और सुखवन के भविष्य को सदा के लिए सुरक्षित बनाने हेतु राजा ने बिना संकोच शाही राजकोष के द्वार पूरी तरह खोल दिए ताकि भूल का सुधार हो सके।

लोग प्रभावित हुए। रामू का परिवार जिसकी पत्नी बीमार थी, की पड़ोसियों ने मदद की...अनाज दिया, दवा लाए। हरि, जो घायल था, गाँव वालों ने उसकी भी देखभाल की और मिलकर गश्त लगानी शुरू की। चोरी रोकने के लिए 'रक्षा दल' बनाया गया। युवक रात में पहरा देते और चोरों को पकड़कर राजा के सामने पेश करते।

ऐसे ही एक दिन, रक्षा दल के सिपाहियों ने एक चोर को रंगे हाथों पकड़कर राजा विक्रम के समक्ष पेश किया। राजा ने गंभीर स्वर में उससे पूछा, "तुमने चोरी जैसा अपराध क्यों किया...?"

चोर ने डरते और काँपते हुए सिर झुकाकर कहा, "जहाँपनाह! मैं कोई पेशेवर अपराधी नहीं हूँ। भूख से बिलखते अपने परिवार की लाचारी मुझसे देखी नहीं गई, इसलिए मजबूरी में यह कदम उठा बैठा।"

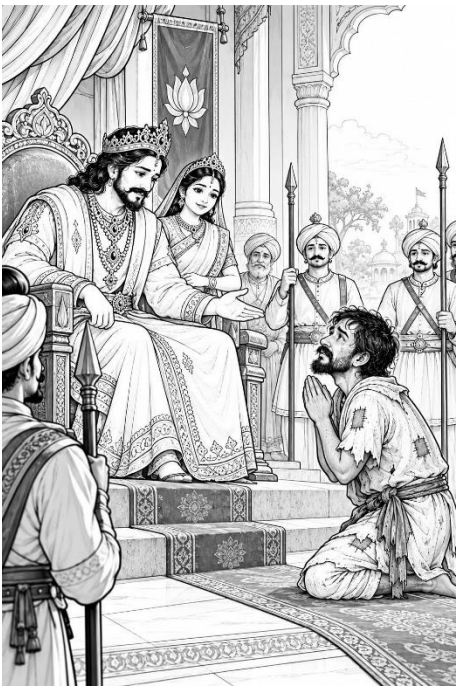

चोर की व्यथा सुनकर राजा विक्रम का हृदय पिघल गया। उन्होंने एक लंबी साँस ली और करुणा भरे स्वर में बोले, "तुम्हारा अपराध स्वीकार्य नहीं है लेकिन तुम्हें भूखा छोड़ना हमारी भी विफलता थी। इसलिए तुम्हें जेल की सलाखों में भेजने के बजाय हम एक नया अवसर देते हैं। तुम सुखवन का ऋण चुकाओगे—पेड़ लगाओगे, खेतों में पसीना बहाओगे और इस बंजर धरती को दोबारा हरा-भरा बनाने में सहयोग करोगे।"

राजा का ऐसा अनूठा और मानवीय न्याय देखकर चोर की आँखों में पश्चाताप के आँसू छलक आए। उसने उसी क्षण अपराध का रास्ता छोड़ दिया और जी-जान से राज्य की पुनर्निर्माण सेवा में जुट गया।

अकाल से निपटने के लिए अब पूरा सुखवन एक कुटुंब की तरह काम कर रहा था। रानी सुमित्रा ने 'हरित अभियान' का बिगुल फूँका। राज्य का हर नागरिक नदियों के किनारे और खाली पड़ी ज़मीन पर पौधे रोपने लगा। जन-

जूनून का असर यह हुआ कि कुछ ही महीनों में सूखी धरती पर हरियाली की नई चादर बिछ गई। जब प्रकृति ने इंसानों के इस अटूट समर्पण को देखा, तो आसमान में काले-घुंघराले बादल घिर आए और झमाझम बारिश होने लगी। प्रजा ने इस बार वर्षा की एक-एक बूँद को सहेजने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

एक दिन, एक छोटी लड़की ने राजा से कहा, "महाराज, मैंने भी एक बीज बोया!" राजा ने मुस्कुराकर उस बच्ची की पीठ थपथपाई और उसे शाबाशी दी। इस छोटी-सी घटना से प्रेरित होकर राजा ने पूरे राज्य में फलदार और छायादार वृक्षों के बीज बंटवा दिए। बच्चों ने नदियों के किनारे पेड़ लगाए और किसानों ने वर्षा जल संग्रहण के लिए कुछ और तालाब खोदे।

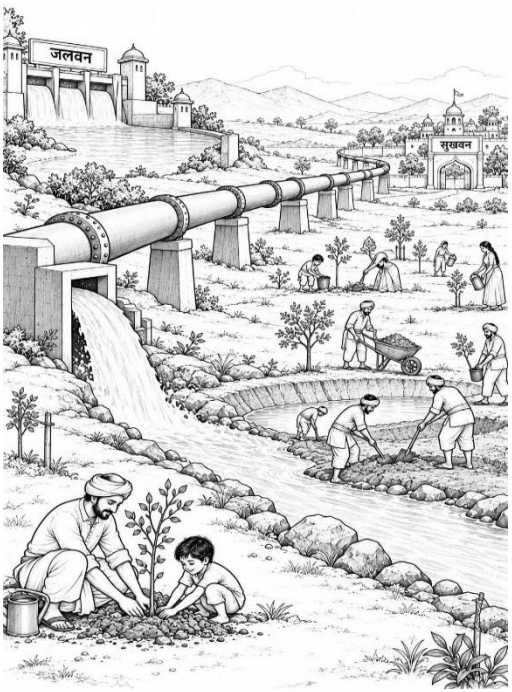

कड़े परिश्रम और अटूट एकता का फल आखिरकार मिला। सुखवन की नदियाँ एक बार फिर चाँदी की तरह जगमगाने लगीं, खेतों में सुनहरी फसलें लहलहा उठीं और बगीचे चिड़ियों की चहचहाहट से ऐसे गूँज उठे मानो स्वयं प्रकृति ने प्रजा के इस अनुशासन, प्रेम और दूरदर्शिता को अपना आशीर्वाद दे दिया हो।

राजा विक्रम और रानी सुमित्रा अपनी प्रजा के इस अभूतपूर्व समर्पण, अनुशासन और सहयोग को देखकर भाव-विभोर थे। विपत्ति को अवसर में

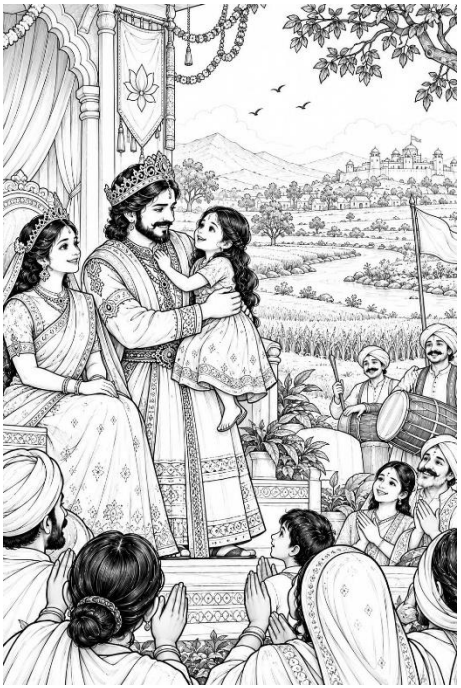

बदलने की इस ऐतिहासिक सफलता पर, राजपरिवार की अगुआई में पूरे राज्य में एक भव्य 'एकता उत्सव' का आयोजन किया गया। चारों ओर केवल उल्लास और उमंग का वातावरण था। गलियों और चौराहों पर रंगोलियाँ सजाई गई थीं, लोग ढोल-नगाड़ों की थाप पर आनंदित होकर झूम रहे थे और हवा में सामूहिक स्वर में गूँजते एकता के मधुर गीत तैर रहे थे।

उत्सव के इसी मनमोहक माहौल में, वही छोटी बालिका राजा विक्रम के समीप आई और अत्यंत भोलेपन से अपनी नन्हीं उँगलियों से राजा का आँचल छूकर बोली, "महाराज! हमारा सुखवन तो अब पहले से भी कहीं अधिक सुंदर, हरा-भरा और समृद्ध हो गया है!"

बालिका के इन निश्छल और मासूम शब्दों को सुनकर राजा विक्रम और रानी सुमित्रा के चेहरों पर वात्सल्यमयी मुस्कान तैर गई। राजा ने स्नेहपूर्वक उसे गोद में उठा लिया और पूरे जनसमूह की ओर देखते हुए गदगद स्वर में कहा, "प्रिय बच्ची! यह जादुई परिवर्तन केवल मेरा या रानी का चमत्कार नहीं

बल्कि तुम सभी के आपसी प्रेम, अटूट एकता, दूरदर्शिता और कठिन परिश्रम का मीठा फल है।"

इसके बाद राजा विक्रम ने ऊँचे मंच से संपूर्ण प्रजा को संबोधित करते हुए कहा, "मेरे प्यारे देशवासियो! आज सुखवन ने पूरे संसार को एक महान पाठ सिखाया है कि संकट कितना भी विशाल और भयानक क्यों न हो यदि हमारे मन में नम्रता, आपसी सहयोग, अनवरत मेहनत, प्रकृति के प्रति सम्मान और एक-दूसरे पर अटूट विश्वास हो तो बड़े से बड़े अकाल को भी मात दी जा सकती है। जब तक हम एक हैं, सुखवन को कोई शक्ति पराजित नहीं कर सकती!"

राजदरबार से लेकर दूर-दराज के गाँवों से आए लोगों ने जब राजा के इन ओजस्वी विचारों को सुना तो उनकी आँखें गर्व और श्रद्धा से भर आईं। सुखवन के निवासियों के हृदय में अपने राजा-रानी और राजकुमारी अन्नपूर्णा के प्रति आदर का स्थान और भी गहरा हो गया। आने वाली पीढ़ियों को सुनाने के लिए अब उनके पास सिर्फ सुख-समृद्धि की नहीं बल्कि संकट से उबरकर पुनर्जीवित हुए अपने राज्य के साहस, न्यायप्रियता और जल-संरक्षण की गौरव-गाथाएँ भी थीं।

□

होली के रंगों का रहस्य

रंगपुर गाँव जो अपनी सादगी और आपसी भाईचारे के लिए जाना जाता था, की गलियों में मिट्टी की सोंधी खुशबू और खेतों की हरियाली बसी थी। गाँव का रंग-रूप ऐसा था मानो प्रकृति ने अपनी सबसे सुंदर रंगीन साड़ी बिछा दी हो जिस पर रंग-बिरंगे फूलों के गुच्छे सजे हों।

इसी गाँव में अबीर नाम का एक लड़का रहता था... नटखट और चंचल। नाम तो उसका अबीर था पर रंगों से उसे चिढ़ थी। होली का नाम सुनते ही वह घर की देहरी के भीतर छिप जाता। उसे लगता रंग उसके कपड़ों को, उसके साफ-सुथरेपन को बिगाड़कर रख देंगे। गुलाल उसके बालों को उलझा देगा। ढोल और नगाड़ों का शोर उसके मन की शाँति छीन लेगा। उसके कपड़ों



पर हमेशा के लिए दाग पड़ जाएंगे जो उसे बिल्कुल अच्छे नहीं लगेंगे।

माँ हँसते हुए कहती, "अबीर, रंग तो खुशी का प्रतीक हैं! होली वर्ष भर में एक बार आती है ढेर सारी खुशियाँ लेकर। इस दिन सब लोग मिठाई बनाते हैं, गुजिया बनाते हैं और सबसे बड़ी बात मिल-जुलकर कर खाते हैं।" पर अबीर के लिए यह सब बेकार की बात थी। वो माँ की बात सुनता ज़रूर लेकिन होली की खुशियों से

जुड़ नहीं पाता था। उसे याद आता जब वह पहली बार होली पर नानी के घर गया था तो पड़ोस के लड़कों ने उसे कीचड़ में गिरा दिया था। उसके कपड़े गंदे कर दिए थे। वह देर तक नहाता रहा था लेकिन कीचड़ था कि उतर ही नहीं रहा था। साफ-सफाई को लेकर वह जुनून की हद तक चिंतित रहता। जब भी होली नज़दीक आती तो उसे लगता कि वह कीचड़ उसके हाथ-पैरों पर, चेहरे पर एक ऐसे काले धब्बे की तरह फिर से लग गया है जो कभी नहीं मिटेगा। वह सपने में भी यही देखता कि हर तरफ कीचड़ है, गुलाल नहीं और कीचड़ के छींटे उस पर पड़ते जा रहे हैं।

विपरीत इसके रंगपुर में होली कोई साधारण पर्व नहीं था। गाँव का हर घर, हर गली, रंगों से सराबोर हो उठती। रंगपुर की गलियाँ, आँगन और यहाँ तक कि हवा भी रंगों से भर जाती थी। जंगल के जादुई फूलों से बने प्राकृतिक रंग इस उत्सव की शान थे। मगर अबीर फिर भी गाँव की होली का हिस्सा नहीं बनता था। उसे लगता था पता नहीं कब कोई उसे खींच कर कीचड़ में गिरा दे।

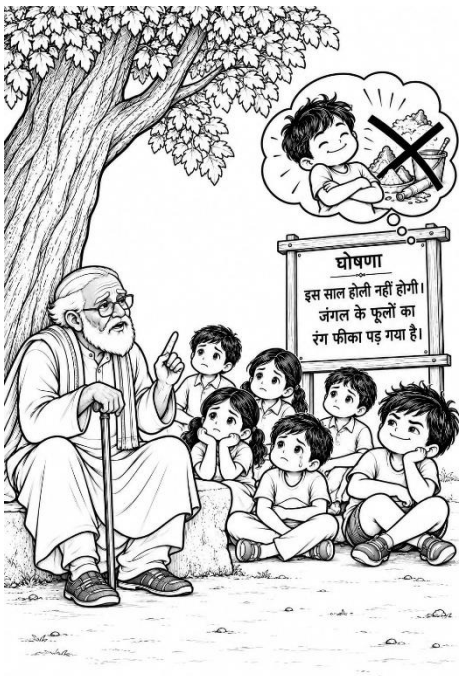

होली नज़दीक आती जा रही थी। परंतु इस बार जब मुखिया जी ने घोषणा की कि "इस साल होली नहीं

होगी। जंगल के फूलों का रंग फीका पड़ गया है" तो गाँव पर उदासी की छाया पड़ गई। यह सुनकर बच्चों की आँखें डबडबा आईं और बड़ों के चेहरे मुरझा गए। अबीर, जो रंगों का नाम सुनकर भागता था, मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, "चलो, इस बार रंगों से छुटकारा मिला।"

गाँव के सबसे बुजुर्ग और समझदार दादाजी ने बच्चों को बुलाया। उनकी आवाज़ में अनुभव का वजन था। "बच्चो...!" उन्होंने कहा, "ये फूल इसलिए मुरझाए हैं क्योंकि हमने प्रकृति की उपेक्षा की है। जब फूल रंग छोड़ देते हैं तो इसका मतलब है कि प्रकृति ने थोड़ा विरोध किया है। प्रकृति कुछ याद दिलाना चाहती है कि हमने पेड़ों को पानी नहीं दिया, मिट्टी को प्यार नहीं किया। फूलों का रंग लौटाने के लिए हमें प्रकृति से दोस्ती करनी होगी।" अबीर ने यह सुना तो उसे लगा यह बड़ों की बातें हैं जो बच्चों के बस की नहीं। "रंग और पानी का भला क्या संबंध? पानी तो सिर्फ पानी होता है जो धोने के काम आता है। और रंग सिर्फ रंग होता है जो कपड़ों पर दाग डालता है। प्रकृति से दोस्ती करने से रंग कैसे वापस आ जाएँगे?" उसे कुछ समझ नहीं आया और जब उसे यह सब बड़ों की बकवास लगी तो वह चुपके से घर लौट आया। उसे यकीन था कि रंग कभी वापस नहीं आएँगे और यह 'कीचड़ वाले दाग' वाली होली इस बार पक्का टल ही जाएगी।

दादाजी की बातों का गाँव के बच्चों पर गहरा असर हुआ, विशेषकर अबीर की सबसे प्रिय सहेली मीना पर। उसने मन ही मन यह संकल्प ले लिया कि वे सब मिलकर होली के इस पावन त्योहार के अस्तित्व को अवश्य बचाएंगे वरना कहीं ऐसा न हो कि आने वाले समय में होली सिर्फ एक याद बनकर रह जाए और वे कभी होली खेल ही न पाएँ।

मीना ने बड़ी आत्मीयता से अबीर को समझाते हुए कहा, "अबीर, ये रंग सिर्फ त्वचा पर लगाने के लिए नहीं होते, ये तो हमारी भावनाएं हैं। लाल रंग में

गहरा प्यार है, हरे में खुशहाल जीवन और पीले रंग में दोस्ती की सच्ची उमंग छिपी होती है।" लेकिन अबीर ने अरुचि दिखाते हुए मुँह बनाया और लापरवाही से कंधे उचकाकर बोला, "मुझे इन सब किताबी बातों की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं बिना रंगों के भी बिल्कुल ठीक हूँ।" उसने मीना की बात बीच में ही काटी और रूठकर अपनी खटिया पर लेट गया।

बच्चों ने जंगल को फिर से जीवंत करने के लिए दिन-रात मेहनत की। उन्होंने सूखी और बेजान टहनियों को हटाया, प्यासे पेड़ों की जड़ों को पानी से सींचा और बिखरी हुई फूलों की क्यारियों को करीने से सँवारा। इस कठिन परिश्रम में उनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था, उनके भीतर तो बस अपने गाँव की होली और उसकी परंपरा को बचाने की एक तीव्र ललक थी।

अबीर अपने कमरे की बंद खिड़की की दरार से चुपचाप यह सब देख रहा था। पहली नज़र में तो उसे उन सबकी जी-तोड़ मेहनत बिल्कुल निरर्थक और बेकार लगी लेकिन थकावट के बाद भी उनके चेहरों की चमक ने उसे सोच में डाल दिया। वे सब थके हुए थे, पसीने से तर थे फिर भी उनकी आँखों में उम्मीद और उत्साह की सुनहरी किरणें नाच रही थीं।

एक रात जब बच्चे जंगल में काम कर रहे थे, मीना को एक अजीब-सी चीज़ दिखी। जंगल के बीचों-बीच, जहाँ जादुई फूल उगते थे, एक छोटा-सा तालाब था जिसका पानी चाँद की रोशनी में चमकता था। तालाब के बीच में एक फूल तैर रहा था जो बाकी फूलों से अलग था। उसकी पंखुड़ियों पर रंग नहीं थे बल्कि जैसे सितारे चमक रहे थे। मीना ने बच्चों को बुलाया। सभी हैरान होकर उस फूल को देखने लगे। तालाब के किनारे एक पुरानी चट्टान पर कुछ लिखा था जो अब तक किसी ने नहीं देखा था "जो दिल से प्रकृति को पुकारे, वही मेरा रंग देख पाए।"

मीना ने बच्चों को कहा, "यह फूल जंगल का राजा है। शायद यही हमें रंग लौटाएगा।" बच्चों ने तय किया कि वे सब तालाब की देखभाल करेंगे। उन्होंने तालाब के आसपास की गंदगी साफ की, पानी को साफ रखने के लिए पत्थरों का घेरा बनाया। अबीर, जो अब तक दूर खड़ा देख रहा था को यह सब अजीब लगा। उस रात वह चुपके से तालाब के पास गया। चाँदनी में वह फूल और ज्यादा चमक रहा था। अबीर ने खिड़की से बच्चों को पसीना बहाते देखा था, मीना की आँखों में त्योहार खोने का डर देखा था। उसे लगा कि उसका 'साफ़-सुथरा रहने वाला अहंकार' गाँव की खुशी से कहीं अधिक बड़ा हो गया है। अबीर ने हिम्मत करके तालाब के पानी को छुआ और अचानक उसे लगा जैसे पानी में कोई धुन बजी। उसने आँखें बंद कर लीं और मन ही मन जंगल से माफी माँगी। वह फुसफुसाया, "ओ जंगल! ओ फूल! मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें सिर्फ रंग बनाने वाली चीज़ समझा। मैंने मीना को, दोस्तों की मेहनत को और दादाजी के ज्ञान को नज़रअंदाज़ किया। मैं सिर्फ अपने डर के गंदे दाग में उलझा रहा। मुझे माफ कर दो।"

अगली सुबह, जब बच्चे जंगल पहुँचे तो तालाब का वह फूल गायब था। लेकिन जंगल के सारे जादुई फूल फिर से रंगों से भर गए थे...लाल, हरा, पीला, जैसे सूरज और चाँद ने मिलकर उन्हें रंग दिया हो। बच्चों ने देखा कि तालाब के किनारे की चट्टान पर अब एक नया निशान उभरा था। एक छोटा-सा फूल, जिसके बीच में अबीर का नाम लिखा था। यह देखकर अबीर की आँखें भर आईं।

उसे समझ आ गया कि उसकी एक छोटी-सी माफी ने जंगल के दिल को छू लिया था।

अबीर का मन पछतावे से भर गया। उसे अपनी नासमझी पर शर्मिंदगी हुई। वह दौड़कर दादाजी के पास पहुँचा। "मैंने गलती की, दादा जी...!" उसने

सिर झुकाकर कहा, "मैंने सिर्फ अपने बारे में सोचा और जंगल को भूल गया। फूलों को भूल गया। तालाब को भूल गया।" दादाजी ने उसका कंधा थपथपाया, प्यार से गले लगाया और बोले, "बेटा, गलती मान लेना ही इंसानियत है।"



इस बार की होली गाँव के लिए अनोखी थी। बच्चों ने उन जादुई फूलों से रंग बनाए। अबीर ने पहली बार होली खेलने का मन बनाया। जब मीना ने उसके गाल पर लाल गुलाल लगाया, अबीर को लगा यह रंग नहीं, दोस्ती और प्रकृति का आशीर्वाद है। उसने मीना को हरा गुलाल लगाया, जैसे कह रहा हो, "हमारी दोस्ती हमेशा हरी-भरी रहे।" गाँव की गलियों में रंग बिखरे, हँसी गूँजी और भाईचारे का माहौल छा गया।

रंगपुर का गाँव फिर से रंगों में डूब गया। अबीर ने देखा कि रंगपुर में कहीं भी कीचड़ नहीं था। बस फूलों के रंग थे जो सभी चेहरों को और भी सुंदर

बना रहे थे। आज उसे पहली बार एहसास हुआ कि रंग सिर्फ चेहरों को ही नहीं बल्कि दिलों को भी रंगते हैं। प्रकृति का सम्मान, दोस्तों का साथ और एक छोटी-सी माफी का जादू। रंगपुर के रंगों का यही असली राज़ था।

अबीर, जो कभी रंगों से डरता था आज ख़ुद अबीर से सराबोर था। अब वह रंगों में अपनी खुशी और जंगल की खुशहाली तलाशने लगा था। वह समझ गया था कि होली की खुशी का रंग बाहर नहीं उसके भीतर ही था जिसे उसकी स्वयं की छोटी सोच ने अब तक दबा कर रखा हुआ था। उसे यह रहस्य भी समझ आ गया था कि होली का रंग कपड़े गंदे नहीं करता बल्कि मैले मन को साफ करता है।

□

बुद्धिमान कछुआ और शरारती बंदर

सघन और सुंदर वृक्षों से घिरे एक हरे-भरे जंगल के ठीक बीच से दर्पण जैसी साफ, मीठी और शाँत नदी बहती थी। नदी के किनारे, मानो पूरे जंगल का सरताज बनकर, आम का एक विशाल, पुराना और घना पेड़ खड़ा था। इस पेड़ की घनी छाँव में पूरा जंगल विश्राम करता था लेकिन इसकी ऊँची और लचीली डालियों पर चीकू नाम का एक बेहद नटखट और घमंडी बंदर रहता था। चीकू को अपनी हवा से बातें करती फुर्ती, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाने की कला और अपनी मजबूत पकड़ पर बहुत घमंड था। वह दिन भर शाखाओं को झकझोरता, कभी पके आम तोड़कर गिराता तो कभी आने-जाने वाले जीवों पर पत्तियाँ फेंककर उनका मज़ाक उड़ाता। उसके मन में यह बात घर कर चुकी थी कि इस पूरे जंगल में उससे ज़्यादा चतुर, तेज और शक्तिशाली और कोई जीव नहीं है।

उसी नदी के शीतल, पारदर्शी जल के भीतर धुनी नाम का एक बूढ़ा लेकिन अत्यंत बुद्धिमान कछुआ निवास करता था। धुनी का स्वभाव नदी के पानी की तरह ही शाँत, स्थिर और धीर-गंभीर था। उसकी पीठ पर जमी हरी काई इस बात की गवाही देती थी कि उसने जंगल के कई मौसम और बदलाव देखे हैं। वह वर्षों से नदी की हर गहराई, हर मोड़ और जंगल के छिपे हुए रहस्यों को अच्छी तरह जानता था। स्वभाव से धीमा होने के बावजूद धुनी अपनी सूझ-बूझ और दयालुता के लिए जाना जाता था और संकट के समय हमेशा दूसरों की निस्वार्थ मदद करने के लिए तत्पर रहता था।

चीकू बंदर को अक्सर धुनी कछुए की धीमी चाल का मज़ाक उड़ाने और उसे नीचा दिखाने में एक अजीब-सा आनंद मिलता था। जब भी उसका

मन करता, वह टहनी से झूलकर धुनी के ठीक सामने ज़मीन पर छलाँग लगाता और घमंड में भरकर कहता, "अरे ओ बूढ़े कछुए! तुम इतनी मरी हुई चाल से क्यों चलते हो? क्या ऊपर वाले ने तुम्हारी पीठ पर पत्थरों का पहाड़ बाँध दिया है? और जरा अपना यह मटमैला खोल तो देखो! न कोई रूप, न कोई रंग... तुम भी क्या अजीब जीव हो!" धुनी कछुआ चीकू के इन कड़वे और तीखे बोलों को सुनकर भी मुस्कुरा देता और पूरी सहनशीलता के साथ चुप रहता।

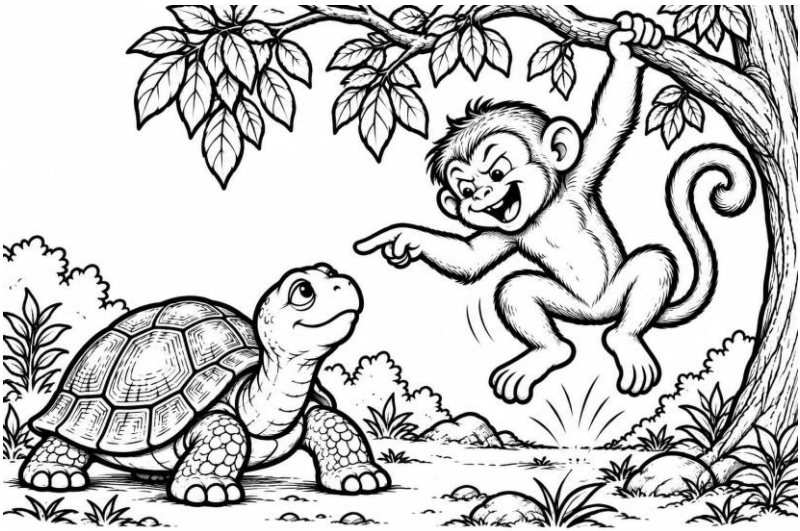

एक दिन चीकू ने अपने दोस्तों के सामने अपनी झूठी बुद्धिमानी का ढोल पीटने की कोशिश की। वह सीना फुलाकर अपने बंदर साथियों से बोला, "सुनो दोस्तो! आज मैंने पता लगाया है कि जंगल के सबसे मीठे फल उत्तर दिशा में हैं, चलो वहीं चलते हैं।"

पास ही आराम कर रहे धुनी ने बहुत ही कोमल स्वर में उसे समझाते हुए कहा, "चीकू बेटा, तुम राह भटक सकते हो। उत्तर दिशा में केवल कंटीली

झाड़ियाँ हैं। मीठे फलों का असली बाग तो पश्चिम दिशा में है, तुम्हें वहीं जाना चाहिए। मुझे यह बात मिट्ठू तोते ने कई बार बताई है।"

चीकू ने ज़ोरदार ठहाका लगाया और धुनी की बात को हवा में उड़ाते हुए बोला, "अरे बूढ़े! तुम्हारी उम्र हो गई है और तुम्हारा दिमाग सठिया गया है! तुम अपनी इस घिसटती चाल के साथ यहीं पड़े सड़ते रहो। हम फुर्तीले और चतुर जीवों को अपना रास्ता खुद ढूँढना आता है!"

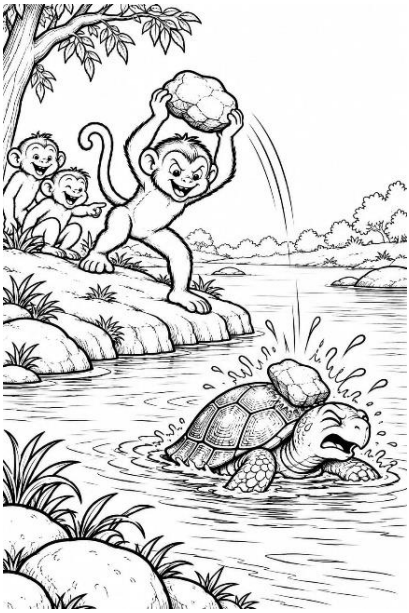

यह कहकर चीकू तेजी से पेड़ की शाखाओं पर चढ़ गया। लेकिन तभी उसके दिमाग में एक और दुष्ट शरारत ने जन्म लिया। केवल अपनी ताकत का प्रदर्शन करने और धुनी को नीचा दिखाने के लिए वह नदी किनारे उतरा और उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर एक बड़ा सा पत्थर उठाया और बिना सोचे-समझे सीधे नदी में धुनी की ओर उछाल दिया।

"छपाक!" की भारी आवाज़ के साथ वह पत्थर सीधा धुनी की ढाल जैसी पीठ पर जा लगा। चोट इतनी ज़बरदस्त थी कि धुनी दर्द से तड़प उठा और कराहते हुए किसी तरह किनारे की ओर खिसका। उसकी पीठ पर गहरी चोट आई थी।

चीकू को इस घिनौनी हरकत पर पछतावा होना तो दूर, वह बेदर्दी से हँसता हुआ अपने दोस्तों के साथ आगे बढ़ गया। धुनी नदी के किनारे अकेला पड़ा रहा और बिना किसी शिकायत के चुपचाप अपने शारीरिक दर्द और चीकू की क्रूरता को सहता रहा।

कुछ दिनों बाद चीकू के सिर पर अपनी ताकत और फुर्ती का प्रदर्शन करने का भूत फिर से सवार हो गया। उसने आम के विशाल पेड़ की सबसे ऊँची, पतली और कमज़ोर डाल पर एक रसीला, पका हुआ आम लटकते देखा। अपने साथी बंदरों को प्रभावित करने और खुद को सर्वश्रेष्ठ साबित करने की होड़ में चीकू ने बिना सोचे-समझे उस नाजुक डाल की ओर एक लंबी छलाँग लगा दी।

लेकिन जैसा कि कहते हैं कि अति-आत्मविश्वास और घमंड हमेशा विनाश की ओर ले जाता है, चीकू के पैर जमाते ही वह पतली टहनी "कड़-कड़" की तीव्र आवाज़ के साथ टूट गई। चीकू का संतुलन बिगड़ा और वह हवा में हाथ-पाँव मारता हुआ सीधे नीचे बहती हुई नदी के गहरे पानी में धड़ाम से जा गिरा!

विडंबना यह थी कि पेड़ों पर उड़ने जैसी छलाँग लगाने वाले चीकू को तैरने का 'त' भी नहीं आता था। पानी का तेज बहाव उसे अपने साथ बहाकर ले जाने लगा। वह बार-बार पानी में गोते खाने लगा और उसका घमंड भी पानी की लहरों में बहने लगा। वह जान बचाने के लिए घबराकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, "बचाओ! कोई मुझे बचाओ! मैं डूब रहा हूँ... मुझे तैरना नहीं आता!"

चीकू की चीख-पुकार सुनकर नदी किनारे कई पशु-पक्षी इकट्ठा तो हुए लेकिन चीकू के घमंडी स्वभाव और उसकी आए दिन की शरारतों से तंग आ चुके जानवरों में से कोई भी आगे नहीं आया। कुछ जानवर पीछे हट गए तो

कुछ डर के मारे दूर भाग गए। डूबते हुए चीकू को अब अपनी मौत सामने नज़र आने लगी थी।

नदी के गहरे पानी में डूबते चीकू की वह बेबस और दर्द भरी 'बचाओ! बचाओ!' की चीखें जब धुनी कछुए के कानों तक पहुँचीं, तो उसका करुणामयी हृदय तड़प उठा। धुनी अपनी पीठ पर लगी उस गहरी चोट का असह्य दर्द पल भर में भूल गया। उसने पुरानी सारी कड़वाहट और चीकू की दी हुई चोट को दरकिनार किया और बिना एक पल गँवाए नदी की तेज धाराओं को चीरते हुए चीकू की ओर तेजी से तैरना शुरू कर दिया।

चीकू डर से काँप रहा था और बार-बार पानी में गोते खा रहा था। धुनी उसके पास पहुँचा और आश्वस्त करने वाली आवाज़ में बोला, "घबराओ मत, चीकू! ढील मत छोड़ो, जल्दी से हिम्मत करके मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। मैं तुम्हें किनारे तक सुरक्षित ले जाऊँगा!" चीकू ने अपनी विवशता और बहते आँसुओं के बीच धुनी की बात मानी और किसी तरह उसकी चौड़ी, चोटिल पीठ को मज़बूती से थाम लिया। धुनी ने अपनी समूची बची हुई ताकत समेटी और लहरों का मुकाबला करते हुए चीकू को नदी के सुरक्षित किनारे पर ले आया।

किनारे पर पहुँचते ही चीकू ने राहत की साँस ली। धुनी की पीठ पर एक गहरा घाव देखकर चीकू का कलेजा मुँह को आ गया। यह वही घाव था जो उसके फेंके गए पत्थर से लगा था। चीकू का घमंड पूरी तरह चकनाचूर हो चुका था। वह धुनी के पैरों में गिर पड़ा, उसकी आँखों से पछतावे के आँसू बह निकले और वह रोते हुए गिड़गिड़ाया, "धुनी दादा, मैं अपनी हर हरकत पर बेहद शर्मिंदा हूँ! मैं हमेशा तुम्हारी धीमी चाल और रूप का मज़ाक उड़ाता था, मैंने तुम्हें इतना दर्द दिया... फिर भी तुमने अपनी जान जोखिम में डालकर मुझे

मौत के मुँह से निकाल लिया! आज मुझे समझ आ गया कि शारीरिक बल या फुर्ती से बड़ी ताकत 'करुणा और दयालुता' होती है। मुझे माफ कर दो, दादा!"

धुनी ने मुस्कुराते हुए कहा, "दोस्त, तुमने शायद खरगोश और कछुए वाली कहानी नहीं पढ़ी...? किसी की धीमी चाल या उसके बाहरी दिखावे से उसका अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए। सबकी अपनी-अपनी खासियत होती है।

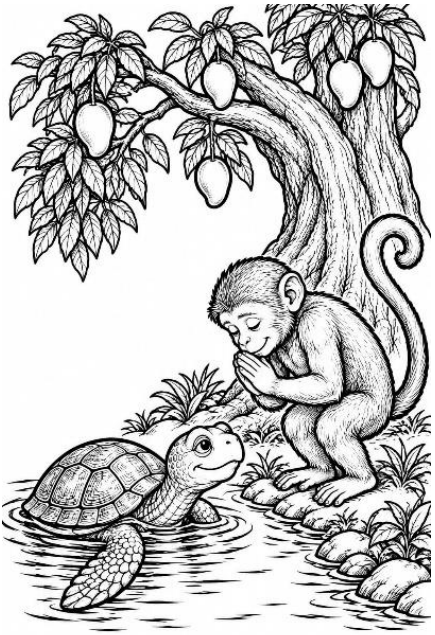

और हाँ, दयालुता का स्वभाव ही यह है कि वह पुरानी बातों को भूलकर मदद करती है। याद रखना, जब मुसीबत आती है तो ज्ञान और अच्छा व्यवहार ही काम आता है न कि केवल शोर, शरारत और फुर्ती।" सुनकर चीकू बहुत शर्मिंदा हुआ।

उस दिन के बाद से चीकू ने किसी को भी तंग करना छोड़ दिया और वह धुनी का सबसे अच्छा दोस्त बन गया। चीकू ने धुनी से मिलकर यह सीखा कि शरारत करने का अर्थ किसी का दिल दुखाना नहीं होता। और मुसीबत में आपका व्यवहार और दयालुता ही काम आती है।

□

चाँदनी और चाँद-बूँद पंख

रंगोली नाम के एक छोटे से गाँव में चाँदनी नाम की एक नन्हीं लड़की रहती थी। चाँदनी को पक्षियों से केवल प्यार ही नहीं था बल्कि वह उनकी भाषा भी समझती थी। वह हर सुबह अपने घर के पास वाले बगीचे में जाकर पक्षियों के गीत सुनती और महसूस करती कि ये गीत ही बगीचे की असली जान हैं।

उन सब में चाँदनी को एक नीली चिड़िया सबसे अधिक प्रिय थी। नीली चिड़िया के पंखों में एक अलौकिक चमक थी और उसके गीत इतने मधुर थे मानो वह झरनों का संगीत अपनी आवाज़ में घोल देती हो।



एक दिन चाँदनी ने देखा कि नीली चिड़िया उदास बैठी थी। उसके सुनहरे नीले पंखों की चमक फीकी पड़ गई थी। उसका गीत जो कभी जीवन का उत्सव होता था अब एक दबी हुई आह जैसा था। चाँदनी ने पूछा, "नीली चिड़िया, तुम इतनी उदास क्यों हो? तुम्हारा मधुर गीत कहाँ चला गया?"

नीली चिड़िया ने धीमी आवाज में कहा, "नन्हीं चाँदनी, मेरा 'चाँद-बूँद' पंख खो गया है। वह पंख केवल मुझे आसमान में सबसे ऊँचा उड़ने की ताकत

ही नहीं देता था बल्कि वही मेरे नीले संगीत का स्रोत भी था। जब तक वह नहीं मिलेगा मेरी आवाज़ और मेरे पंखों की चमक वापस नहीं आएगी।"

चाँदनी का दिल पिघल गया। उसने तुरंत कहा, "मैं तुम्हारा पंख ढूँढूँगी, नीली चिड़िया! चाहे वह जहाँ भी हो।"

नीली चिड़िया ने स्नेह से चाँदनी को देखा, "यह आसान नहीं होगा, प्यारी। वह पंख जंगल के सबसे गहरे हिस्से 'छायावन' में, 'चाँदनी कुंड' के पास ही कहीं गिरा है। लेकिन सावधान रहना, वहाँ कई भ्रम और स्वार्थी आत्माएँ छिपी हैं।"

चाँदनी ने बिना डरे अपनी छोटी सी टोकरी उठाई, उसमें ताजी रोटियाँ



और पानी रखा और दृढ़ संकल्प के साथ छायावन की ओर चल पड़ी। जंगल में घुसते ही उसे चारों तरफ अजीब-अजीब आवाज़ें सुनाई देने लगीं। पेड़ों की टहनियाँ सायँ-सायँ करती हवा में नाच रही थीं मानो कोई अज्ञात रहस्य बता रही हों। गहन जंगल के बीच जहाँ धूप मुश्किल से ज़मीन को छू पाती थी, चाँदनी को एक विशाल पत्थर के पास एक बूढ़ा कछुआ मिला। उसकी पीठ पर इतनी काई जमी थी, मानो वह स्वयं समय हो। चाँदनी को देखते ही कछुए ने धीमी लेकिन भारी आवाज़ में कहा, "कहाँ जा रही हो, नन्हीं बच्ची? क्या तुम्हें नहीं पता कि असत्य का रक्षक इस पंख की तलाश में है?"

चाँदनी ने साहसी आवाज़ में सारी बात बताई। कछुआ जिसका नाम 'कालजयी' था बोला, "चमकते तालाब तक जाने के लिए तुम्हें अपनी बुद्धि और निस्वार्थता को साबित करना होगा। तुम्हें तीन पहेलियाँ सुलझानी होंगी, जो केवल सत्य को जानने वाला ही सुलझा सकता है।"

"क्यों नहीं...?" चाँदनी ने दृढ़ता से कहा। "पूछो कोई भी पहेली। मैं जवाब देने के लिए तैयार हूँ।"

कालजयी कछुआ चाँदनी का उत्साह और विश्वास देखकर हैरान रह गया। उसने कहा, "यह रही पहली पहेली जो रूप के मोहमाया से जुड़ी है...

मैं हवा में उड़ता हूँ परंतु मेरे पंख मेरी ताकत नहीं। मेरी ताकत किसी और के पास होती है। मैं रंगीन हूँ पर मैं पक्षी नहीं। मेरा जीवन छोटा है और मेरी सुंदरता अनंत। बताओ, मैं क्या हूँ?"

चाँदनी ने तुरंत सोचा और मुस्कुराते हुए कहा, "पतंग! क्योंकि उसकी सुंदरता क्षणिक जीवन में भी जीवन का आनंद सिखाती है!"

कालजयी ने सिर हिलाया। "उत्कृष्ट! अब दूसरी पहेली जो प्रकाश के भ्रम से जुड़ी है...

मैं रात को चमकता हूँ पर मैं तारा नहीं। मैं उड़ता हूँ पर पक्षी नहीं। मेरी रोशनी छोटी है पर अँधेरे में दिखती है। बोलो मैं क्या हूँ?"

चाँदनी ने तुरंत जवाब दिया, "जुगनू! उसकी छोटी सी रोशनी यह सिखाती है कि आशा की किरण कितनी भी छोटी क्यों न हो, वह अँधेरे को मात दे सकती है।"

कालजयी कछुआ हँसा। "तुम बहुत होशियार हो, चाँदनी! अब आख़िरी और सबसे मुश्किल पहेली जो स्वयं ज्ञान से जुड़ी है। बोलो, तैयार हो...?"

"हाँ, मैं तैयार हूँ..." चाँदनी ने विश्वास की डोरी पकड़ते हुए कहा।

"ठीक है तो सुनो...

मैं पानी में रहता हूँ पर मछली नहीं। मेरे पास घर है पर मैं इंसान नहीं। मेरा घर मेरे साथ चलता है और मैं अपने भीतर की शाँति से जीता हूँ। मैं क्या हूँ?"

चाँदनी ने तालाब की ओर देखा और बोली, "घोंघा! वह हमें सिखाता है कि सच्चा घर बाहरी वस्तुओं में नहीं बल्कि अपने भीतर की शाँति में होता है।"

कालजयी कछुआ खुशी से उछल पड़ा और बोला, "तुमने न केवल पहेलियाँ सुलझाईं बल्कि उनके पीछे छिपे जीवन के अर्थ को भी समझा! जाओ, तुम्हारी निस्वार्थता ही तुम्हारी रक्षा करेगी।"

चाँदनी 'चाँदनी कुंड' के पास पहुँची। तालाब का पानी इतना साफ था कि उसमें चाँद की परछाई साफ दिखाई दे रही थी। तालाब के किनारे नीली चिड़िया का वही जादुई 'चाँद-बूँद' पंख चमक रहा था।

लेकिन जैसे ही चाँदनी की नज़र पंख पर पड़ी, उसकी साँसें थम गईं। पंख के ठीक ऊपर एक डरावनी, धुँधली और स्याह छाया मँडरा रही थी। उसकी आँखें सुलगते हुए अँगारे की तरह लाल थीं और उससे निकलने वाली ठंडी हवा मन में ज़हर घोलने वाली थी। यह कोई साधारण साया या प्राणी नहीं था बल्कि 'ईर्ष्या और स्वार्थ' की छाया थी जो कभी नहीं चाहती थी कि नीली चिड़िया का मधुर संगीत इस जंगल में दोबारा गूँजे और सब खुश रहें।

जैसे ही चाँदनी ने काँपते हाथों से उस चमकीले पंख को उठाने के लिए कदम बढ़ाया, ईर्ष्या की छाया हवा में और विशाल हो गई। उसने चाँदनी का रास्ता रोक लिया और उसके कानों में एक भारी, मोहिनी फुसफुसाहट गूँजी, "ठहरो, नन्हीं लड़की! क्यों किसी और के लिए इतना कष्ट सह रही हो? इस पंख को यहीं छोड़ दो! देखो, मेरे पास तुम्हारे लिए क्या है..."

कहते ही छाया ने हवा में हाथ लहराया और वहाँ एक चमचमाती सोने की ईंट प्रकट हो गई। छाया ज़हरीली मुस्कान के साथ फुसफुसाई, "इस सोने

की ईंट को ले जाओ! इससे तुम अपने लिए एक आलीशान सोने का महल बनवा सकती हो। या फिर चाहो तो मुझसे सदा सुंदर और अमर रहने का वरदान माँग लो! सोचो, जब तुम्हारे पास सब कुछ होगा, तो तुम्हें उस चिड़िया की क्या परवाह?"

छल-कपट और लोभ से भरी उस फुसफुसाहट ने एक पल के लिए चाँदनी के मासूम मन को डगमगा दिया। लालच की एक महीन सी परत उसके विचारों पर छाने लगी। लेकिन ठीक उसी क्षण, चाँदनी की आँखों के सामने नीली चिड़िया का वह उदास, बेबस और फीका पड़ा चेहरा घूम गया। उसे याद आया कि कैसे नीली चिड़िया का संगीत पूरे जंगल में खुशियाँ बाँटता था। उसे समझ आ गया कि निस्वार्थ भाव से दूसरों के आँसू पोंछने में जो आत्मिक आनंद है, वह दुनिया के किसी सोने के महल या सुंदरता में नहीं।



यह विचार मन में आते ही चाँदनी का अंतःकरण एक पवित्र रोशनी से भर उठा। उसने लोभ और स्वार्थ के उस जाल को एक झटके में तोड़ दिया। उसने अपनी टोकरी में हाथ डाला और अपनी आखिरी बची रोटी बाहर निकाली। बिना किसी भय या घृणा के, उसने अत्यंत निस्वार्थ और दयाभाव से वह रोटी उस खौफनाक छाया की ओर बढ़ा दी। चाँदनी का यह आचरण इस बात का

जीवंत प्रमाण था कि प्रेम और दयालुता के सामने दुनिया की कोई भी नकारात्मक शक्ति टिक नहीं सकती।

सच्चे निस्वार्थ प्रेम और दया के इस स्पर्श से ईर्ष्या की छाया तड़प उठी। छल और लालच का वह विशाल साया अचानक सिकुड़ने लगा और उसकी ताकत भाप बनकर उड़ने लगी। चाँदनी ने उस कमज़ोर पड़ती छाया को पूरी तरह अनदेखा किया, आगे बढ़कर उस जादुई पंख को सहजता से उठाया और बिना एक पल गँवाए तेजी से दौड़ती हुई नीली चिड़िया की ओर लौट चली।

जैसे ही चाँदनी ने वह पावन 'चाँद-बूँद' पंख नीली चिड़िया के पास रखा, वैसे ही एक अलौकिक नीली रोशनी का दिव्य प्रभाव चारों ओर फैल गया। ऐसा लगा मानो रात के गहन सन्नाटे में सैकड़ों तारे एक साथ उतर आए हों।



पंख के स्पर्श होते ही नीली चिड़िया का क्षीण पड़ा शरीर फिर से नई ऊर्जा से भर उठा। उसके पंख एक बार फिर स्वर्ग के सबसे गहरे, जादुई नीले रंग से जगमगाने लगे।

और अगले ही पल वह नीली चिड़िया अपने वास्तविक रूप, 'नीलपरी' के रूप में प्रकट हो गई। नीलपरी का वास्तविक रूप इतना अलौकिक और जादुई था कि उसे देखते ही चाँदनी की आँखें

फटी की फटी रह गईं। नीलपरी के शरीर से नीले-सुनहरे तारों जैसी मद्धम रोशनी छन रही थी। उसने गहरे आसमान के रंग की रेशमी पोशाक पहनी थी जिस पर हज़ारों छोटे-छोटे सितारे जड़े थे। उसके नीले रंग के लंबे घुंघराले बाल हवा में नदी की तरह तैर रहे थे। उसके माथे पर चाँदनी का नन्हां मुकुट चमक रहा था और पीठ पर मोरपंख और चाँद की किरणों से बने विशाल, पारदर्शी पंख लहरा रहे थे जिनसे हवा में चमकीली नीली-सुनहरी आभा झर रही थी। चाँदनी ने महसूस किया कि नीलपरी के आने से पूरे वातावरण में चमेली की भीनी-भीनी खुशबू और अद्‌भुत ठंडक घुल गई है।

चाँदनी नीलपरी के रूप से मोहित होकर उसे देख ही रही थी कि खुशी और आभार से छलछलाती आँखों के साथ नीलपरी ने अपने पंख फैलाए और आसमान की अनंत ऊँचाइयों की ओर उड़ चली। हवा में तैरते हुए उसने अपनी मधुर तान छेड़ी। उसके गले से निकला संगीत जब पूरे बगीचे और गाँव की वादियों में गूँजा, तो मुरझाए हुए फूल खिल उठे, पत्तियाँ खुशी से झूमने लगीं और बंजर धरती पर रंग-बिरंगी तितलियाँ नाचने लगीं।

एक लंबी और आनंदमयी उड़ान भरने के बाद नीलपरी हवा से उतरकर सीधी चाँदनी के पास आई। उसकी आँखों में वात्सल्य और अपार सम्मान था। उसने स्नेहपूर्वक चाँदनी के सिर पर अपना हाथ रखा और बोली, "चाँदनी! मैं ही वो नीली चिड़िया हूँ लेकिन मेरा असली रूप यही है। 'चाँद-बूँद' पंख खो जाने की वजह से मैं चिड़िया बनकर रह रही थी। देवताओं से मिले वरदान की वजह से मैं छोटा रूप भी धारण कर लेती हूँ। तुमने न केवल मेरा खोया हुआ संगीत और जीवन वापस लौटाया है बल्कि इस पूरे जंगल की आत्मा को भी बचाया है। तुम्हारी यह बहादुरी तुम्हारे पवित्र और निस्वार्थ हृदय से पैदा हुई है। बदले में मैं तुम्हें यह वरदान देती हूँ कि जब भी तुम या तुम्हारे गाँव का

कोई भी प्राणी सच्चे मन से और धर्म के लिए मुझे पुकारेगा, मेरी यह नीली रोशनी तुरंत तुम्हारी रक्षा के लिए उपस्थित हो जाएगी।"

नीलपरी ने अपनी जादुई छड़ी घुमाई और देखते ही देखते नीले मोतियों का एक जादुई हार हवा में चमकने लगा। उसने चाँदनी को हार पहनाते हुए कहा, "प्रिय चाँदनी, यह एक जादुई हार है। जब तक यह हार तुम्हारे पास रहेगा, तुम जंगल के हर मूक पशु-पक्षी का दर्द समझ सकोगी..." नीलपरी अभी बोल ही रही थी कि तभी पास की झाड़ी से गिलहरी का एक घायल बच्चा बाहर निकला जो दर्द से कराह रहा था। चाँदनी ने हार के प्रभाव से तुरंत उसकी पीड़ा भरी पुकार सुन ली, "आह! मेरे पैर में काँटा चुभ गया है!"

चाँदनी ने बिना देर किए उस छोटे-से जीव को अपनी गोद में उठाया और बड़ी कोमलता से उसका काँटा निकाल दिया। गिलहरी के बच्चे ने चाँदनी के गालों को चूमा और फुदकने लगा। नीलपरी यह देखकर मंद-मंद मुस्कुराई और बोली, "देखा चाँदनी, तुम्हें वरदान की आवश्यकता ही कहाँ है? सच्चा जादू तो तुम्हारे इस करुणामयी हृदय में ही बसता है!"



इसके बाद, नीलपरी ने चाँदनी को अपने पंखों पर बिठाया और हवा में तैरते हुए उसे

उसके घर के आँगन तक छोड़ आई।

उस ऐतिहासिक दिन के बाद से 'रंगोली' गाँव के नज़ारे हमेशा-हमेशा के लिए बदल गए। जब भी चाँदनी शाम के समय बगीचे में टहलने निकलती, नीलपरी आसमान से उतरकर उसके आसपास मंडराती और ब्रह्मांड के सबसे मधुर गीत गाती।

चाँदनी ने अपने इस साहसिक सफर से जीवन का सबसे बड़ा सत्य सीखा था कि दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति किसी बाहरी टोने-टोटके या सोने-चाँदी में नहीं होती बल्कि सही-गलत के विवेक, निस्वार्थ प्रेम और दूसरों के दुख में काम आने की भावना में होती है।

'रंगोली' गाँव के लोग चाँदनी की बहादुरी और दयालुता के किस्से आज भी बहुत प्यार और गर्व से सुनाते हैं।

□

कला का रंग

हिमाचल प्रदेश के एक हरे-भरे गाँव अम्ब में चुटकी नाम की एक नन्हीं लड़की रहती थी। चुटकी बोल नहीं सकती थी पर उसकी आँखें सितारों-सी चमकतीं और चेहरे पर हमेशा प्यारी-सी मुस्कान खिली रहती थी। गाँव के बच्चे उसे चिढ़ाते नहीं थे बल्कि प्यार करते थे क्योंकि उसकी होशियारी और संवेदनशीलता सबका दिल जीत लेती थी। वह अपनी आँखों और हाथों के इशारों से पूरी दुनिया समझा देती थी।



चुटकी को चित्रकारी से प्रेम था। चित्र बनाना उसकी माँ ने ही उसे सिखाया था। वह अपने घर की दीवारों पर कोयले से, आँगन की मिट्टी में उंगलियों से और खेतों में रंग-बिरंगे फूलों से चित्र बनाती। उसकी उंगलियाँ प्रकृति के साथ ऐसे नाचतीं मानो हर रेखा में गाँव की कहानी बुन रही हों। गाँव में हर साल 'गाँव का रंग' नाम से त्योहार मनाया जाता

था जहाँ बच्चे चित्र बनाकर अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करते थे और खूबसूरत पुरस्कार प्राप्त करते। इस बार मुखिया जी ने घोषणा की, "जो बच्चा सबसे सुंदर चित्र बनाएगा उसे विशेष पुरस्कार मिलेगा...जादुई रंगों का एक अनोखा डिब्बा जो कभी खत्म नहीं होगा!"

चुटकी का नन्हा-सा दिल इस घोषणा को सुनते ही अद्‌भुत उत्साह और रोमांच से भर गया। उसकी चमकती आँखों में सपनों के रंग तैरने लगे और वह मन ही मन अपनी नई कलाकृति की रूपरेखा उकेरने लगी। वह दिल से चाहती थी कि उसकी चित्रकारी इस बार न केवल प्रतियोगिता जीते बल्कि पूरे गाँव को गौरवान्वित भी करे। लेकिन उसकी उत्सुकता देखकर उसके माता-पिता के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आई थीं। उसकी माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए धीरे से कहा, "मेरी नन्हीं बेटी, तुम्हारे भाव बहुत सच्चे हैं लेकिन तुम बोलकर अपनी बात नहीं समझा पाओगी कि तुम्हारा चित्र क्या संदेश दे रहा है। और फिर, प्रतियोगिता के लिए तो बाज़ार के महँगे रंगों की ज़रूरत होगी जो हमारे पास नहीं हैं..."

माता-पिता की इस बेबसी और उदासी को देखकर चुटकी बिल्कुल भी निराश नहीं हुई। उसने माँ के हाथों को अपने छोटे-छोटे हाथों में थाम लिया, आत्मविश्वास से भरकर अपनी आँखें झपकाईं और अपनी उंगलियों से हवा में इशारे करते हुए समझाया, "माँ, आप रंगों की जरा भी चिंता मत करो! जो प्रकृति मुझे चित्र बनाने की प्रेरणा देती है, वही मुझे रंग भी देगी। मेरे रंगों का खजाना तो इस पूरे हिमाचल की वादियों में बिखरा पड़ा है!" उसकी निश्चल मुस्कान और अटूट विश्वास देखकर माता-पिता की आँखें भर आईं और उन्हें अहसास हुआ कि चुटकी का यह हौसला बाज़ार के किसी भी महँगे रंग से कहीं ज्यादा जादुई है।

प्रतियोगिता का दिन जैसे-जैसे पास आ रहा था, चुटकी की लगन और मेहनत उतनी ही निखरती जा रही थी। हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ वह अपनी छोटी-सी टोकरी लेकर जंगल और खेतों की ओर निकल पड़ती। वह पूरे ध्यान से चुनिंदा चीज़ें इकट्ठी करती—पहाड़ी रास्तों से गीली चिकनी मिट्टी, खेतों से ताजा हल्दी, खेतों की मेड़ पर उगे गहरे लाल चुकंदर और रंग-बिरंगी दालें। यही नहीं, उसने घर के बगीचे से नील के नीले फूल, गुलाब की खुशबूदार पंखुड़ियाँ और मेहंदी की हरी पत्तियाँ भी बड़े प्यार से चुनी थीं। फिर घर आकर वह घंटों मेहनत करके फूलों को पीसती, पत्तियों का रस निचोड़ती और हल्दी-चुकंदर से प्राकृतिक गाढ़े रंग तैयार करती।

आख़िरकार, इंतज़ार की घड़ियाँ खत्म हुईं और प्रतियोगिता का बहुप्रतीक्षित दिन आ ही गया। गाँव का बड़ा मैदान आज कागज़ों, कैनवास, बच्चों की चहक और उत्सुक अभिभावकों की भीड़ से गुलज़ार था। चारों तरफ़ एक उत्सव जैसा माहौल था। मैदान में लगे मेज़ों पर सभी बच्चे अपने महँगे, चमकदार वॉटर कलर्स, पेस्टल शेड्स और तरह-तरह के ब्रश सजाकर इतरा रहे थे। लेकिन चुटकी की मेज़ का नज़ारा सबसे अनोखा और अलग था। उसकी टोकरी में बाज़ार के महँगे रंगों की जगह प्रकृति का दिया खज़ाना था...कटोरियों में पिसी हुई हल्दी का चमकीला पीला रंग, चुकंदर का गहरा लाल रस, मेहंदी का हरा पेस्ट, नीले फूलों का अर्क, भिगोए हुए चावल का सफ़ेद घोल और अलग-अलग रंग-बिरंगी दालें। जहाँ दूसरे बच्चों के पास कृत्रिम रंग थे, वहीं चुटकी के पास हिमाचल की वादियों की ताजा खुशबू से सराबोर एकदम सच्चे और कुदरती रंग थे।

तभी गाँव का सबसे शरारती लड़का रमेश, जो अक्सर दूसरों को नीचा दिखाने का मौक़ा ढूँढता रहता था, टहलता हुआ चुटकी की मेज़ के पास आया। चुटकी की टोकरी में रखी पत्तियों, कटोरियों और प्राकृतिक चीजों को देखकर

उसने मुँह बनाया और ज़ोर से ठहाका लगाते हुए कहा, "अरे वाह! यह क्या पूरे जंगल का कचरा उठाकर ले आई तू? भला इन बासी फूलों और हल्दी-मिट्टी से भी कोई चित्र बनता है? यह देख मेरा चमचमाता हुआ महँगा रंगों का डिब्बा! असली चित्रकारी तो इससे होगी और पुरस्कार भी सीधे मेरी जेब में जाएगा!"



रमेश के कड़वे बोल सुनकर पास बैठे कुछ और बच्चे भी उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। उन तानों की चुभन से चुटकी की आँखें भर आईं। एक पल के लिए उसका मासूम दिल डर और संशय से काँप उठा, "क्या बाज़ार के इन चमकीले रंगों के सामने मेरी मेहनत और प्राकृतिक रंगों की कद्र होगी? क्या लोग बिना बोले मेरी कला की भाषा को समझ पाएँगे?"

लेकिन अगले ही पल उसने अपनी पलकें झपकाकर आँसुओं को पोंछा और एक गहरी, लंबी साँस ली। उसने अपनी निराश होती हिम्मत को बटोरा, आँखों में एक अनोखी चमक लाई और उंगलियों से हवा में तेजी से इशारा करते हुए रमेश को जवाब दिया, "तू अपने महँगे रंगों पर इतरा, रमेश! मेरी

चित्रकारी को किसी भाषा या महँगे डिब्बे की ज़रूरत नहीं... देखना, मेरी कला खुद बोलेगी!"

"हाँ-हाँ, देखेंगे किसका काम बोलेगा!" रमेश ने चिढ़कर चुटकी को जीभ दिखाई, हवा में हाथ नचाया और हँसते हुए अपनी सीट की ओर लौट गया। लेकिन चुटकी अब डरने वाली नहीं थी, उसने अपना सारा ध्यान अपने कैनवास और कुदरती रंगों पर केंद्रित कर लिया।

इस बार चुटकी ने रमेश के कड़वे तानों और हँसी की बिल्कुल परवाह नहीं की। उसने एक लंबी और गहरी साँस ली, अपना सारा ध्यान केंद्रित किया और बड़े ही प्यार से काम में जुट गई। उसने अपने हाथों को सूती कपड़े से पोंछा और एक पल के लिए आँखें बंद करके पूरे गाँव की सुंदरता को अपने मन में उतारा। अगले ही पल, उसकी उंगलियाँ और ब्रश कागज़ पर किसी नर्तकी की तरह थिरकने लगे।

थोड़ी दूर बैठा रमेश लगातार उसकी तरफ़ देखकर फुसफुसा रहा था, "अरे, यह तो कागज़ पर सिर्फ कीचड़ और पत्तियों की गंदगी फैला रही है! देखो, मेरे रंग तो बाज़ार के सबसे महँगे और चमकदार वॉटर कलर्स हैं!"

चुटकी ने उसके तानों को हवा में उड़ा दिया और अपनी पूरी आत्मा को उस चित्र में उड़ेलना जारी रखा। धीरे-धीरे, सफ़ेद कागज़ पर एक जादुई दुनिया आकार लेने लगी। कागज़ के बीचों-बीच लहराता हुआ एक विशाल, आत्मीय बरगद का पेड़ उभर आया, जिसकी एक-एक टहनी पर गाँव की जीवंतता छलक रही थी। लाल, पीले और नीले रंगों से लदी शाखाएँ ऐसी लग रही थीं मानो कुदरत खुद उस कैनवास पर उतर आई हो। उन पर मँडराती तितलियाँ और चावल के घोल से बनीं सफ़ेद बत्तखें चित्र में जैसे प्राण फूँक रही थीं। हर रंग से हिमाचल की मिट्टी और फूलों की सोंधी खुशबू महक रही थी।

लेकिन अब चित्र को पूरा करने के लिए चुटकी को एक बहुत ही खास रंग की ज़रूरत थी—एक ऐसा 'सुनहरा रंग', जो उगते हुए सूरज की पहली दिव्य किरण की तरह चमक सके और पूरे चित्र को आलोकित कर दे।

चुटकी ने उत्सुकता से अपनी टोकरी के भीतर झाँका। वहाँ सूखे पत्तों के बीच एक दुर्लभ 'सुनहरी चिड़िया का पंख' अलौकिक रोशनी के साथ जगमगा रहा था। यह वही पंख था जो सुबह बगीचे में घूमते समय उसे ज़मीन पर पड़ा मिला था। चुटकी ने जैसे ही उस पंख को स्पर्श किया, पूरे वातावरण में एक हल्की-सी सुनहरी जादुई आभा छनकर बिखर गई।

चुटकी के चेहरे पर एक मधुर मुस्कान फैल गई। उसने गोंद की मदद से उस सुनहरी पंख को सूरज की किरणों वाले स्थान पर बड़ी ही कोमलता से चिपका दिया। पंख के चिपकते ही कैनवास पर बना वह सूरज मानो सचमुच जी उठा! उसकी सुनहरी चमक से पूरा चित्र जगमगाने लगा जैसे किसी जादुई चिड़िया ने अपनी समूची चमक उस नन्हीं चित्रकार को सौंप दी हो। चुटकी ने मन ही मन सुनहरी चिड़िया को धन्यवाद दिया जो उस के मस्तिष्क में कल्पनाओं के फूल पर बैठी थी। सुनहरी चिड़िया जैसे फुसफुसाई, "तुम्हारी निस्वार्थ भावना ने मुझे जीवंत किया, प्यारी चुटकी।"

चुटकी का चित्र अब प्रकृति का जीवंत सपना बन गया था, जिसमें सुनहरी चिड़िया के पंख से बना सूरज चित्र में बने बरगद के पेड़ के पीछे से इतराकर अपनी आभा बिखेर रहा था। रंग-बिरंगे फूलों की खुशबू महक रही थी और मिट्टी के रंग से बनी पहाड़ियों पर गाँव की आत्मा झलक रही थी। रंग-बिरंगी दालों को कागज़ पर चिपका कर खेतों को जीवंत कर दिया था।

प्रतियोगिता खत्म हुई। मुखिया जी ने सभी चित्र देखे। रमेश का चित्र चमकदार तो था पर बाज़ार के रंगों से बनाया गया था और उसमें वो आत्मा नहीं थी जो इस प्रतियोगिता का उद्देश्य थी। सब प्रतिभागियों के चित्र देखने के

बाद जब मुखिया जी चुटकी के चित्र पर रुके तो उनकी आँखें आश्चर्यसे चमक उठीं, "अरे! यह चित्र तो प्रकृति का गीत है! ऐसा लगता है बरगद का पेड़ अभी बोल पड़ेगा...!" मुखिया जी देर तक चित्र की प्रशंसा करते रहे और फिर उन्होंने पूछा, "बेटी, ये अनोखे रंग तुम्हारे पास कहाँ से आए?"



चुटकी ने अपनी टोकरी से चुकंदर, रंग-बिरंगे फूल, मेंहदी और पेड़-पौधों के हरे पत्ते, मिट्टी, दालें और चिड़िया का सुनहरी पंख निकालकर इशारों से समझाया कि कैसे उसने ये प्राकृतिक रंग बनाए। कैसे चिड़िया के सुनहरे पंख को सूरज बनाने के लिए उसने आटे से बने गोंद से चित्र में जोड़ा।

मुखिया जी दंग रह गए। उन्होंने सबको बुलाया और चुटकी की प्रशंसा करते हुए मंच पर जाकर घोषणा की, "चुटकी की खामोशी उसकी ताकत है। उसने प्रकृति से रंग लिए और कला को जिंदा किया। वह इस साल की विजेता है!" सैकड़ों तालियों के बीच 'गाँव का रंग' प्रतियोगिता में चुटकी को प्रथम पुरस्कार के रूप में जादुई रंगों का डिब्बा मिला जिसमें प्रकृति से रंग कैसे बनाएँ के बारे में समझाया गया था। यह सुनकर चुटकी के चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कान आ गई जो हज़ारों शब्दों से भी ज्यादा बोल बोल रही थी।

यह सब देखकर रमेश का सिर शर्म से झुक गया। उसे समझ आ गया कि कला बाज़ार के महँगे रंगों से नहीं बल्कि सच्चे मन और लगन से बनती है। वह आगे बढ़ा और भारी मन से बोला, "मुझे माफ कर दो चुटकी, मैं अपने महँगे रंगों के घमंड में तुम्हारी लगन को नहीं समझ पाया। आज तुमने मुझे सबसे बड़ा पाठ पढ़ाया है।" चुटकी ने हमेशा की तरह मुस्कुराकर उसे माफ कर दिया और अपनी जीत की खुशी पूरे गाँव के बच्चों के साथ बाँटी।

इस प्रतियोगिता के बहाने उस दिन गाँव के सभी बच्चों को दो सीख मिलीं। पहली प्राकृतिक चीज़ों जैसे फल, सब्जियाँ और पत्तों से भी रंग बनाए जा सकते हैं। और दूसरी कि किसी की कमी का कभी मजाक नहीं उड़ाना चाहिए बल्कि उसके हुनर को पहचानना चाहिए क्योंकि सच्ची प्रतिभा और सच्ची सुंदरता शब्दों की मोहताज नहीं होती। अपनी कमियों को अपनी ताकत बना कर हम जीवन में बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं।

गाँव वालों की मदद से चुटकी ने 'रंगोली रंगशाला' शुरू की जहाँ चुटकी ने सभी बच्चों को प्राकृतिक रंग बनाना सिखाया। रमेश, जो कभी उसे चिढ़ाता था, अब उसका पहला शिष्य बन गया था। चुटकी की कला ने गाँव को बदल दिया। बच्चों ने सीखा कि पत्तियाँ, फूल, मिट्टी, और दालों से भी रंग बनाए जा सकते हैं। गाँव वालों ने फैसला किया कि अगले साल 'गाँव का रंग' प्रतियोगिता में सिर्फ प्राकृतिक रंग ही होंगे।

□

संक्षिप्त परिचय

नाम	:	**मनजीत शर्मा 'मीरा'**
जन्म	:	18 जनवरी, गाँव मानूवाल, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश में।
शिक्षा	:	बी.ए., बी.एड., पी.जी.डी.टी
पिता	:	सरदार निक्का सिंह जी
माँ	:	सरदारनी हरबंस कौर जी
पति	:	कुमार शर्मा 'अनिल'
पुत्र	:	स्वप्निल शर्मा एवं अनुभव शर्मा
पुत्रवधु	:	बिंदु शर्मा 'नेहा' एवं योगिता चौधरी
पौत्र	:	अयाँश

पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ:

1. हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2015 के लिए ढाई लाख का "श्रेष्ठ महिला रचनाकार" पुरस्कार।
2. हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा कहानी-संग्रह "आत्महत्या के क्षणों में" को वर्ष 2013 का श्रेष्ठ कृति पुरस्कार।
3. हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा दो कहानियाँ "अस्तित्व" एवं "महात्मा गांधी मार्ग..." पुरस्कृत।
4. प्रतिष्ठित पत्रिका "कथाबिंब" द्वारा आयोजित कमलेश्वर स्मृति कथा प्रतियोगिता 2009 में "श्रेष्ठ कहानी" का पुरस्कार ।
5. मधुरिमा, (दैनिक भास्कर) द्वारा वर्ष 2010 में "सर्वश्रेष्ठ कहानी" का पुरस्कार।
6. परामनोवैज्ञानिक संस्थान, कुशीनगर द्वारा साहित्य लेखन के लिए वर्ष 2010 का "साहित्य भूषण पुरस्कार"।
7. देव भारती, भोपाल द्वारा वर्ष 2011 में कहानी संग्रह "अस्तित्व" को "देव भारती" पुरस्कार।
8. शिक्षा व धर्म संस्कृति द्वारा वर्ष 2011 में कहानी प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार।

9. अन्तर्राष्ट्रीय पराविद्या शोध संस्था, ठाणे, महाराष्ट्र द्वारा वर्ष 2011 में काव्य सृजन एवं समाज हितकारी कथा साहित्य हेतु "पद्माचार्य श्री" अलंकरण से सम्मानित।
10. बाबूजी का भारतमित्र द्वारा वर्ष 2013 में कहानी लेखन हेतु "जुगरी देवी कथा सम्मान"।
11. हरियाणा प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सिरसा द्वारा साहित्य सृजन हेतु वर्ष 2014 में "श्री जयमल सिंह, एडवोकेट स्मृति सम्मान"।
12. राष्ट्रधर्म (लखनऊ) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता 2015 में "एक का सिक्का" (कहानी) को प्रथम पुरस्कार ।
13. सर्व सृजन पत्रिका द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता 2015 में कहानी "एक था कुत्ता" को प्रथम पुरस्कार।
14.बस्तर पाती, द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता 2015 में "प्रेम के रंग" (कहानी) को तृतीय पुरस्कार ।
15. गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नराकास द्वारा "साहित्यकार सम्मान"।
16. साहित्य सृजन बस्तर द्वारा वर्ष 2016 का "बाल साहित्य साधिका" सम्मान।
17. मक़तब-ए-ग़ज़ल द्वारा वर्ष 2020 में "सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल-लेखन" का पुरस्कार।
18. ऊषा राज साहित्य अकादमी, झबुआ द्वारा वर्ष 2021 में "साहित्य साधक सम्मान।
19. साहित्य मंच मेघदूत द्वारा 22 मार्च 2025 को आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में लघुकथा "किल्लत" को प्रशस्ति-पत्र।
20. स्वर्ग विभा परिवार, नवी मुंबई द्वारा "डॉक्टर तारा सिंह विशिष्ट राष्ट्रीय सम्मान 2026" से अलंकृत।
21. प्राची डिजिटल पब्लिकेशन, नैनीताल द्वारा 25. 6. 2025 को "कलमकार सम्मान"।
22. इसके अतिरिक्त, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न साहित्यिक विधाओं की प्रतियोगिताओं में 60 से अधिक रचनाएँ पुरस्कृत।

अन्य उपलब्धियाँ:

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित विभिन्न कविता, कहानी, निबंध, हिंदी शब्द ज्ञान व अन्य

प्रतियोगिताओं में 26 बार पुरस्कृत। व अन्य विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में 140 से अधिक बार पुरस्कृत।
2. प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में 400 से अधिक रचनाएं प्रकाशित।
3. दो पंजाबी टेलीफिल्मों में अभिनय।
4. चंडीगढ़ दूरदर्शन पर काव्य-पाठ, सांस्कृतिक गतिविधियों व काव्य-गोष्ठियों में मंच संचालन के लिए ढेरों पुरस्कार।
5. गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नराकास, चंडीगढ़ द्वारा अलग-अलग वर्षों में आयोजित विभिन्न कविता, निबंध, हिंदी शब्द ज्ञान व अन्य प्रतियोगिताओं में 23 बार पुरस्कृत।
6. प्रथम पुरस्कार प्राप्त कहानी "एक का सिक्का" उड़िया भाषा में अनूदित।
7. 28 किताबों की समीक्षा और भूमिका।
8. 34 साझा संकलनों में रचनाएँ सम्मिलित व प्रकाशित।

प्रकाशित पुस्तकें :

1. केन्द्र सरकार के सौजन्य से काव्य-संग्रह "जारी ये सफर रखना"।
2. हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से कहानी-संग्रह "अस्तित्व"।
3. केन्द्र सरकार के सौजन्य से काव्य-संग्रह "कुछ धूप चाहती हूँ"।
4. हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से कहानी-संग्रह "आत्महत्या के क्षणों में"।
5. केन्द्र सरकार के सौजन्य से लघुकथा-संग्रह "खबर है कि..."।
6. हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से कहानी-संग्रह "सलमा सितारों वाली"।
7. केन्द्र सरकार के सौजन्य से कहानी-संग्रह "प्रस्थान"।
8. "पीले गुलाब" (हाइकु-संग्रह)।
9. "मैं मुहब्बत की ग़ज़ल हूँ" (ग़ज़ल-संग्रह)।
10. "रफ़्ता-रफ़्ता उतरा चाँद" (ग़ज़ल-संग्रह)।
11. "ऐसे गीत सुनाने होंगे" गीत-संग्रह (गीत-संग्रह)।
12. "कागज़ के बिछौने पर" (लघु कविता-संग्रह)।
13. "हम सुख़न" (ग़ज़ल-संकलन)।
14. "दिल की ज़मीं पर" (ग़ज़ल-संग्रह)।

15. "खुशबुओं की रहगुज़र" (ग़ज़ल-संग्रह)।
16. "काटे पेड़ चिनार के" (दोहा-संग्रह)।
17. "गुल-ए-रुख़्सार का मौसम" (ग़ज़ल-संग्रह)।
18. "बाग़ों में आ माहिया" (माहिया-संग्रह)।
19. "पतझड़ में मधुमास" (लघु कविता-संग्रह)।
20. "मन वीणा के तार गीत" (गीत-संग्रह)।
21. "मन मेरा ऋतुराज" (गीत संग्रह)।
22. "एक भी गुल न मुक़ाबिल उसके" (ग़ज़ल संग्रह)।
23. "तितलियों का गाँव" (बाल कहानी संग्रह)।

प्रकाशनाधीन पुस्तकें :

1. "सीपियों में समंदर" (कविता संग्रह)।
2. "महँगाई मार गई" (व्यंग्य संग्रह)।
3. "जादुई बीज और सूखी नदी" (उपन्यास)।
4. "बेंच पर बैठी खिड़की {कहानी संग्रह)।
5. "कान नहीं होते चींटी के" (बाल-गीत संग्रह)
6. "Love Beyond Grey Hair" (Poetry)।

संप्रति : केंद्र सरकार के चंडीगढ़ स्थित कार्यालय से राजपत्रित अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्ति उपरांत स्वतंत्र लेखन।

पता : #46 मीरानिल निवास, रमन एन्क्लेव, सेक्टर-117, मोहाली, पिनकोड: 140307

मोबाइल : 6284 99 7355

ई-मेल : manjeet18kaur@gmail.com

✦ ✦ ✦